

1

2

3

4

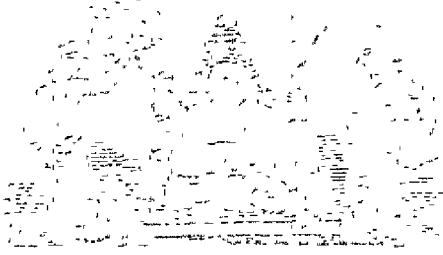
5

6

7

8

9



THE UNIVERSITY OF CHICAGO

PH.D. THESIS

IN THE FIELD OF

PHYSICS



| विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक | विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक |
|---|---------|---------|---|---------|---------|
| अन्यावतरणिका वर्णनं नाम प्रथमोल्लासः १ | १ | ३ | बालीवधो नामाष्टदशो- ल्लासः १८ | | |
| श्रीरामलक्ष्मण संवादो नाम द्वितीयोल्लासः २ | ३ | ६ | पवनपुत्रप्रवासं नामैकोन विशोल्लासः १६ | | |
| पुरोहितविदेहसंवादो नाम तृतीयोल्लासः ३ | ६ | ७ | मारुतिमैथिलिसंवादो नाम विशोल्लासः २० | | |
| परशुरामागमनं नाम चतु- र्थोल्लासः ४ | ७ | १० | लङ्कापुरदहनो नामैकविंशो- ल्लासः २१ | | |
| सीतास्वयम्बरौ नाम पञ्च- मोल्लासः ५ | १० | १६ | हनुमद्विजयो नाम द्वाविंशो- ल्लासः २२ | | |
| सहचरिगमनो नाम षष्ठो- ल्लासः ६ | १६ | १८ | विभीषणसंन्यापणो नाम त्रयोविंशोल्लासः २३ | | |
| जानकीविलासो नाम स- प्तमोल्लासः ७ | १८ | २२ | सेतुबन्धननामचतुर्विंशो- ल्लासः २४ | | |
| दशरथस्वर्गसंप्राप्तिवर्णनो नामाष्टमोल्लासः ८ | २२ | २४ | रावणाङ्गदान्वोन्यसंभाषणो नामपञ्चविंशोल्लासः २५ | | |
| विचकूटागमनोनाम नवमो- ल्लासः ९ | २५ | २६ | रावणाङ्गदयोहस्तरप्रत्युत्तर वर्णनं षट्त्रिंशोल्लासः २६ | | |
| मारीचागमनोनाम दशमो- ल्लासः १० | २६ | २६ | रावणाङ्गदप्रश्नोत्तर वर्णनं नाम सप्तविंशोल्लासः २७ | | |
| जटायुमूर्च्छावर्णनो नामै- कादशोल्लासः ११ | २६ | ३१ | रावणाङ्गदसंवादो नामाष्ट विंशोल्लासः २८ | | |
| रामविलापारंभो नाम द्वाद- शोल्लासः १२ | ३१ | ३३ | रावणविरुपाक्ष संवादो नामैकोनविंशोल्लासः २६ | | |
| जटायुस्वर्गसंप्राप्ति वर्णनो नाम त्रयोदशोल्लासः १३ | ३३ | ३५ | महोदरमन्त्रि वाक्यवर्णनं नामत्रिंशोल्लासः ३० | | |
| श्रीरामविरहदशावर्णनो नाम चतुर्दशोल्लासः १४ | ३५ | ३८ | मन्त्रिवाक्य नामैकत्रिंशो- ल्लासः ३१ | | |
| शुभाशुभशकुनावलोकनो नाम पञ्चदशोल्लासः १५ | ३८ | ४० | मथ्यामस्तकनिर्माणं नाम द्वात्रिंशोल्लासः ३२ | | |
| श्रीरामसुग्रीवसमागमो नाम षोडशोल्लासः १६ | ४० | ४२ | रावणप्रपञ्चोनाम त्रयस्त्रिंशो ल्लासः ३३ | | |
| बालीहृदयभेदनो नाम सप्तदशोल्लासः १७ | ४२ | ४४ | रावणमहोदर संवादो नाम चतुस्त्रिंशोल्लासः ३४ | | |

| विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक | विषय | पृष्ठसे |
|---|---------|---------|---|---------|
| कुम्भकर्णरक्षाङ्गशाघतरणो नाम पञ्चत्रिंशोऽल्लासः २५ ८६ ८८ | २५ | ८६ | नामसप्तचत्वारिंशो ल्लासः ४७ १११ | ४७ |
| कुम्भकर्णबधो नाम षट्त्रिंशो- ल्लासः ३६ ८३ ६३ | ३६ | ८३ | सीतामन्दोदरीवचन व- र्णनोनामाष्टचत्वारिंशो- ल्लासः ४८ ११३ | ४८ |
| ज्ञानकथशोकवन पुनरागमनो नाम सप्तत्रिंशोऽल्लासः ३७ ६३ ६५ | ३७ | ६३ | मन्दोदरीविलापो नामैको- नपञ्चाशत्तमोल्लासः ४९ ११५ | ४९ |
| इन्द्रजित् बधो नामाष्टत्रिंशो- ल्लासः ३८ ६६ ६७ | ३८ | ६६ | मैथिलिमानसविचारवर्ण- नोनाम पञ्चाशत्त- मोल्लासः ५० ११७ | ५० |
| विभीषणजाम्बवान्संवादो नामैकोनचत्वारिंशो- ल्लासः ३९ ६७ ६९ | ३९ | ६७ | मैथिलिदिव्यशपथवर्णनो नामैकपञ्चाशत्त मोल्लासः ५१ ११९ | ५१ |
| श्रीरामसमीरसूनुसंवादो नाम चत्वारिंशोऽल्लासः ४० ६९ १०१ | ४० | ६९ | श्रीसीतारामचन्द्रसंवादो नामद्विपञ्चाशत्तमो- ल्लासः ५२ १२० | ५२ |
| मानरवृन्दवेग वर्णनो नामैक चत्वारिंशोऽल्लासः ४१ १०१ १०२ | ४१ | १०१ | निमिनन्दिनि रामचन्द्र सं- वादोनाम त्रिपञ्चाशत्तमो- ल्लासः ५३ १२२ | ५३ |
| हनुमद्भरतसमागमद्विच- त्वारिंशोऽल्लासः ४२ १०३ १०४ | ४२ | १०३ | तारातनयस्तवनवर्णनो ना- मचतुःपञ्चाशत्तमो- ल्लासः ५४ १२४ | ५४ |
| लक्ष्मणोत्साहवर्णनो नाम त्रिचत्वारिंशोऽल्लासः ४३ १०४ १०६ | ४३ | १०४ | श्रीमञ्जुमतकृतश्रीरामचन्द्र स्तवनवर्णनो नाम पञ्च पञ्चाशत्तमोल्लासः ५५ १२६ | ५५ |
| श्रीरामचन्द्रलोहिताक्ष- राषण्डूतसंवादो नाम चतुस्त्रिंशोऽल्लासः ४४ १०७ १०८ | ४४ | १०७ | लक्ष्मणपरितापवर्णनोनाम षट्पञ्चाशत्तमोल्लासः ५६ १२७ | ५६ |
| श्रीरामचन्द्रवानरकटक लङ्कासमरोधो नाम पञ्च- चत्वारिंशोऽल्लासः ४५ १०८ १०९ | ४५ | १०८ | ग्रन्थपरिपूर्तिवर्णनोनामसप्त पञ्चाशत्तमोल्लासः ५७ १२९ | ५७ |
| ताराहृतमीचरबधोनामषट् चत्वारिंशोऽल्लासः ४६ ११० १११ | ४६ | ११० | | |
| श्रीरामचन्द्ररावणसंवादो | | | | |



श्रीमतेनिम्बार्काय नमः ॥

अथ हनुमान्नाटक भाषा अर्थात् श्रीवरविलासः प्रारभ्यते ॥

शालिनीछन्द ॥

वन्दे रामं कोटिकामाभिगमं । गेषथामं सर्वदापूर्णकामं ॥ गौ
विन्दोहंसच्चिदानन्दकन्दं । देवाधीशंजानकीशंजनेशं १ ॥ अण्ड-
छन्द ॥ श्रीवरस्यविलासोयं ग्रन्थोरामयशोद्धितः ॥ हनुमन्नाटकञ्चा
यां गृहीत्वा तन्यते मया २ ॥ अथ ग्रन्थावतरणिका ॥ शतगुनीस वत्तीस
सह १६३२ मेचक श्रावणमास ॥ बुधवासर एकादशी, श्रीवरवदत
विलास ३ पाय कलुक परसंग मम, आगमपुर पिपलोद ॥ दूलह
नृप दीन्हों हुकुम, सुनि मन भयो प्रमोद ४ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ एक
समै पिपलोदपुरी प्रति गौन गोविन्द तुरन्त तहां है । मन्दिर में
गणनायकके निज मन्त्रिनयुक्त जनेश जहां है ॥ नाटककी चर-
चानि चलाय सुनाय दिये बर बैन वहां है । औ नृप दूलहकी उ-
पमा सम पावत सो नृप कौन कहां है ५ श्रीमत रावत साहब दूलह
हेरनमें दरशैं नितहाटक । विप्र गोविन्द दई उन आय सहीय कथा-

| विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक | विषय | पृष्ठसे |
|---|---------|---------|---|---------|
| कुम्भकर्णरसाङ्ग्यावतरणो नाम पञ्चत्रिंशोऽल्लासः ३५ ८६ | ८६ | ८६ | नामसप्तचत्वारिंशो ल्लासः ४७ | १११ |
| कुम्भकर्णवधो नाम षट्त्रिंशो- ल्लासः ३६ | ८६ | ९३ | सीतामन्दोदरीवचन व- र्णनोनामाष्टचत्वारिंशो- ल्लासः ४८ | ११३ |
| आनन्दयशोकवन पुनरागमनो नाम सप्तत्रिंशोऽल्लासः ३७ ९३ | ९३ | ९५ | मन्दोदरीविलापो नामैको- नपञ्चाशत्तमोऽल्लासः ४९ | ११५ |
| इन्द्रजित् वधो नामाष्टत्रिंशो- ल्लासः ३८ | ९६ | ९७ | मैथिलिमानसविचारवर्ण- नोनाम पञ्चाशत्त- मोऽल्लासः ५० | ११७ |
| विभीषणजाम्बवान्संवादो नामैकोनचत्वारिंशो- ल्लासः ३९ | ९७ | ९९ | मैथिलिदिव्यशपथवर्णनो नामैकपञ्चाशत्त- मोऽल्लासः ५१ | ११९ |
| श्रीरामसमीरसूनुसंवादो नाम चत्वारिंशोऽल्लासः ४० ९९ | १०१ | १०१ | श्रीसीतारामचन्द्रसंवादो नामद्विपञ्चाशत्तमो- ल्लासः ५२ | १२० |
| वानरवृन्दवेग वर्णनो नामैक चत्वारिंशोऽल्लासः ४१ | १०१ | १०२ | निमिनन्दिनि रामचन्द्र सं- वादोनाम त्रिपञ्चाशत्तमो- ल्लासः ५३ | १२२ |
| हनुमद्भरतसमागमद्विच- त्वारिंशोऽल्लासः ४२ | १०३ | १०४ | तारातनयस्तवनवर्णनो ना- मचतुःपञ्चाशत्तमो- ल्लासः ५४ | १२४ |
| लक्ष्मणोत्साहवर्णनो नाम त्रिचत्वारिंशोऽल्लासः ४३ | १०४ | १०६ | श्रीमद्भनुमतकृतश्रीरामचन्द्र स्तवनवर्णनो नाम पञ्च पञ्चाशत्तमोऽल्लासः ५५ | १२६ |
| श्रीरामचन्द्रलोहिताक्ष- राधण्डूतसंवादो नाम चतुस्त्रिंशोऽल्लासः ४४ | १०७ | १०८ | लक्ष्मणपरितापवर्णनोनाम षट्पञ्चाशत्तमोऽल्लासः ५६ | १२७ |
| श्रीरामचन्द्रवानरकटक लङ्कासमरोधो नाम पञ्च- चत्वारिंशोऽल्लासः ४५ | १०८ | १०९ | ग्रन्थपरिपूर्तिवर्णनोनामसप्त पञ्चाशत्तमोऽल्लासः ५७ | १२९ |
| ताराहृतमीचरवधोनामषट् चत्वारिंशोऽल्लासः ४६ | ११० | १११ | | |
| श्रीरामचन्द्ररावणसंवादो | | | | |

निहारत आसुर ओघ सुबाहु मारीचिसमेत सबै हैं ॥ श्रीरघुनन्दन
 कन्द कियो क्षण छांड़ि मरीचि सुजान जबै हैं । कारजलैन कळूक-
 रयो जिहिते तिहिको तजिदीन तबै हैं ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ सीताको
 स्वयंबर सुनत श्रौन कियोगौन, मारगमें शिलारूप अहल्या उधा-
 रीहै । जनकपुरी में जाय सर्व सतकार पाय, महत महीपनमें पाये
 शोभ भारीहै ॥ गावत गोविन्दलखि कोशलकिशोर छवि, चित्रसे
 भये हैं यत्र तत्र नर नारीहैं । इन्द्रहै कि इन्दुहै कि दिपत दिनेन्द्र
 किशौं, दशरथनन्द रामचन्द्र बलिहारी है ९ ॥ दोहाछन्द ॥ निरखत
 निमि नृपनन्दनी, उर उमँग्यो आनन्द ॥ निज मनमधि संकल्प
 कछु, करनलगी स्वच्छन्द १० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कच्छप पीठ कठोर
 यहै शिवचापहै । कोमल भूरति श्रीरघुनन्दन आपहै ॥ इनते होय
 अधिज्य कौन यह बात है । परहां । प्रणदारुण अति कीन अहह
 तुम तातहै ११ ॥ मनोहरछन्द ॥ लक्ष्मणलाय लक्ष्मणते कहत राम,
 पेखहु पृथीप पुञ्ज पुञ्ज प्रकटान है । जम्बूद्वीप आदि द्वीप द्वीप के
 महीप आये, कन्या अरु कीर्तिलाभ मानत महानहै ॥ बद्धिकि-
 योकाहु टङ्कित महेशचाप, नमितकियो न कियो उत्थापितथानहै ।
 चढ़ी नाकवान कछु कड़ीना जबानमुख, मेरे जान बीरताबिहीन
 भो जहान है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ किय अनन्द रघुनन्दहिय, निज भुज
 बल बरणन्त ॥ प्रौढ़ी बचन प्रत्यक्षपटि, लच्छ बच्छ हुलसन्त १३ ॥
 षट्पदछन्द ॥ बहुत कहनमें कहा, नाथ सच बचन उचारत । दास रा-
 वरो खास, लक्ष्मणधिय यह धारत ॥ गिनौं न गिरिवर मेरु, प्रमुख
 धनुकीका गिनती । अतिशय जीर्ण पिनाक, करौं प्रभुते यह
 बिनती ॥ सुहिं होय हुकम मम लखहु बल, कौन कौन कौतुक
 करै धकिधरै मरोरौं मूल जिभि, गट्टि शतयोजन अनमरो १४ ॥

टनकी उदघाटक ॥ सोहत नाटक स्तनमें मणिमाणिक सों हनु-
 मान सुनाटक । ग्रन्थ नवीन बनै उहि पन्थ न श्रोणपरै अन श्रोत्र
 उघाटक ६ ॥ दोहाछन्द ॥ कारक जगमें मतातते, समकै सकल र-
 हेश ॥ फाटक हियरेके खुलै, नाटक परडनिशेश ७ आयसु पति
 पिपलोदकी, लीन्हीं शीश चढ़ाय ॥ पुर शोभा पुरपतिप्रभा, कछु
 वरएत वितचाय ८ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ थानक थानक होत कथा-
 नक बानक मङ्गल आनक बाजै । मन्दिर मन्दिर अन्दर सुन्दर से-
 वन देव महोत्सवबाजै ॥ गेहन गेह सनेह सने तुलसी थिरथान
 विशेष बिराजै । मोद प्रमोद विनोद भरी पिपलोदपुरी भुवि पै भज
 भ्राजै ९ ॥ अथ नृपतिवर्णन अमृतध्वनीछन्द ॥ लइजय बलि मतल्लिमहँ
 वंश बल्लिरावह । दुल्लह रावत खुल्लि तित मल्ल विदल्लोदल्ल ॥ दल्ल-
 ल्लखि प्रतिमल्लल्लह नह भल्लल्लजजित । फुल्लल्लोक विफुल्लल्लोयन
 सुल्लल्लवतित ॥ तुल्लल्लगकि अतुल्लल्लल्लिय जसमुल्लल्लधुवय ॥ दुल्ल-
 ल्लखत नमुल्लल्लगत प्रवल्लल्लहिजय १० ॥ अथ सिंहआखेटक वर्णन ॥
 लखिये में नवहत्थके, पञ्चानन बड़मत्थ । लत्थ पत्थ लोहन क्रिये,
 दूलह नृप दुइहत्थ ॥ हत्थित्थटिमहँ मत्थत्थितदुइ चित्तत्थित्थर ।
 बत्थत्थुबक अकत्थत्थिति समत्थत्थलउर ॥ तत्थत्थित प्रहरत्थत्थकि
 तकिजित्तत्थसनखि । कत्थत्थवन कबित्तत्थुइ सर्वत्थत्थवलखि ११ ॥
 अथ राजवर्णन ॥ कटकटत अटकत नहीं, सोहत वारन शुद्ध । लखि
 कुञ्जर गलगुञ्जरत, उर उद्धत अबिरुद्ध ॥ रद्धद्धुर अतिकुद्धत्थुर
 लुरियुद्धद्धरअट । धद्धद्धिना धद्धद्धिना धद्धद्धुवरध ॥ धद्धद्धा-
 कट धद्धद्धाकट धद्धद्धाकट । धुद्धद्धुधुकट धुद्धद्धुधुकट धुद्धद्धु-
 कट १२ त्वरवच उचरत महावत मुरजबेलगलगज्ज । रावतदूलह
 मग्निक्क गिरिकज्जल छवित्रज्ज छज्ज च्चित्थिधर गज्जज्जल-

धर कज्जयकर । भुज्भुज्भुकिभुकिखिज्जिभुभटिति सुलिज्ज-
जशवा ॥ भज्जजवसुर गज्जजवशिर रज्जजिनधर । लज्जज-
लधि निभज्जजडधि सलज्जजियत्वर १३ ॥ अथ हयशाबाष्येण ॥
दिनदुलहा दुलहानृपति, यशजाहिरदशदिरश । होतरहतहयशा-
लजिहिं, संगीतकअहनिश ॥ निस्सस्सरिगम धस्मस्सरिगम प-
स्सस्सरिगम । गस्सस्सरिगम मस्सस्सरिगम रस्मस्सरिगम ॥ तत्त
थपइपुनि तत्तथ्यइपुनि तत्तथपइतिन । अस्सस्सकल नृपस्सस्सपल
धिलस्सस्सवदिन १४ ॥ राजकुमारवर्षेत दोह, छन्द ॥ भावत मनरा-
वत कुंवर, उपजावत आनन्द ॥ तीनिहुँमनुत्रिभुवन तिलक, उपमा
अखिल अमन्द १५ कलित केसरी केसरी, सोहत सडुपम शेष ॥
हिम्मतहिय किम्मतकरन, सकुवत सुकविअशोप १६ ॥ सं. रगछन्द ॥
कुंवरकनीयासाल, राजत अतिरघुनाथहरि ॥ तीनिहुँगुणगणमाल,
चितचीनहु सब सुवरनर ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितरङ्गपुरस्थकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेप्रथमवृत्तरणिका
वर्णनसामप्रथमोऽङ्काः ॥ १ ॥

तदुक्कनाटिकावतारे ॥ अष्टाभिर्दशभिर्वापि नान्दीद्वादशभिःपदैः ।
आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशोवापितन्मुख्य ॥ इति नान्दीमङ्गलवचनं
दोहाछन्द ॥ रावत नरपति हुकुमगहि, धिय धरि अभितहुलास ॥ टी-
कमसुत गोविन्दद्विज, श्रीवारवदतविलास १ ॥ मनोहरछन्द ॥ मङ्गल
निधान कलिकित्त्वियहरनहार, पावन पदार्थनको पावनप्रकामहै ।
नान्दीसत्वर परनपद प्रापतिको प्रस्थितजे, मनुज सुमुखु राहल्लर्च
अभिराम है ॥ कविबरबैन विसरामधाम एकवही, सजनको जीवन
जरूर बसुय म है । धर्मवृष बीजहोहु सकल विभूतिप्रद, रावरसदैव

टनकी उदघाटक ॥ सोहत नाटक रत्नमें मणिमालिक सों हनु-
 मान सुनाटक । ग्रन्थ नवीन बने उहि पन्थ न श्रोएपरै अन आव
 उचाटक ६ ॥ दोहाछन्द ॥ कारक जगमें मतातते, समभै सकल र-
 हेश ॥ फाटक हियरेके खुलै, नाटक परडनिशेश ७ आयसु पति
 पिपलोदकी, लीन्हीं शीश चढाय ॥ पुर शोभा पुरपतिप्रभा, कछु
 बरएत चितचाय ८ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ धानक थानक होत कथा-
 नक वानक मङ्गल आनक बाजै । मन्दिर मन्दिर अन्दर सुन्दर से-
 वन देव महोत्सवबाजै ॥ गेहन गेह सनेह सने तुलसी थिरथान
 विशेष विराजै । मोद प्रमोद विनोद भरी पिपलोदपुरी भुवि पै भल
 भ्राजै ९ ॥ अथ नृपतिवर्णन अमृतध्वनीछन्द ॥ लइजय बलि मतलिमहँ
 बंश बल्लिरावह । दुलह रावत खुलि तित मल्ल विदल्लीढल ॥ दल-
 लखि प्रतिमल्ललह नहभल्ललजजित । फुल्लल्लोक विफुल्लल्लोयन
 सुल्लल्लवतित ॥ तुल्लल्लगकि अतुल्लल्लल्लिय जसमुल्लल्लधुनय ॥ दुल्ल-
 ल्लखत नभुल्लल्लगत प्रबल्लल्लहिजय १० ॥ अथ सिंहआखेटक वर्णन ॥
 लखिबे में नवहत्यके, पञ्चानन बड़मत्थ । लत्थ पत्थ लोहन किये,
 दूलह नृप दुइहत्य ॥ हत्थित्थटिमहँ मत्थत्थिनदुइ चित्तत्थिरतुर ।
 बत्थत्थुवक अकत्थत्थिति समत्थत्थलउर ॥ तत्थत्थित प्रहरत्थत्थकि
 तकिजित्तत्थसनखि । कत्थत्थवन कबित्तत्थुइ सर्वत्थत्थवलखि ११ ॥
 अथ गजवर्णन ॥ कटकटत अटकत नहीं, सोहत वारन शुद्ध । लखि
 कुञ्जर गलगुञ्जरत, उर उद्धत अविरुद्ध ॥ रद्धदुर अतिकुद्धत्तुर
 जुरियुद्धदुरअट । धद्धद्धिना धद्धद्धिना धद्धद्धुवरध ॥ धद्धद्धा-
 कट धद्धद्धाकट धद्धद्धाकट । धुद्धद्धुधुकट धुद्धद्धुधुकट धुद्धद्धु-
 कट १२ त्वरवच उचरत महावत मुरजबोलगलगज्ज । रावतदूलह
 क्कगिनक गिरिकज्जल छविज्जज्ज छज्ज च्चतिधर गज्जज्जल-

धर कज्जयकर । भुज्भज्भुकिभुकिखिज्जिभटिति सुलिज्ज-
जशवर ॥ भज्जवसुर गज्जवशिर रज्जजिनधर । लज्जज्ज-
लधि निरज्जज्जडधि सलज्जजियत्वर १३ ॥ अथ हयशालावर्षेण ॥
दिनदुलहा दुलहानृपति, यशजाहिरदश, दिश । होतरहतहयशा-
लजिहिं, संगीतकअहनिश ॥ निस्सस्सरिगम धस्सस्सरिगम प-
स्सस्सरिगम । गस्सस्सरिगम मस्सस्सरिगम रस्सस्सरिगम ॥ तत्त
थपइपुनि तत्तथ्यइपुनि तत्तथ्यइतिन । अस्सस्सकल नृपरस्सस्सवल
विलस्सस्सवदिन १४ ॥ राजकुमारवर्षेण दोहाछन्द ॥ भावत मनरा-
वत कुँवर, उपजावत आनन्द ॥ तीनिहुँमनु त्रिभुवन तिलक, उपमा
अखिल अमन्द १५ कलित केसरी केसरी, सोहत सडुपम शेष ॥
हिम्मतहिय किम्मतकरन, सकुवत सुकविअशेष १६ ॥ सोरठाछन्द ॥
कुँवरकनीयरसाल, राजत अतिरघुनाथहरि ॥ तीनिहुँगुणगणमाल,
चितत्रीनहु सव सुत्रनर ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविद्यापितरजपुरस्यकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दराजविरचितेश्रीवरविलासप्रथादतर, शिका
वर्षेणशामप्रथमोज्ञासः ॥ १ ॥

तदुक्तं नाटिकावतारे ॥ अष्टाभिर्दशभिर्वापि नान्दीद्वादशभिःपदैः ।
आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशोवापितन्मुखम् ॥ इति नान्दीमङ्गलवचनं
दोहाछन्द ॥ रावत नरपति हुकुमगहि, धिय धरि अमितहुलास ॥ टी-
कमसुत गोविन्दद्विज, श्रीवावदतविलास १ ॥ मनोहरछन्द ॥ मङ्गल
निधान कलिकिल्बिपहरनहार, पावन पदार्थनको पावनप्रकामहै ।
नान्दीसत्वर परनपद प्रापतिको प्रस्थितजे, मनुज सुमुखु राहखर्च
अभिराम है ॥ कविवरबैन बिसरामधाम एकवही, सज्जनको जीवन
जरूर बसुयाम है । धर्मबृष बीजहोहु सकल विभूतिपद, रावरसदैव
गुणग्राम रामनाम है २ कमला कुवनपत्र रचना विचित्ररची, मकरी

की मुद्रामञ्जु अङ्कित हृदय है । देवसर्वजगदीश मधुवधुवक्रकञ्ज,
 मुद्रित कानहेतु इन्दुसौ उदयहै ॥ कीड़ाकाज कियो कोडकलित
 कजेवहै, द्वैजचन्द्र जैसी श्वेतदंष्ट्र समुदयहै । तापैदिपै भूमिकड़ी
 प्रलय पयोधिमुस्ता, थमसालसत ऐसोराम सोसुदयहै ३ शैवशिव
 धारे ब्रह्म बदत वेदान्तवारे, बौद्धमतवारे बुद्ध बुद्धि में विचारे हैं ।
 कर्त्ताकहै नैयायिक जैनी आहन्तरै, मीमांसक कर्म एक ईश्वर उ-
 चारे हैं ॥ गावत गोविन्दहोहु बाञ्छितफजद प्रभु, रैन दिन शवरे
 सुधारे काज सारे हैं । वह है त्रिलोकीनाथ सीतानाथ रघुनाथ, न्यारे
 न्यारे लोक न्यारे रूपते निहारे हैं ४ राम वह रावणारि दशरथसूनु
 लसै, लक्ष्मण अग्रजात सुगुन समेत है । पूज्यपृष्ठ पूर्णअब्धि अन्त
 लौप्रतापजामु, सकल सुहाग सिद्धि विद्याको निकेतहै ॥ आनँदको
 कन्द कलि किल्बिष पटलध्वंसि, सौम्यदेव सेनातम सर्वको संकेतहै ।
 त्रिभुवन शरण अशरणको शरण सदा, नित्यनिकलङ्कताहि प्रणवों
 सहेत है ५ अत्रभपुरी को भूप दशरथ होतभयो, सूर्यवंश केतुशूर
 शत्रुन सँहारी है । बलीबीर विक्रमी करीही पुत्रइष्टि ताने, नारायण
 तवै तासु आश निरधारी है ॥ दुष्ट दैत्य कष्टभूरि भारभयो भूतलपै,
 तिनके सँहारहेतु चार भूर्तिवारी है । जेष्ठ श्रेष्ठ राम लपण भारतरु
 शत्रुहन, चारों भ्रात मात तात आयसानुसारी है ६ असुरन भूरि
 भयभीत मुनि विश्वामित्र, अवध अधीश अङ्गजात युग याचेहैं ।
 औनिप यशस्वी निज चित्तमें दुचित्तहोय, दीन्हे सुत दोग राम ल-
 क्ष्मण राचे हैं ॥ सुन्दासुर सुन्दरी प्रहारी ताटकाभिधान, कौशि-
 कहुजानी नृप बालशूर सांचे हैं । विद्याहृद्य दीनीसद्य अति अन-
 वद्यतदा, कदिगे समस्तजै मनोर्थमन काचेहैं ७ ॥ मत्तगजेन्द्रहृन्द ॥
 कौशिकनन्दन अश्रम आय कियो मखतूरन आप अबै हैं धूम

निहारत आसुर ओष सुबाहु भारीचिसमेत सबै हैं ॥ श्रीरघुनन्दन
 कन्द कियो क्षण छांड़ि मरीचि सुजान जवै हैं । कारजलैन कबूक-
 रयो जिहिते तिहिको तजिदीन तबै हैं ॥ मनोहरछन्द ॥ सीताको
 स्वयंवर सुनत श्रौन कियोगौन, मारगमें शिलारूप अहल्या उधा-
 रीहै । जनकपुरी में जाय सर्व सतकार पाय, महत महीपनमें पाये
 शोभ भारीहै ॥ गावत गोविन्दलखि कोशलकिशोर छवि, चित्रसे
 भये हैं यत्र तत्र नर नारीहैं । इन्द्रहै कि इन्दुहै कि दिपत दिनेन्द्र
 किधौं, दशरथनन्द रामचन्द्र बलिहारी है ६ ॥ दोहाछन्द ॥ निरखत
 निमि नृपनन्दनी, उर उमँगयो आनन्द ॥ निज मनमधि संकल्प
 कछु, करनलगी स्वच्छन्द १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ कच्छप पीठ कठोर
 यहै शिवचापहै । कोमल सूरति श्रीरघुनन्दन आपहै ॥ इनते होय
 अधिज्य कौन यह बातहै । परहां । प्रणदारुण अति कीन अहह
 तुम तातहै ११ ॥ मनोहरछन्द ॥ लक्ष्मणलाय लक्ष्मणते कहत राम,
 पेखहु पृथीप पुञ्ज पुञ्ज प्रकथन है । जम्बूद्वीप आदि द्वीप द्वीप के
 महीप आये, कन्या अरु कीर्तिलाभ मानत महानहै ॥ बद्धितकि-
 योकाहु टड्कित महेशचाप, नमितकियो न कियो उत्थापितथानहै ।
 चढ़ी नाकबान कछु कड़ीना जबानमुख, मेरे जान बीरताबिहीन
 भो जहान है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ किय अनन्द रघुनन्दहिय, निज भुज
 बल वरणन्त ॥ प्रौढ़ी बचन प्रत्यक्षपट्टि, लच्छ बच्छ हुलसन्त १३ ॥
 षट्पदछन्द ॥ बहुत कहनमें कहा, नाथ सच बचन उचारत । दास रा-
 वरो खास, लक्ष्मणधिय यह धारत ॥ गिनौं न गिरिवर मेरु, प्रमुख
 धनुकीका गिनती । अतिशय जीर्ण पिनाक, करौं प्रभुते यह
 बिनती ॥ सुहिंहोय हुकम मम लखहु बल, कौन कौन कौतुक
 करौं धकिधरौं मरौं मूलजिभि, गहि शतयोजन अनुसरौं १४ ॥

कोटाछन्द ॥ सुवचनसुनि श्रीराम, नीति निलय निज अनुजके ॥

धुक्कुलमणि गुणग्राम, किय निपेध दृगसैनकरि ॥ १५ ॥

इति श्रीविपलोदपत्तनाधिपतिरावतजीश्रीदूलहसिहजीविष्णोपितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामधिरचितेश्रीवरविद्यासेश्रीरामलक्ष्मणसंवाद्यो

नामद्वितीयोऽङ्कासः ॥ २ ॥

दोहाछन्द ॥ लारयो रावण पुरोहित, बतरावन निमिनाथ ॥ नि-

तप्रति दुहिता रावरी, चितचाहत दशमाथ १ ॥ मनोहरछन्द ॥ देनी है

अवश्य मयदुहिता कहूं न कहूं, लेनीचहै लङ्काधीश चितमें विचा-

रिये । जाके गुणगावें महासुनि मरिच्यादि प्राच्य, धरनीकी रेणुते

विशेष धियधारिये ॥ परमप्रचण्ड दीरदण्डन प्रतापनते, त्रिभुवन

तोक लोक मञ्जरनिहारिये । ऐसे अवलम्ब आहि कीजिये बिलम्ब

नाहिं, अद्य अबिलम्ब आप कारज सुधारिये २ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥

असुर पुरोहित पठत राम प्रति बैनहै । धियधारी लङ्काधिराज सिध

लैनहै ॥ चितचाहत जो श्रेय निजेच्छा छरिडये । परहां । त्रिभुवन

बिजयी संग बैर नहिं मरिडये ३ बद्ध वचन बैदेह पुरोहित पेखिये ।

यह माहेश्वर धनुष दृष्टिदे देखिये ॥ करिहै याहि अधिज्य सुता सो

पायहै । परहां । अपर सबै खिसियाय आय जिमि जायहै ४ पद्धत

पुरोहित सुनो जनक महाराजजू । अवलोकत भुज बीसकितक यह

काजजू ॥ क्षणमधि चूरण करत धरत नहिं धीरहै । परहां । निज

गुरु शिवधनु हेरि सुबिकल शरीरहै ५ बिहंसि बद्ध मिथिलेश

पुरोहित जू रहो । शम्भु बास कैलास लियोकर किमि कहो ॥ गृह

उखेरती बेर कियो अनिवेक है । परहां । अब भय क्यों गुरुभाव

गही धनुटेकहै ६ ॥ दोहाछन्द ॥ जिमि लीनो कैलास करि, तिमि

धनु कीजै सज्य ॥ नातर निलय सिधाइये, उर आशय संत्यज्य ७

कहा, समझि परत नहिं सार ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ सुद सकल क्षिति-
पाल सुअखिल असक्त है ॥ अष्टयाम दशग्रीव ईश अनुरक्त है ॥
धनुषारोपण शुल्क मुल्क जाहिर कियो । परहां । कसहू है सिय
हाय कहत नृप भरि हियो ९ ॥ श्रीवैदेहीशक्यं ॥ कोमल मूरति को-
शलराज किशोर है । शम्भु शरासन कमठ सुपृष्ठ कठोर है ॥ केहि
विधि होय अधिज्य असम्भव बात है । परहां । अति दारुण प्रण
कियो अहहु तुम तात है १० ॥ दोहाछन्द ॥ वैदेही बर बचन सुनि,
नीर भरे नृप नैन ॥ तबै पुरोहित क्रोध करि, कहन लग्यो कछु बैन
११ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ संयुत शम्भुशिवागणनायक स्कन्दननन्दि
गिरिन्द्रउठायो । विक्रम बेश पराक्रम पुत्र दशाननको क्षितिछोरन
छायो ॥ भूप विदेह विचार करौ हिय चाप चढ़ावन वाहि बतायो ।
आवत मोहिं अचम्भ महा इहिमें तुमका पुरुषारथ पायो १२ ॥ कवि-
रवाच ॥ दोहाछन्द ॥ उपरोहित आशेषकरि, उरउमंग अधिकाय ॥
जनक सुनावत सब नृपन, तब निज भुजाउठाय १३ ॥ जनकउवाच ॥
चन्द्रायणाछन्द ॥ शम्भुशरासन मध्य महागुरुताई । बीस भुजनकी
शक्ति जहां कुण्ठितभई ॥ ऐसेको इत आहि याहि सज्जितकरे । पर-
हां । त्रिभुवन विजय विभूति सीय ताको बैरे १४ ॥ कविरवाच ॥
सोरठाछन्द ॥ सुनिविदेह नृपबोल, श्रीधुनन्दन उमँगिउर ॥ लखत
सुलोचन लोल, जटाजूट अन्यीदई ॥ १५ ॥

इति श्रीपिप्लोद्वयस्य नाथिपालराजतजोश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्यकवि-
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेपुरोहित
विदेहसंवादोनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ ३ ॥

तदुल्लंघनन्तराजे ॥ चक्षुर्नामंमृगदृशोजयकारिभृशंस्वरा तदेवपुरुष
स्थारात्स्फुरितंभयशंसनमिति १ ॥ कविरवाच ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ पुल-
कित परमम्मेग सहित सुम्वारविन्द, सियाके कपोल में विलोकत

हैं बारबार । कोणप कदम्बन में होयरह्यो कोलाहल, तिनके प्रपञ्च
 बोल श्रवणनि धारधार ॥ पञ्चानन तुल्य आप पञ्चानन बैनसुनि,
 मञ्चते उतरि पञ्चानन को धनुनिहार । आनँद अखूट जोर जटाजूट
 ग्रन्थिदर्ई, लोगनकी लूटिलई शोभा शुचि सारसार १ ॥ दोहाछन्द ॥
 बामदेव कोदण्ड दृढ़, जब करलीन्हो राम ॥ जामदग्नि जनका-
 त्मजा, तब फरके दृगबाम २ करनलगे धनुमज्ज तब, भ्राता लक्ष्मण
 तस ॥ उरबी अहि कमठादिको, देनलगे विश्वास ३ ॥ रोलाछन्द ॥
 थिराहूजिये थिराधराधारिये भुजंगम । महि अहिधारहू कमठ राम
 कर शिवधनु संगम ॥ दिक्कुञ्जर दृढ़होय त्रितय धारहू इहि अंवसर ।
 सज्ज करत हरचाप आप रघुवंश विभाकर ४ ॥ पदपदछन्द ॥ भूमी
 भई विनम्र, नम्र फणपति फणमण्डल । भयो मेचकित भूरि, बुद्धि
 विपति आखण्डल ॥ किलमिलात किलकमठ, क्षोभ पायो बरुणा-
 लय । दिग्गज दिशिभट सहित, भये कायर करुणालय ॥ बहु बार
 बार वृंहितकरत, धराधार धूजनलगे । जब सज्ज कियो शिवधनुप,
 तब इमि लक्ष्मण कूजन लगे ५ ॥ मनोहरछन्द ॥ इतमें उठायो धनु
 तितै विश्वामित्र तनु, पुलकि उठ्यो है अङ्ग अङ्ग प्रेम पाथ है । इत
 में लत्रायो रघुनन्दन महेशचाप, तितैन में देश देश भूपनके माथ
 है ॥ इतमें भ्रमायो भूरि कोशलकिशोर यह, संशय गँवायो तिते
 निमिपुरनाथ है । कारमुक खँचतमें खँच्यो मन मैथिली को, जाम-
 दग्नि मान औ कमान भग्नसाथ है ६ ॥ पदपदछन्द ॥ जब जारो-
 यण किये कर्णलौ खँचतशङ्कर । तबै त्रिपुरतिय तोम भीमभासंत
 भयङ्कर ॥ कणोत्पल ग्रन्थी जुतिनौकी अष्ट होत है । सदा लगाये
 रहत सुनत निज श्रोत्रश्रोतहै ॥ जब जा उतारि त्रिपुरारि तित
 आस्फालन धनु अनुसरै तब है निराश निशिचरवधू आस्फोटन

कङ्कनकरै ७ ॥ दोहा ॥ उग्रदेव अत्युग्रधनु, उत्थापनते काम ॥ किट्टि
कारण भञ्जन कियो, गुणगाहक श्रीराम न ॥ मनोहरद्वन्द ॥ ब्रह्मव
पातक समेत मन्मथारि अरु, मात्रवधकारि क्षत्रियारि जियजानिकै ।
इन द्वैके संगरयो दोष संसरगतयो, अपर अनेक अघखानि उर
आनिकै ॥ गावत गोविंद गिरा सकल सुजानहुनौ, महत महेश
धनु यह मनमानिकै । पापनकी भई हान ताते ताने तजे प्रान,
राम पाणिपद्म पुण्य तीरथ पिछानिकै ६ दूष्टतहि भीमदनु कीन्हो
है कठोरनाद, विस्मय भयो है ठौरठौर ठामठामहै । रविवर बाजि
राजि ऊंचट गमन कियो, शम्भुशिरकम्प घुप्रधूज्यो धौलशर है ॥
दिग्गज गिरन तथा चतन कुलाद्रिनको, अर्णव मिलन सप्तऊरध
तमामहै । मौथेलीमदन मद अन्धन कदन ओव, आसुर अदन शूर
सदनभिरामहै १० लष्टके बरिष्टवर अष्टह श्रवणरुके, अष्टमूर्ति मूर्ति
अष्ट कष्टभयो भारी है । मुखरित अष्ट दिशा दलन कुलादि अष्ट, अष्ट
कुली नागपाति बधिर निहारीहै ॥ लक्ष्मण भ्रात अतिस्वच्छ मन
लक्षलाय, गोविंद प्रत्यक्ष दक्ष वदे धर्मशारी है । तोर दोरदण्ड जोर
चण्डिकेशको प्रचण्ड, खण्डनकोदण्ड नाद चण्डता प्रचारीहै ११
दूष्टधनुष महि मच्यो महाकौलाहल, निठुर निनाद लोक लो-
कनमें आयो है । श्रौणसुनि शब्दके अमर्षवश मूर्च्छितहै, अति
अविलम्ब ध्वान अध्वधिकि आयो है ॥ जानकी निमित्तजान जान
की रखी न भान, भञ्जि भवचाप आप वीरपद पायोहै । क्रूर क्रोध
अग्निप्रलै अग्नि सो निमग्न उर, निठुरता मग्न जामदग्निमुनि
आयो है १२ मस्तक मनोहर बिगजैरोप कङ्कपत्र, पीठियै निपङ्ग
युग्म रुयातखण्डखण्डहै । परमपवित्र भूति भूपितउरस्थलहै, मञ्जु
दृगचर्म मुञ्जमेखला अक्षण्डहै बसन मर्ज ठाङ्ग रञ्जित ललिततनु,

कर्म धनुष अथ बलय घमण्ड है । दण्ड औ कमण्डलु ले उग्रअस्र
 मण्डल ले, फणशा प्रचण्ड चण्ड चरित उदण्ड है १३ ॥ शंकाछन्द ॥
 ब्रह्मसूत्र वायेंकंधा, दक्षिणदिश धनुषार ॥ धर्मदीधिति सोमसम,
 जिनि अहि चन्दनलार १४ ॥ मनोहरछन्द ॥ जबते जनमलियो
 तबहीं ते ब्रह्मचर्य, शिलास्तम्भ जैसे भुजदण्ड भासमान है । अ-
 क्लिप्त ज्याघात पंक्ति सूचन करत यहै, वसुमति विजय प्रशस्ति
 कहरान है ॥ बभ्रुस्थल प्रबल घनास्र शस्त्रघात किण, कठिनकठोर
 वै सुधारे धारवान है । क्षत्रिय वन बारन विदारन करनहार, आयो
 जमदग्नि जायो जानत जहान है १५ सुदित समुद्र सप्त पुनि
 प्रतिपालकहौ, अर्जुन सहस्रभुज दुष्ट दर्पादाव्यो है ॥ रेवातीर नीर
 के निरोधको करनहार, दोरदण्ड भुण्ड खण्ड खण्डन उद्याव्यो है ।
 नावत गोविन्द ऐसे लक्ष्मण कहत राम, पितृवध पेखत अमर्ष उद-
 वाव्यो है । वही जामदग्नि यह जाने गुरुद्रोही जान, कठिन कु-
 ढाते कठोर कण्डकाव्यो है १६ त्रिगुणित सातवेर क्षत्रिय समस्त
 केर, वला मांस रुधिर सनान बहुवार है । निधन विधान बीच परम
 प्रवान यह, तीयवृद्ध बाल नाहिं निर्दयनिहार है ॥ राजनके कन्धकूट
 कोटि कोटि काठनमें, साठौ घरी आठौ पैर परम प्रचार है । बारवार
 बहत ध्रुवांक धिय धारधार, क्षत्रि क्षयकार घोरधार ये कुठार है ॥ १७ ॥
 इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविशापितरत्नपुरस्यकविटीका
 रामाक्षजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरपिलाक्षेपरशुरामगमननामचतुर्थोऽंकात् ॥ ४ ॥
 शंकाछन्द ॥ कहत क्रोध करि बैन, परशुराम संशय सहित ॥
 तोखी धनुष त्रिनैन, काल कलेवा कौन कहु १ ॥ पदप्रबन्ध ॥ निज
 पति आयुध जानि, पार्वती पूजतजिहिं नित । बासुकि कञ्चुकलाइ,
 नन्दि सादर आञ्छादित ॥ धनुषधनञ्जय तुलय, त्रिपुरतामधि हुव
 इन्धन मोहिं अञ्जत द्वैदूक, करे क नेक हियेजन जब काहन

उत्तरदियो तव, उर अमर्ष अतिशयपगो । फुरकन्त ओठपुट ग्लू नप,
रामहिंसन इणरनलगे २ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ फुलित गल कौं फुन-
कार प्रकुल्लन सापुट कोटर आयो । ओव अहंइति पावकपुत्र
हलाहल धूमतितें प्रकटायो ॥ अन्धसमान किये सबलोकन अम्बर
लौं क्षितिधोरन छायो । लोयनलाल करालकिये ततकाल महा-
विकराल लखायो ३ ॥ मनोहरछन्द ॥ रे रे रे अरे रे राम तेरे ये समग्र
काम, निजकुल कञ्जपै तुपार तोमतैसोहैं । मोहिं पदिं जान्यो नाहिं म्द
डर आन्यो नाहिं, जान्यो ना जहर जामदग्निमुनि जैसोहैं ॥ कीनो
हैं अकारडमें प्रचण्ड दोरदण्ड बल, खण्डनको दण्ड करि चण्डयान
कैसोहैं । आडम्बर डिम्भते विख्यातभयो खण्ड खण्ड, नखडल महीप
में उदण्ड मण्ड ऐसोहैं ४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ निखिल नरेन्द्रनिहाय
कुमुदजिमि जानिये । तिनको सुद्रितकरन मिहिर मुहिं मानिये ॥
कार्तवीर्यप्रति कढ़े यथा मम बोलहैं । परहां । सो सुनिलोजै राम अ-
वण युग खोलहैं ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सहसबाहु नृपसैन्यसह, हौंदिबाहु
दुजएक ॥ प्रकटप्रभाकर पेखिहैं, तवमम संगरटेक ६ यथाकही तैसी
करी, कार्तवीर्य के साथ ॥ सो जानत सारोजगत, ममविक्रम
रघुनाथ ७ ॥ मनोहरछन्द ॥ कठिनस्वभाव मेरो जाहिर जगत बीच,
बालबृद्ध तरुण तमाम तूर्ण मारेहैं । छाँड़यो नाहिं छौना नवसू-
तिका विछौनाबीच, तिनके रुधिर सर्वपितृकाज सारेहैं ॥ सप्तत्रय
बेर क्षुद्र क्षत्रिय त्रियनकेर, गर्भपित अर्भन निकारि काटिहारेहैं ।
अहो अहो अहो महा आचरज आवत है, कहो कहो कहो राम तुम
क्यों विसारेहैं ८ कालसा कराल कूर कठिन कुठार यह, कार्तवीर्य
कराठ भुज छेदनमें दक्ष है । वर्षण केयूर मध्य मणिगण रणकार,
घोर शेरसुनै शत्रु त्रसित तनक्षहैं । तेजकरि तुत्य दैपै छ दरा

दिवाकर सों, क्षत्रीगोत्र काज प्रलौ पावक प्रत्यक्षहै । लक्ष्मण लाय
 लख लक्ष्मण अग्रजात, लक्ष लक्ष लक्ष बन्ध भक्षण विचक्ष है ६ ॥
 षट्पदबन्ध ॥ सुनि सुनि बचन सुनीश, राम निज धैतसि सुनि
 सुनि । पुनि पुनि नयननिहारि, बैनबोले हिय गुनि गुनि ॥ भुज-
 बल विदित न मोहिं, नाहिं शिवधनु प्रतापवल । रावर महिमा
 महा, कहा हौं जानिसकौं भल ॥ करिये न क्रोध नाहक बिभो,
 धरिये धीरज धूवधिय । अज्ञात बालआचरण लखि, है प्रसुदित
 गुरुलोग जिय १० ॥ दोहाबन्ध ॥ करकुठार यह कण्ठमम, करहु
 यथोचित सोय ॥ रघुवंशिन को शूरपन, गो द्विजपै नहिं होय ११ ॥
 मनोहरबन्ध ॥ लीजै सुनि विप्रवर्य हमको तिहारे संग, संगरुकी
 बातहु कियैते होत पापहै । सारेहीनबल हम तुम बलवाननके,
 शीशपै लसत यथा पत्रनपै छापहै ॥ कैसे करिसकै कहौ रावरी
 बरावरी जु, भुजते भये हैं भूप ब्रह्ममुख जापहै । एकगुण संयुत
 धनुप धराधीशानको, नवगुणयुक्त ब्रह्मसूत्र लसै आपहै १२ चित्र
 भानुवंशजन्म क्षत्रिय कहावतहौं, श्रोत्रिय समस्त इभ्य अर्चन
 करतहौं । भगवत विश्वामित्र महत अनुग्रहते, प्राप्त दिव्य अस्त्र
 पारधिय में धरतहौं ॥ कोऊजन करौ यश अथवा कुयश करौ, हर्ष
 शोक नेक नाहिं रसना ररतहौं । धारतहौं शस्त्र शत्रु सवन सँहार
 काज, कालते डरौं न विप्रबालते डरतहौं १३ ॥ दोहाबन्ध ॥ परशु-
 राम रघुराम मुख, निकसे सुनि बरबोल ॥ तिनको कियो न
 तोल कछु, उचरनलगे अतोल १४ विप्र विप्रकहि बदत मुहिं,
 रेशठ बारम्बार । जाबिधिको मैं विप्रहौं, सो सुनिलीजै सार १५ ॥
 वनाक्षरीबन्ध ॥ क्रोधकरि जाने निज जननी प्रहारी पेख, क्षत्रिय
 बिहीन मही कनी इकबँसवार । क्षत्र अस्त्रमध्वा सब स्वादमें

अभिज्ञ अति, कुलिश कठोर घोर कठिन कुठारधार ॥ जाको बाण
 छिद्रमग भासैं कौचपर्वतमें, हंसछलगिरें अजौ अस्थि अद्रिके अ-
 पार । ऐनो उग्र औज उग्रदेव सो उदग्र अति, प्रलयअग्नि जैनो
 जामदग्नि भार्गवनिहार १६ ॥ पद्मपदच्छन्द ॥ सुभित निरखि भृगुनन्द,
 वचन रघुनन्द उचारत । त्रिभुवन तियमधि वीर, जनी जननी तव
 धारत ॥ निजभुजवशी विशाख, बिलखि मुख बीड़ापाई । अससुत
 हूँ मम उदर, उमाउरइच्छाआई। अतिधन्य मात अरुतात धन्य, वीर
 आप अतिधन्यहैं । तिहुँकाल त्रिलोकी बीचकिहुँ, नहिं उपमा कछु
 अन्यहै १७ ॥ चन्द्रायणाच्छन्द ॥ हारपरो गरभोर कि कठिन कुठारहै ।
 कजल तिय चपवसौ कि जलकीधारहै ॥ सुखलखिहौं संसार कि
 यमको सुखलखौं । परहां । बिनपै वीरत्वपनौ कबहुँ न रखौं १८ ॥
 दोहाच्छन्द ॥ कहे राम अभिराम अति, अक्षर अखिल अमोल ॥ तदपि
 अभ्यसूयासहित, बोलत भृगुपति बोल १९ ॥ किरीटीच्छन्द ॥ सागुरगह्यो
 सब शंकरकेकर जीरनचाप पिनाक कहावत । दृष्टिरह्यो पहिले तिहिं
 तोरि प्रबीरनमें नहिं बीरसरावत ॥ वैष्णवचाप हमारयहै करि सज्ज
 विकर्षण जो दरशावत । शूरसमग्रनकी गिनतीमधि तौ रघुनन्दन
 रामगिनावत २० ॥ दोहाच्छन्द ॥ भार्गवमुनि के वचनसुनि, भये च-
 कितचित राम ॥ इत पर्वत उत कूपहै, मिलत न कित विश्राम २१
 धनुषाकर्षण करनमें, विप्रवर्षणाहोय ॥ जो न करौं यह बाततौ,
 मिलत पराभवमोय २२ ॥ पद्मपदच्छन्द ॥ अद्य प्रभृति ममभाव, विप्र
 नहिं परशुराम है । पुत्र पौत्र रघुवंश, भूप नहिं यहै रामहै ॥ वीर
 कहौ अथवा, कुवीर कहियो समग्रजन । अब अवश्य यह बात,
 धारिलीना मेरे मन ॥ सब सुजन कुजन मिलि भल कहौ, किंवा
 करिलि जै हँसि । द्विजदृष्टप्रवल मददमन, हित पीतान्बर कम्पर

कसी २३ इमिकरे मनसि विचार, चारु रघुवंश विभूषण पुन
 रपि प्रवचन पठत, शान्तिमय विरहित दूषण .. अर्णयमित भूमत्र,
 जीति इकबीसवेर यह । गहिगहि पुनिपुनि दियो, नाहिं रखि-
 लियो आपवह ॥ हौं डिम्भ बहुरि नव नाहुबल, घोरमहा अति वीर
 वृत । विरमिये क्रोध हूजै सुदित, जाति पूज्य भगवन्लकृत २४ ॥
 चन्द्रायणलङ्क २ ॥ करत नाहिं द्वैवार बाणसंधानहै । आश्रितको द्वे
 बार दैत नहिं थानहै ॥ अर्थिनको द्वैवेर न अर्पत दानहै । परहां ।
 भापत नहिं द्वैवेर राम अभिधान है २५ राम लियो वह धनुष
 सहेल सुजानहै । गुण योजन करि बाण अकर्षण ठानहै ॥ छवि
 मकरध्वज मध्य नमासत मेदहै । परहां । किय भार्गव मुनि स्वर्ग-
 गती उच्छेदहै २६ रामबाण संधान निरर्थक नहिं कदा । मुनि
 प्रति किये प्रहार ब्रह्मबध ह्वै तदा ॥ किये भूमि पर पतन भूत पीड़ा
 यदा । परहां । छेद्यो मुनिको मरण अमर कीनो सदा २७ चापा-
 कर्षण ताटकारि आकर्षण है । लखतसीय सासूप नैन आकर्षण है ॥
 पहिले भवधनुभञ्जि राम मोकोलई । परहां । अबै कन्यका अन्य
 लैन इच्छाठई २८ ॥ दोहालङ्क ॥ इहिविधि साशंकित भई, करि कु-
 तर्क कमनीय ॥ पुनिपुनि सिय पेखनलगी, रामरूप रमनीय २९
 अब उदन्त सुनिलीजिये, परशुराम मुनिकेर ॥ गये गर्वके टेरसब,
 रहे रामतनहेर ३० ॥ षट्पदलङ्क ॥ कार्तवीर्य भुजदण्ड, सहस उच्छे-
 दन परिडत । जामदग्नि युधवीर, उरसिउद्दण्ड अखण्डित ॥ लखत
 राम अतिउग्र, विशिख करधर उहिंअवसर । अविनयगयो बिलाप,
 हीय हुलसाय विनयवर ॥ ब्राह्मण्यदैत्य प्रणईभयो, पिशुनभाव
 भार्गव भग्यो । श्रीरामचन्द्र अभिनन्दितब, अमलतवन उचरन
 लग्यो ३१ अहो रामगुणग्राम, धर्मध्रुवधाम धुरंधर दिनमणिकुल

कल कलश, प्रचुरपुहबीश पुंहर ॥ जो न आप अवतार, अमल
निरमल महिहोतो। तौ अवलम्बन अवनि, अवनि अधिपन नहिं हो
तो ॥ त्रैलोक्यतापत्रासक तरल, निजनरमुद मंगलकरण। अपराध
ओघ क्षमियो विभो, सकल लोक अशरण शरण ३२ ॥ दोहाछन्द ॥
तत्र सुनि भृगुपति वरतवन, वदत बचन रघुनन्द । जामदग्निमुनि
चरणयुग, करि अभिवन्दनवृन्द ३३ ॥ मत्तोहरछन्द ॥ जाये जमदग्नि
पुनि पायेहौ पिनाकी गुरु, वीरज विधानना वसानत बनन्तहै ।
कर्मकरि सारेहु जहानबीच जाहिरहौ, धरमधरैया धीर महिमा मन-
न्तहै ॥ सुद्रित समुद्रसप्त सप्तद्वीपवती मही, दीनिहै त्रिसप्तके भूसुर
मनन्तहै । सत्यनिधे ब्रह्मनिधे तपोनिधे भगवन्त आप लोक लोको-
त्तर उपमा अनन्तहै ३४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जानि आप अवतार
भये रघुनाथहै । परम प्रेममिलि गाढ़ नयनयुग पाथ है ॥ अप्यो
तेज महत्त क्षत्रिवध छंडिया । परहां । उत्तर दिशि कियगवन त-
पसिमन मंडिया ३५ ॥ पद्मवदछन्द ॥ बहुविधि बाजन बजत, मनहुँ
घन गरजत मधुधुनि । गावत मङ्गलगीत, सुवासिनि चेतसि चुनि
चुनि ॥ विरदावली वदन्ति, वृन्द बृन्दन बन्दीजन । वेद मन्त्र
वर विप्र, उधारत अखिल मुदितमन ॥ श्रीराम सीय पाणिप्रहण,
निरखत मुनि नरसुर असुर । आनन्द ओव वर्त्ततभयो, उहि अव-
सर सब जनकपुर ३६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूलह दुलहिनि दिपत दुहुँ,
रति रतिपती समान । मञ्जुसुहृतर जनकनृप, दीनों दुहिता दान
३७ ॥ हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामश्याम सुकाम अतिअभिराम पीतम
पीयके । पाये परसिंकर सकल सुखनिधि हीयहरपत सीयके ॥
आनन्द सतचितरूप भासत योगनिद्रगता यथा । कन्दर्प के बड़
दर्पके शर भिन्न भ्र जत हैं तथा ३८ बत्मीकि गौतम कुशिक-

कसी २३ इमिकरि मनसि विचार, चारु खुवंश विभूषण पुन-
 रि प्रबचन पठत, शान्तिमय विरहित रूपण । प्रणवमित भूमत्र,
 जीति इकवीसवेर यह । गहिगहि पुनिपुनि दियो, नाहिं रवि-
 लियो आपवह ॥ हौं डिम्भ बहुरि नव बाहुबल, घोसहा अति वीर
 वृत । विरमिये क्रोध हुजै सुदित, जाति पूज्य भगवन्त्कृत २४ ॥
 चन्द्रायणाङ्क २ ॥ कात नाहिं दैवार बाणसंधानहै । आश्रितको दे
 वार देत नहिं थानहै ॥ अर्थिनको दैवार न अर्पत दानहै । परहां ।
 भापत नहिं दैवेर राम अभिधान है २५ राम लियो वह धनुष
 सहेल सुजानहै । गुण योजन करि बाण अकर्षण ठानहै ॥ ब्रवि
 मकरध्वज मध्य नमासत मेदहै । परहां । किय भार्गव मुनि स्वर्ग-
 गती उच्छेदहै २६ रामबाण संधान निस्थक नहिं कदा । मुनि
 प्रति किये प्रहार ब्रह्मवध है तदा ॥ किये भूमि पर पतन भूत पीड़ा
 यदा । परहां । छेद्यो मुनिको मरण अमर कीनो सदा २७ चापा-
 कर्षण ताटकारि आकर्ण है । लखतसीय सामूप नैन आकर्ण है ॥
 पहिले भवधनुभञ्जि राम मोकोलई । परहां । अबै कन्यका अन्य
 लैन इच्छाठई २८ ॥ दोहाङ्क ॥ इहिविधि साशंकित भई, करि कु-
 तर्क कमनीय ॥ पुनिपुनि सिध पेखनलगी, रामरूप रमनीय २९
 अब उदन्त सुनिलीजिये, परशुराम मुनिकेर ॥ गये गर्बके टेसय,
 रहे रामतनहेर ३० ॥ पद्यदङ्क ॥ कार्तवीर्य भुजदण्ड, सहस उच्छे-
 दन परिडत । जामदग्नि युधवीर, उरसिउदण्ड अखण्डत ॥ लखत
 राम अतिउग्र, विशिख करधर उहिंअवसर । अविनयगयो बिलाप,
 हीय हुलसाय विनयवर ॥ ब्राह्मण्यदैत्य प्रणईभयो, पिशुनभाव
 भार्गव भग्यो । श्रीरामचन्द्र अभिनन्दितव, अमलतवन उचरन
 खग्यो ३१ अहो रामगुणग्राम, धर्मधुप्रधाम धुरंधर दिनमणिकुल

कल कलश, प्रचुरपुद्गलीश पुन्दर ॥ जो न आप अवतार, अमल
निरमल महिहोतो। तौ अवलम्बन अवनि, अवनि अधिपन नहिं हो
तो ॥ त्रैलोक्यतापत्रासक तरल, निजनरसुद मंगलकरण। अपराध
ओष श्रमियो विभो, सकल लोक अशरण शरण ३२ ॥ दोहाछन्द ॥
तव सुनि भृगुरति वरतवन, बदत वचन रघुनन्द। जामदग्निमुनि
चरणयुग, करि अभिवन्दन वृन्द ३३ ॥ मत्तोहरछन्द ॥ जाये जमदग्नि
पुनि पायेहौ पिनाकी गुरु, बीरज विधानना वखानत बनन्तहै।
कर्मकरि सारेहु जहानबीच जाहिरहौ, धरमधरैया धीर महिमा मन-
न्तहै ॥ मुद्रित समुद्रसप्त सप्तद्वीपवती मही, दोनिहै त्रिससवेर भूसुर
मनन्तहै। सत्यनिधे ब्रह्मनिधे तपोनिधे भगवन्त आप लोक लोको-
त्तर उपमा अनन्तहै ३४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ जानि आप अवतार
भये रघुनाथहै। परम प्रेममिलि गाढ़ नयनयुग पाथ है ॥ अप्यो
तेज महत्त्र क्षत्रिवध छंडिया। परहां। उत्तर दिशि कियगवन त-
पसिमन मंडिया ३५ ॥ पद्मवदछन्द ॥ बहुविधि वाजन बजत, मनहुँ
घन गरजत मधुधुनि। गावत मङ्गलगीत, सुवासिनि चेतसि चुनि
चुनि ॥ विरदावली बदनित, वृन्द वृन्दन वन्दीजन। वेद मन्त्र
वर विप्र, उधारत अखिल मुदितमन ॥ श्रीराम सीय पाणिग्रहण,
निरखत सुनि नर सुर अमुर। आनन्द ओष वर्त्ततभयो, उहि अव-
सर सब जनकपुर ३६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूल्ह दुलहिनि दिपत दुहुँ,
रति रतिपती समान। मञ्जुसुहृत् जनकनृप, दीनों दुहिता दान
३७ ॥ हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामश्याम सुकाम अतिअभिराम पीतम
पीयके। पाये परसिद्धर सकल सुखनिधि हीयहरपत सीयके ॥
आनन्द सतचितरूप भासत योगनिद्रगता यथा। कन्दर्प के बड़
दर्पके शर भिन्न भ्रजत हैं तथा ३८ वत्मीके गौतम कुशिक-

नन्दन जामदग्नि वशिष्ठहै । ये व्याह विविध विधान विरच्यो शता-
नन्द विशिष्ठहै ॥ सम्पूर्णकिय परिपूर्ण तूरण सीय लक्ष्मण साध-
है । कीनो गमन हुत आगमन निजपुरी प्रति रघुनाथ है ॥ २६ ॥

इति श्रीभिषक्तोदपत्तनाधिगलरावतर्जश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासेसीतास्त्रय-
स्वरानामयश्चमोह्लासः ॥ ५ ॥

अथ श्रीहनुमन्नाटके प्रथमोक्तः ॥ मनोहरचन्द्र ॥ आवत अवधपुर जा-

नकी लपणयुत, बन्दि गुरुलोक रामचन्द्र प्रेमपाये हैं । परमउछाह
छायरह्यो गेह गेहनमें, दिव्यदेह देहमें सनेह सरसाये हैं ॥ पहिलो
पहरवीत्यो मित्रन मिलनमध्य, बाकी तीनयाम अतिदीर्घ दर्शाये
हैं । दण्डकरि ताड़त तुङ्गतत सीताराम, चित्र हयशालामें विचित्र
छोहछाये हैं १ ॥ दोहाचन्द्र ॥ पियताड़त हयशालहय, सियताड़त
हयचित्र । उभयभये उन्मादधित, किहिकारण कहु मित्र २ ॥ तस्यो-
त्तरं ॥ घनाक्षरीचन्द्र ॥ परनिपधारे प्रातही ते पुत्र पुत्रबधू, अमित उ-
छाह आग्रह्यो औधमें अपार । आफताव गिरि में निहारि रवि
रूपरम्य, दम्पति हृदयभांति जाको पेखिये न पार ॥ मङ्गलमनोहर
निहारन न काजआये, अर्क अश्व उनजानि कछु धुनि धारधार ।
अस्ताचल ये हैं कम्ब ऐसे उरआन्यो तव, मेदुरमें मन्दुरामें तजै
तिन्हैं बास्वार ३ ॥ षट्पदचन्द्र ॥ गये अस्तगिरि अर्क, उदय शशि-
धर दरसायो । रंगपक्क नारिंगि, पिंग सुन्दर सरसायो ॥ गुरुजन
आयसुपाय, गई निजमन्दिर अन्दर । सियारम्य रम्भोरु, पतिव्रत
प्रेम धुरन्धर ॥ सुख मन्द मन्द सुसकन सहित, रसिकशिरोमणि
स्वामिप्रति । आनन्दकन्द रघुनन्दजित, रामकाम अभिराम अति ४
प्राचीभाग सराग, तरणि विरहिणि विस्तारे । नीरजालि निद्रालु,
कुमुदकुल विकसितसारे विगत बिकार चकोर, शोक सह के क

लोकहै भावकाश आकाश, शमित तमती लोकहै कन्दर्पदप
 अर्पित हृदय, प्रबल प्रसर्पण करिस्यो । शर्वरी स्वामि अभिराम
 अति, सार्वभौम समुदयभयो ५ कैरवकोरक विक्रमि, तरुण तरुणी
 मनविदलत । मीलत अलि अभोज, मान मानिनि उन्मूलत ॥ प्र-
 सारि जुन्हाई जाल, तोमतम कवल करतअति । ऊर्ध्वबेल अभोधि,
 आकुलित कोक कुलनतति ॥ दिशिदिशि सकल वनलिभ ध-
 रत, हरत निखिल तनतापहै । वरवरत हृदय आनन्दनिधि, उदय
 सुधाधर आपहै ६ कुचगिरि शिखर उत्तंग, हीय सीमन्तिनि सर-
 सत । अजौ मान यह सूद, तितै निवसत नित दरसत ॥ कुपित
 कलेवर अरुण, रूप रोहिणिपति आन्यो । करपसारि चहुँओर, कु-
 मुदकुञ्ज विक्रमन आन्यो ॥ तितरुकी हुती अनरावली, बांधिपांति
 निकसी लसी । मनु मान प्रहारण कारने, असित असी निकस्यो
 शशी ७ अस्तभये दिननाथ, वेप उहिको शशिलीनो । सहितरग
 अनुराग, कमलिनी सपरसकीनो ॥ पायशीतकरपरसि, तथा मुद्रित
 मुख आन्यो । परतिघरत निजनाथ, कुनुदिनी कामिनि मान्यो ॥
 परहां । सकथन कौतुक किये तब, अति लज्जित है स्यो । अरु-
 णिमा गई सत्र अङ्गकी, इहिकारण पांडुभयो = दिक्षागुरु शृंगार,
 मुकुर प्राचीदिशि तियको । कुमुदन कौमुद करन, चकोरन हरपन
 हियको ॥ प्रौढभये शीतांशु, रोदसी वपु सरसत है । राम कहत
 सखि करहु, तर्क अस कस दरसत है ॥ यह कियोँ पूर कपूर कृन,
 किंवा मलयज लिप्तकिय ॥ ७ ॥ किथोँ पलास्यो पारदनि, अथवा
 फाटिक मणि खचिय ६ ॥ दोहाछन्द ॥ सखीकहत करजोरि युग,
 सुनिये विनय हजूर । भवो सकल संसार मधिरावर यश परिपूर १०
 फाटिक नहिँ पारद नहिँ, नहिँ चन्दन न कपूर श्रीघनन्दनराषरो,

सुयश जगत परिपूर ११ तदनन्तर निरखतभये, चुगत चकोर
 अंगार । तिन प्रति रघुवर उच्चरत, शोधहु सारासार १२ सुधा सुधा-
 धर स्वादगहि, पुनि अङ्गारक प्रीति । करत अन्यथा कौन कहु, रची
 विधाता सीति १३ ॥ षट्दश ॥ तरल तिमिर चय चमू चक्र संहार
 चक्र यह । चक्रबाक क्रीडा क्रतान्त निष्क्रान्त क्रान्तिसह ॥ क्रान्ता
 क्रान्त नितान्त वृत्त संयोग साञ्छिरह । गगन मानसर राजहंस
 राजत शशाङ्कमह ॥ ७नि ॥ शुचि संभोगारम्भमधि कुम्भ कुमुद
 तिय सुमुदप्रद । गीर्वाण नाहि नीर्वाणप्रद पञ्चबाण निशशाणहद
 १४ ॥ सोरठा छन्द ॥ बदैसारिका बैन, सहचरि रानि सुनायकै । यह
 सूचनकरि सैन, अवसर ठहरन कौन अब १५ निज निज गई नि-
 केत, सकल सहचरी समुक्ति जिय । शोभा सकल संकेत, सिय सिय
 पिय हुलसन्त हिय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालगवतजीश्रीबुलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारा-
 माङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसहचरीगमनोनामपद्योत्साहः ॥ ६ ॥

हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामचन्द्ररु जानकी युग हृदय किय नीशाण
 है । जे चन्द्रमण्डल शाणतैं उत्तीर्ण रतिपति बाण है ॥ तेपञ्चबाणक
 बाणते निकसे कसे आकर्णलौ । लागे अवानक आयके युगवक्ष
 थलवर बर्णलौ १ द्वाराप्रभागनि जाय प्रीतम प्रीतियुत गहिअङ्क
 पै । लीनी निमी नृपनन्दनी आनन्दयुत परयङ्कपै ॥ रोमाञ्चबपु
 अतिनम्र आनन नाहि कञ्जुतनु भानकी । संकोचकरि संकुचित
 हेरइ जानकी प्रियप्रानकी २ संसारसारो कहत स्मरशर पञ्चवानि
 प्रमानकी । कोशादिकनमें काव्यगणमें व्याकरण अनुमानकी ॥
 बिरुयातहै सब ख्यातमें शरपञ्च इति अभिधानकी । मोगात में
 अगिनन्त किमि रोमाञ्चलखि कह ज नकी ३

लिङ्गितहोय, स्वपिहि स्वामिनि पिय भापत । नहिं नहिं नहिं
इति वचन, जानकी आनन राखत ॥ कोमल कमल समान, स्वामि
बक्षस्थलराजै । मम कुच कठिन कठोर, जुभन संशय मनछाजै ॥
पुनि ॥ पवन प्रवेशन होनहित, करतहत मैथिलि शिथिल । प्रभुप्रा-
णनाथ प्रियप्राण सिय, किय आकर्षण बाहुबल ४ बाहुपाश अ-
न्योन्य, ग्रहण रसभर भलभूपित । जयति युगलकिशोर, सुहुसुहु
उपम अदूपित ॥ अति अभिमतफल, लेत उभय सुखदेत परस्पर ।
गर्भसार संसार, भयो नूतनइव रसपर ॥ महमञ्जुल मधुगलापकरि,
हां हां हां रघुवर रटत । निमिनाथनन्दनी मेढगिरि, ना ना ना
कहिकै नटत ५ खदिरसार वनसार, युगल चूर्णन करि आवृत ।
नागबेलि दल विमल, बीटिका निज आननधृत ॥ कह्यो ललीसों
लेउ, लियो सिय चार भागकरि । धर्मादिक फल चार पदारथ लुलित
धीर्यधरि ॥ पुनि ॥ रामचन्द्र सानन्दहुइ, मैथिलिसुख निजमिलत
मुख । अतिमधुर पाइ प्रभु अश्ररस, पाये ब्रह्मानन्दसुख ६ ॥
चन्द्रायणाछन्द ॥ जब कछु निद्रित नयनभये युग सीयके । तबै हृदय
पर किये पानिपुट पीयके ॥ चित्तस्थित प्रभुरूप विनिर्गम नहिंबहै ।
परहां । यह उरआशय अमल निरुन्धितही रहै ७ ॥ दोहाछन्द ॥
बैदेहीबर बक्षथल, यक्ष कर्दमाप्राय । आयो अलि अवलोकि त्रिभु,
उहिंवरणत चितचाय ८ ॥ पद्मदछन्द ॥ कान्ताकान्त नितान्त,
कुचान्तर चन्दन चर्चित । भदन दहन तप शमन, हेत घनसार
समर्चित ॥ सिया उरस्थल मध्य, मधुप निर्मग्न भयो जिहिं । यच्छ
रहै बाहरे, करतउतप्रेक्ष पेखितिहिं । मनुषखो पञ्चशर विशिख
हिय, रहे पुंख अवशिष्ट है । सो सुनत व्याज निद्रित मिया,
श्रवण सुधामम मिष्टहै ९ प्रथुल जवन उनमार, मन्द आंदोलन

आनै मृदुचञ्चल अलिकाग्र, अलि अलि आभाभानै प्रक-
 रितकृत भुजसूल, फुरत श्रुति कर्णपूर है स्तनलीला ला लित्य,
 बसत वपु पूरनूर है ॥ जानकी व्याज निद्रा यहै, प्रसुदित मानस पीय
 को । हीयको हरन हुलसन्त है, जीवन जानहु जीयको १० लखि
 नारी निद्रालु, बसन पियहरिबे लागो । काञ्चीख सुनि काम, तत-
 क्षण आवत भागो ॥ तस्कर लुकिबे लग्यो, ताहि मणि गणनि
 वतायो । काम चलाये बान, चोर अतिशय सतरायो ॥ घनजघन
 जानि गिरिवर गुहा, तित तूरन कीनो सदन । लाखि शम्भु युगल
 उर ऊपरै, हूँ समीत रुकिगो मदन ११ ॥ लोकाञ्चन्द ॥ प्रकट पद्मिनी
 प्रीति, जिमि वरणत रसग्रन्थ मधि ॥ सो कीनी सब रीति, अन्त-
 र्यामी रतिकप्रिय १२ जनक जनकजायात, जगजननी जनका-
 त्मजा । शुचि शृंगारकी बात, उचित नहीं बहुवरणिबो १३ तद-
 नन्तर सुवस्त्रि, सुनि लीजै सज्जन सकल । पूरणपरम पवित्र, जय
 जागी जनकात्मजा १४ ॥ षट्पदञ्चन्द ॥ करतप्रेम करि स्पृहा, बाल
 भावन करि भीती । आकुञ्चत निज अङ्ग, सुरत संगमपर प्रीती ॥
 अहह नाह नहिं नहीं, व्याजसह बच सरसावत । मधु रसमेर कटाक्ष
 आदि भावन दरशावत ॥ उनि ॥ निधुवन घनकेलि करि म्लान
 भाव जिय भाजत है । अरु शङ्कातंकित चारु चितरमण रभसभय
 छाजत है १५ ॥ दोहाञ्चन्द ॥ अक्षर दशन सीत्कार करि, कहत युगल
 करजोर । निर्विशङ्क मनहोय पिय, पिव पिव रसना मोर १६ ल-
 लितशालि आलाप करि, बिलसत बाकबिलास । अविरत निमि
 नृपनन्दनी, पिय हिय करतहुलास १७ रम्भा वीणानादते, मधुरस-
 रस सुखबास । सुरभित सुरद्रुम सुमनसम, वरसिय बचन विलास १८
 रसिक शिरोमणि सांवरो, श्रीरघुबर रमनीय । सुनि बैदेही बचन

वर, कहत बचन कमनीय १६ ॥ षट्पदछन्द ॥ कानन गये कुङ्कु,
 कुहरगिरि केहरिगयऊ । दिग्गजगये दिशान, कमल जल आश्रित
 भयऊ ॥ चप कटि कुच वर वदन, विनिर्जित पेखहु प्यारी । पायपरा-
 भव परम, भये अति लज्जित भारी ॥ यह गीति सदा सतपुरुषकी,
 मानमलान जरूरहै । तव मान ततक्षण मरन मन, अथवा जावत
 दूर है २० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ जल अन्दर जपकरत कमलकुल जा-
 पकै । अञ्जमाल अलि अवलि परमपदु पायकै ॥ चहत चित्त
 चपतौर तुल्यते हौनहै । परहां । धारण कृत इहहेत बनज मुख
 मौनहै २१ ॥ सोरठाछन्द ॥ ऐणी श्रेणी शूर, बन बसि तृण भक्षण
 करत । चपसम हौनिजरूर, मृगानयनी तपकरतते २२ अयि ऐणी
 चप ओर, अहिश्रेणी बेणीलखत । तुलित होत नहीं तोर, इहिका-
 रण द्विपिरहत नित २३ चहत वतुनुसम तौन, अये चारु चम्पक
 तनी । सुवरण सुवरणहौन, दहनदेह किय दहनमधि २४ दाड़िम
 हीयदरार, दरकि दरकि दरशातदग । दन्तपंक्ति मणिमार, तव
 निहारि निमिनन्दनी २५ ॥ षट्पदछन्द ॥ क्षीरसिन्धु अरु पुहुमि,
 युगल जिहिं पलुवाकीने । ओपधीश अरु वदन, तोर तिनमें रखि
 दीने ॥ अनिलदण्ड करि तुला, विधाता तिनको तोलत । यहै
 भूमिको भूमि, वहे गगनाङ्गन डोलत ॥ तव तोल बराबर होनहित,
 तारागण तितमें रखत । तउरह्यो ऊर्ध्वको ऊर्ध्व वह, गुरुताई सुख
 में लखत २६ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कह सीता करजोरि नाथ चित
 चहतहौं । चरण भावनाधारि गिरामुख कहतहौं ॥ गुरुता भये
 न स्वाद स्वाद मधुराइमें । हरिहां । करिनिरशोप अधिकगुण जाइमें
 २७ ॥ दोहाछन्द ॥ गिरा मनोहर सुनिसिया, पूर्णकाम प्रभु तूर्ण ।
 अभिमत आलिङ्गन कियो, कृत मनोर्धसम्पूर्ण २८ शुचितन शोभा

सीयकी, हरत रमण हियताप । अवधछैल आभा सियहि, आनँद
 देत अमाप २६ ॥ मनोहरछन्द ॥ कविरुवाच ॥ कैसे वे जलज नील
 अतसी कुसुम जैसे, कैसे वे कुसुम जैसे नीलमणि धामहै । नीलमणि
 धाम कैसे शोभित तमालतैसे, कैसे वे तमाल जैसे दूबदल श्याम
 है ॥ दूबदल श्यामकैसे यमुना प्रवाह जैसे, यमुना प्रवाह कैसे जैसे
 तनुरामहै । राममुनि श्यामकैसे नववनश्याम जैसे, नववनश्याम
 कैसे जैसे श्याम रामहै २० पीतमणिमाल कैसी लतिका सुवर्ण
 जैसी, कैसी लता जैसी रङ्ग केसर अमन्दरी । केसर सुकैसी जैसी
 सोनजुही कैसी जुही, जैसी गिरा बारिबृष्टि बृन्दवर बृन्दरी ॥ कैसी
 ओप अम्बुकी सुजैसी यज्ञज्वालज्योति, कैसी ज्वाल जैसी पीत-
 पट छवि छन्दरी । कैसी पटज्योति जैसी सीयछवि कैसी सीय, जैसी
 बिज्जु कैसी बिज्जु जैसी सिय सुन्दरी २१ कैसे नील पीतपट पावन
 प्रकाशवान, जैसी श्रीतमाल स्वर्णमाल छविवामिनी । कैसी बेस-
 माल जैसी नील पीत पङ्कजकी, मञ्जुल सुगन्ध प्रभा पूरित सुना-
 मिनी ॥ कैसे नीलपीत कज्ज जैसी नीलपीतमणि, कैसी मणि जैसी
 गिरा कृष्णा अभिरामिनी । कैसी नदी जैसे घन बिज्जु वन बिज्जु
 कैसे, जैसे युग कैसे युग जैसे घनदामिनी २२ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ विरह
 दीर्घ आगामि जानिजिय जानकी । चरणायुध भुनि सुनत भोर
 भइ भानकी ॥ पति वियोग जिनहोउ धारि जिय कजरी । अरिहां ।
 तासु शान्तिके हेत प्रपूजत मञ्जरी ॥ २३ ॥

इति श्रीपिप्लोदपक्षनाधिपालरावतश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाहज-
 गोविन्दरामविरचितेश्रीबरविलासेश्रीजानकीविलासेनामसप्तमोऽङ्कः ॥ ७ ॥

प्रेमको नेम, निरन्तर हृदय लखावत । निरखि निरखि आनन्द, पर-
स्पर परम पिखावत ॥ अहुराते पै अबिलम्बअति, वहअवसर आ-
वतभयो । जोदशरथनृप मृगयाकरत, सुनीशाप पावतभयो १ वैश्य
तपस्वी यज्ञदत्तमुनि श्रवण तातहौ । वह निज तियासमेत, जगठ
जात्यन्ध गातहौ ॥ दशरथनृपके हाथ, मख्यो तिहिं सुत गजभ्रमते ।
शापदियो ऋषि अन्ध, तुमहुँ मरिहौ या क्रमते ॥ अतिवृद्ध अवस्था
बीचतुम, सुत वियोग हुतपाइहौ । वह तरलनाप संतापसहि, आपहु
सुरपुर जाइहौ २ मलिनकिरण दिनमणी, भूरिभूकम्पहोतहै । उलका
दण्ड प्रचण्ड, पतन अम्बर उदोतहै ॥ धूसरभो दिग्भाग, ग्रहण रवि
शशि बहुदरशत । शारमेयरुत अमित, फेरु परवार प्रकरशत ॥ बहु
रुधिरबिन्दु वरसन्त नभ, तमतारा दरशन्तदिन । उत्पात अमितचित
काररव, प्रलयसरिस सरसात छिन ३ ॥ दोहाछन्द ॥ तितलसि सब
उत्पात अति, केकयि करत विचार । आइगयो अवसर अवै, लीजै
वर निरधार ४ ॥ कविरुवाच ॥ पटपदछन्द ॥ पहिले भो संग्राम, अमर
अमुरन अतिभारी । सुरसहायता काज, गयउ नृपसंयुत नारी ॥
कटी चक्रकी कील, सुरत तिहिं नरपति नाही । तवै अंगुरिया आप,
दई केकयि तामाहीं ॥ गहि विजयलखी तिय अंगुली, ह्वै प्रसन्न
द्वैबरदिये । ते थाप रखे नरनाथ महँ, जे चितचाहत अबलिये ५ ॥
दोहाछन्द ॥ इकवर भरतहि नृपतिलक, द्वितिय रामवनवास । यह
उर आशय आनिकै, गई पुहुमिपति पास ६ कहनलगी केकयसुता,
सुनहु नाथ ममबात । जबते आगम सुतबधू, तबते अतिउतपात ७ ॥
पटपदछन्द ॥ बधू अमङ्गलरूप, भूपइहि जानहु जीमें । होत अमित
उत्पात, अहर्निश अवधपुरीमें ॥ शान्तिहेत सह सीय, रामबसिहँ
सुगहनवन भरतराज अभिपेक, कीजिये जो म नतमन दीजिये

थाप बरदान दुहुँ, जगत महायशलीजिये । अति आपहोय
 निरिचन्त अब, सुखीहोय इतरीजिये = सुनत बचन केकयी, म-
 हिप मूर्च्छाभइ भारी । पुनि कहुहोय सचेत, भीय निज यह निर्धारी ॥
 सुखनकार जो कहै, घटै मिथ्या महपातक । सुत विह्वरनहू यहै, घोर
 मम वपुको घातक ॥ मन मरण श्रेय मान्यो महिप, नाहिं भलो
 मिथ्यावचन । तियते तथास्तु कहिदियो तब, तिहि बिरची विधि
 विधि रचन ६ शीशजटा विलसन्त, बसन बलकल तन रामजु ।
 छत्र चमरदिग भरत, विमन मन नहिं विसरामजु ॥ तात चरणयुग
 नमत, भ्रातयुग मनबचकायक । अहह तात हा मात, भरत बद वि-
 ह्वलवायक ॥ सहिसकौं और संकष्ट सब, कहुहु न सुखते कहिसकौं ।
 गहिसकौं सिंह अहि अगनिखैं, रामविरह नहिं रहिसकौं १० ॥
 बन्दायणाछन्द ॥ कहत राम मोहिं पीर नाहिं बनवासहै । कोमलपद
 सियगमन तथा नहिं त्रास है ॥ भरतभ्रात उर अरुचि राजपर रहत
 है । परहां । यह अति दारुणदाह देहको दहत है ११ सुनि सुमन्त्र
 बच भूप सुसुवन पयान है । शापसमयभो प्राप आप जियजानहै ॥
 राम राम रघुनन्द रामरट जासहै । परहां । फेर न लियो नरेश दू-
 सगे श्वात है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ अति आतुर भरत है, बूभतहैं निज
 माय । कैकेयी कर्कश हृदय, दिय उत्तर समभाय १३ ॥ पद्यदछन्द ॥
 मात तात कितजात, भवन सुरपति के भ्राजत । किहिकारण सुत
 शोक, कस्य तव अग्रज छाजत ॥ कहा भयो है वाहि, कियो बन
 बीच गवन तिहिं । कानन मधि क्यों गये, हुई अवनिप आयसु
 जिहिं ॥ कहु काहि भूप आज्ञादई, नृप मम वाचाबद्ध हुवि । फल
 तोहिकहा तव राज्यपद, सुनि करि हाहा गिस्त्रोभुवि ॥ १४ ॥

इति श्रीक।

विरचिते श्री

रघुनृप

स्वर्गसंप्राप्तिसर्वानाम ह्यमोक्षात् ॥ ८ ॥

पदपदच्छन्द ॥ रघुवर गौहि गुरुगिरा, राह्यपद तृणइव तजिया ।
 वन प्रति जाउत भये, बसन वपु बलकल सजिया ॥ सुअभि मंग
 जिभि बाल वञ्चतिमि लक्ष्मण सोहत । धारि वनुपशर तूण युगल
 सब जनमन मोहत ॥ जानकी पेखि शुक्रसारिका सासु चरणलमि
 हुकुमगहि । प्रिय प्राणनाथ श्रीनाथके साथ चली निज चित्तचहि १
 रामगवन वनकिये भरतनूच्छी भइभारी । पाय चेतना कहुक गिरा
 सुनिजन धियधारी ॥ कौन्हों उत्तर कर्म निखिल निगमागम
 गायो । दशरथनृप निज जैनक पुरन्दरपुरी पठायो ॥ पुनि ज्ञांत
 शोक परिपूर्णहिय नन्दीग्राम निवासकिय । शिरजत्र सुकुट बल-
 कल बसन बसत सेदों रघुनन्दजिये २ ॥ दोहाछन्द ॥ तिते निवसि
 पालत प्रजा, उर अन्दर असइच्छ । वनते प्रभु पगुधारिकै, पैहें
 प्रीति प्रतिच्छ ३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ त्रिचतु चरण चलि सीय पीय
 सों यों कहै । कानन कितनी दूर श्रवण सुनिबो चहै ॥ देखि दशा
 मृदुअंगि नयन जलवार है । परहां । रामबिलोचन प्रथम अश्रु
 अवतारहै ४ ॥ पदपदच्छन्द ॥ कहत रामसुनु सिया, कुशोदरि प्रथम
 कहावत । पुनि कुच कचकेभाग, निरन्तर नम्रलखावत ॥ चारुचरण
 चंक्रमण, चैत्यकरि श्रम सरसावत । दौलांदोलन समय, स्वेद बहु
 बूंद बहावत ॥ अति सरितस्रोत निर्भर निकार, भूमिगर्त गिरिभूर
 है । मृग सिंह भूत भैरवसहित, वनचलि हौं किमि दूर है ५ ॥ चन्द्र-
 यणाछन्द ॥ पुनि पुहुमी प्रति पठत राम रमनीयहै । नवनलिनीदल
 अरुण चरण कमनीयहै ॥ पदपदपर प्रसखलित ललितेगति तीर्थ
 है । अरिहां । तव दुहिना वनगहन सिधावत सीयहै ६ ॥ दोहाछन्द ॥
 काश्यपि तव यह कन्यका, कोमलतन सुकुमार । तजियें तुम्हरी
 कठिनई, भुव कोमलताघार ७ इभिके हे कलु कौन्हों गमन, त्रिभु-

वनतिलक ततक्ष । पथिकवधू बूझनलगी, पथि पथि सीय प्रत्यक्ष-
 चन्द्रायणाब्द ॥ मुखि कुबलय दलनील शबरे कौन है । यह मुनि
 स्मितकरि तितै महत सुख मौनहै ॥ लखि लक्षण पहिचानिलेत
 ते बाम हैं । परहां । पीतम परमसुजान सकल गुणग्राम हैं ६ कमल-
 कोश नवनीत तुकोमल धरण है । दर्भतहित अति कठिन कूर यह
 धरण है ॥ शीशत्राण पदत्राण सुबलकल कीजिये । हरिहां । सीख
 देत पथवधू सुमुखि सुनिलीजिये १० ॥ दोहाब्द ॥ इमि सिखवत
 निजनयन भरि, नीर पथिकजन बाम ॥ क्रम क्रमकरि प्रापतभये,
 चित्रकूट अभिराम ॥ ११ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधियालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविष्णायितकविटीका-
 रामाङ्गजगोविन्दरामधिरचित्त श्रीवरविद्यासे श्रीरामचन्द्रचित्रकूटा-
 गमनोनामनवमोक्षान्तः ॥ ६ ॥

दोहाब्द ॥ तितत्राये सानुज भरत, सहित सैनरनिवास । उमंगि
 उमंगि अरुलाय उर, सहत न विछुरनत्रास १ मरन भलो विछुरन
 बुरो, सब जानत संसार । नहै दुःख इकवारहै, यह दुख बारम्बार २ ॥
 पदपदब्द ॥ जटाजूट शिरसोह, बसन बलकल बधु बिलसत । प्रण-
 मत भरत परेशि, प्रेम पुलकावलि उलसत ॥ तारसुरनकरि रुदित,
 सकल कल विकलभये है । बनविडुंग मृगदीन, नैन तितनीर छये
 है ॥ मनु आय बस्यो करुणाकटक, चित्रकूट कीनी फिकर । तिहि
 अश्रुओव निकसन्त यह, नाहिं भरत निर्भरनिकर ३ ॥ दोहाब्द ॥
 देत सुमित्रा शिक्षसुत, स्वच्छ लच्छ मनलोख ॥ शुचिसेवन अव-
 सर मिल्यो, उरअशेष अवरेख ४ मोहिं जान जनकात्मजा, जनक
 जनकजामात ॥ अवधसरिस अटवी लखहु, जाउ यथासुख तात ५
 शिरधरि आयसु भ्रातकिय, भरत अवध प्रतिगौन । सीय ल-
 क्ष्मण सहित विभु, बिहरत गिरिवर तौन ६ ॥

॥ वैदेही

वच बदत तुनहु मम पीयहै । शिलाएक हुइ प्रथम सुगौतम तीय
 है ॥ विन्ध्यअद्रि पर अमित उपलपद परसहै । परहां । करि है सुनि
 नियवन्त किनक पियतरस है ७ ॥ षट्पदबन्ध ॥ लौकःरोहण किशोः
 लियो सुख अभित जानकी । अरजकी करजोर, कन्त करुणानि
 धानकी ॥ गौतम सुनिकेशाए, आप अहल्या उद्धारी । यहकाहु
 सुनिसम, पोत पुत्री भइ प्यारी ॥ लीजिये पैग याको अवशि, चरण
 परश नितदीजिये । उद्धारहोय तबलौं विभो, मम आत्मवन की-
 जिये ८ ॥ दोहाबन्ध ॥ जलयानह थलयान में, जानन नाहिं अ-
 यान ॥ एक रही रनिवास में, दूजे शिशुना जान ६ देखि दैन्यता
 सीयकी, खुबर दीनदयाल ॥ गोदावरितट विपिन मधि, पटुकीनी
 पतिशाल १० ॥ लक्ष्मणउवाच ॥ षट्पदबन्ध ॥ जितै रघूतम कुटी, तितै
 वह पञ्चवरी है । पञ्चावरी परेख, पाथ सुख एक वरी है ॥ तरल पुरस्कृत
 तटी, भीति संरलेप बरी है । गोदा यत्र नदी, युतरङ्गित सरल तरी
 है ॥ कल्लोल लोल चञ्चलपुटी; दिव्या मोद कुटीरटी । संसागसिन्धु
 शकटी सहस्र, स्वल्प धर्म नरहुषकटी ११ ॥ जानक्युवाच ॥ मनोहरबन्ध ॥
 क्रीड़ाअवतार कल्पवटसे बिराजमान, प्रकटीकृत विश्ववट पिष्ट
 अण्डवट है । विश्व अस्तुजन्मवट भक्तन शकट धस्त, संकट लभी
 के क्रांति धोवत कपटहै ॥ लंपट अथसीय भिन्न शत्रु कुम्भीवट,
 खण्डन शकटबन्दौ राम दुरवटहै । शीश जटाजूट पट वलकल राज-
 मान, कोटि कोटि कौं बेग विपदा विकटहै १२ ॥ दोहाबन्ध ॥ वि-
 गत परिश्रम होय सिय, पिय अभिवन्दनकीन ॥ पेरिकुटी प्रसुदित
 भई, गईताप विधि तीन १३ ॥ षट्पदबन्ध ॥ बीस नयन मदनान्ध,
 सदन मारीच सिधायो । ह्वै विनीत युत प्रीति, विदित यह वचन
 सुनायो ॥ तुम मञ्जुल मृगरूप, धारि दरडकवन विचरहु । जित

मृगनैनी जनक, सुता सोहत तित प्रचरहु ॥ अति अद्भुत अद्भु
 बिलोकि मृग, सिय पिय प्रति याचन करहिं । अभिलाष अद्भुता
 सुरि वे, रामतोर सँग अनुसरहिं १४ हौं यह अन्तर पाय, सीय
 गहि जैहौं निजपुर । तब अधीनहै काज, करहु ममआनि विनय
 उर ॥ जो यह इच्छित मोर, सुनहु मारीच न करिहौ । तौ इतमें विन
 मोत, लुप्त भेरे कर मरिहौ ॥ है अवणते भरलव्य इत, रामहाथ
 भरतव्य तित । भरतव्य अवशि मारीच लखि, श्रीरघुवरकर होहिं
 हित १५ ॥ दोहाछन्द ॥ यह विचार चितचारु चुनि, मृगतनु गहि
 मारीच ॥ हरित दूब चुनि चुनि चरत, विचरत वन २ बीच १६ ॥
 पदपदछन्द ॥ दशरथनृप कुञ्जदीप, पर्णशाला मधि सोहत । सह-
 सौमित्रि सीय, महासुनिजनमन मोहत ॥ स्वच्छ सलिल पटु पान,
 करत सुन्दर सरितासर । ललित कन्दफल मूल, गहतवीते बहु
 वासर ॥ अब ये ते पै आयो उतै, मृगवसु बनिमारीच है । पठयो
 चुनीच दशकरठको, विचरत कुटी नगीचहै १७ सुवरण सकलश-
 रीर, हरित मणिमय शृङ्गद्वय । बिहुममय खुरचार, रदच्छद माणिक
 मणिमय ॥ नील तारका नयन, पटुल पेसून अति चञ्चल । सर्व
 रत्नमय रम्य, रूप सिय लरुयो दृगञ्चल ॥ मृग महामनोहर मञ्जु
 लखि, मैथिलि मन प्रमुदित भई । उर साभिलाष अति होयकै,
 पिय विनती करती भई १८ निशाचार मारीच, सांग सायाकुरङ्ग
 बह । निकट निधन जिहिं कै, रस चारत धावत छिनमह ॥ गहन
 गहन मधि फिरत, ताहि चह गृहन जानकी । कोटिकाम अभि-
 राम, रामप्रति गिरा शानकी ॥ शरनिशित धनुष धारण किये,
 दृगपाछे प्रभु अनुसरे । बहुबेर भई जियजानिकै, तदनु लक्ष्मण
 तंचरे १९ ॥ सोरठाछन्द ॥ सियसंरक्षण हैत, लक्ष्मण धनुरेखा

रची । हियहुलसत विभु हेत, तदनन्तर तित संचरे ॥ २० ॥

इति श्रीविप्लोदपक्षनाथिपालरावतजीश्रीदुलहसिहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे मणिमयमृगमारीच-
गमनोनामदशमोत्तमः ॥ २० ॥

श्रीहनुमन्नाटकेतृतीयोऽङ्कः ॥ षट्पदच्छन्द ॥ आंदोलत शर एक, अपर

कर धनुष धुनावत । पुहुपलता लखि ललित, जटाधन्धी सरसावत ॥
कोटिराम अभिराम, राम शुभ उपमालायक । विपिन वीथिकावीच,
श्यामसुन्दर सुखदायक ॥ अति अद्भुतगति मृगरूप, वह इत उत
तित चितवत फिरत । मायाधिराज खुराजमणि, इकक्षण नहिं कित
थित थिरत १ कबहुँक धरपद धरत, कबहुँ रतना तृणचाटत । कबहुँ
होत अस्पर्श, कबहुँ गुल्मन उदघाटत ॥ कबहुँक किसलय सँधि,
कबहुँ तनु त्रसित तापते । देखत दिशि दिशि कबहुँ, करत कण्डूति
आपते ॥ इमि कबहुँक धावत वेगते, कबहुँक धिरता गहत है । वह
मायामृग मारीच इमि, अद्भुतगति चितचहत है २ रामकहतभौ
लक्ष, आप अवलोकहु आछे । श्रीवमङ्ग अभिराम, मुहुसुहु हेरत
पाछे ॥ धावनते धियव्यान, चपलचित चितवत चमकत । पर तनु
बीच प्रविष्ट, पूर्ववपु धारत धमकत ॥ मनमानि मोर शरपतन डर,
प्रासदर्भ मुख ते गिरत । कृत बहुतर बियति प्रचार है, किंचित पु-
हमी पै फिरत ३ ॥ चन्द्रायणाच्छन्द ॥ मृगवक्षःस्थल लक्ष कियो प्रभु आप
है । दिव्य बाण सन्धान ठान दृढ़चाप है । परमप्रचण्ड प्रहारकखो
जब इहिं इतै । परहां । होय तपस्वी गयो दशानन तब तितै ४
चुनि मृगया मारीच गये युगभ्रात है । इत आयो दशकन्ध तपस्वी
गात है ॥ मयसंयुत जिमि मृगी तथा सियनैन है । परहां । ते लखि
हौ यह ठानि कहत मुख वैन है ५ धर्मिणि भिक्षा देउ अहो इत
आडकै लक्षण लक्षण लंघिदेन मियज यकै । धूरत धुव धिय धारि

धी धरणीसुता । परहां । परम पतिव्रततीय तोमततिनितनुता ६ जब
 गहि चलयो जरूर जानिजिय जानकी । तब रघुनन्दन पीउगिरा
 गुणगान की ॥ अहह राम हा लक्ष दुष्टलेजात है । परहां । सिंहभाग
 शश गहत यहै का बात है ७ ॥ पदमददन्द ॥ अति आतुर सियबोल,
 सपदि सुनि युगल श्रवणते । जस्ट जटायू गृद्ध, क्रुद्धकह बीस
 श्रवणते ॥ रे तस्कर परदाग, अरे अतिदुत क्यों जावत । तिष्ठ तिष्ठ
 मतिमन्द, तोर आसक हों आवत ॥ तज सीय परमपतिदेवता, नातर
 जैहौ शमनपुर । मम चण्ड तुण्ड करि खण्ड तब, गिद्धपियेगे रुधिर
 उर = जन्म ब्रह्मकुल बीच, कण्ड कृन्तन करि करिकै । कियो सम-
 र्वन शम्भु, शीश आगे धरि धरिकै । शक्रहु पै है शक्ति, चण्ड उद-
 रडन दरडन । कन्दुकइव कैलास, धारि कीन्हें करयण्डन ॥ है परम
 पराक्रम पुञ्जयुत, यहै कर्म अनुचित कात । हरियर्मपति रघुवीर की,
 तनकनमन लजाधरत ६ रावण सुनि वह बचन, धीयलागो निर-
 धारन । यहै कियो भैनाक, करत मममार्ग निवारन ॥ शक्र वज्रते
 डरत, काहि मम सनमुख आवत । नाहि गरुड़ निजनाथ, सहित
 मोहिं न विसरावत ॥ अब जानि लियोशठ जस्ट यह, गृद्धजटायू
 नाम है । इत आवत निजबधकाज जड़, जैहै दुत यमवाम है १०
 पुत्रिसीय जनि डारहु, दुष्टजैहै नहिं आगे । रेरे निशिचर नीच,
 काहि मम भयकरि भागें ॥ गहिरघुकुलमण्डिदार, कितै जैहै रे तस-
 कर । करिकै चञ्चु प्रवेश, तोरिहौ धमनी धसकर ॥ दुत दशहुदिशा
 दिग देवदश, करौ सद्य संतुप्त सब । दशमत्य काटि दशमत्य तब,
 जान नृपदशरत्य अब ११ करत अज्ञ विप्रे, दलत धुज चक्रचूर्ण
 कृत । मर्दत युगहय हनत, रक्षपति किय व्रण आवत ॥ गर्जत
 तर्जत संधि-तिरस्कृत करत त हि अति मग रोकत क्षणमध्य

क्षण कृत गिद्धनपति । इति षण्ण न करतगस्य निनि, क्षण
 पुनि प्रचलतनमतह ऊर्ध्वगत, अति अह्वन
 कौन्हों समर १२ गृद्धराज जव मुद्ध, निगखि सह कुद्ध निशाचर ।
 पुनि चपेट शिलसदृश, गहन पीस्यो पक्षीचर ॥ कलुक प्राण अद-
 शिष्ट, पत्रि परिषो उरवीचर । राम राम श्रीगम, होत पुनि गिरि
 गुर्वीचर ॥ वितचहत चारु रघुचर दृश, तिहिते तजत न प्रानहै ।
 ध्रुव ध्यान धरत विभु चरणयुत, नहिं अभिलाषा आन है १३ जिय
 किय शोच जटायु, कलु न सोते वनिआई । मुश गयो मम जनम,
 प्रथिप प्रीती न निभाई ॥ नहिं रक्त वैदेहि, बीसहुज भुजा न
 तोड़ी । एकहु सुडयो न मस्थ, सावती पांचहु जोड़ी ॥ निरख्यो
 न नयन भरि राममुख, नाहीं कलु कौन्हों सुकृत । हों भाव्यरहित
 का करि सकौ, को मन गिनिसकिहै कुहन १४ ॥ दोहाउन्द ॥ इमि
 सूचित करि गृद्धको, कियो गौन लङ्केरा । विविध भांति बिलपत
 सिया, व्याकुल हृदय विगेश ॥ १५ ॥

इति श्रीविपल्लोदपत्तनाधिपाररायनजीश्रीकूलहनिहर्जाविद्यापितरुविटीका-
 रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरत्रिलासे जटाधुसूच्छविर्णनं
 नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

षड्पदउन्द ॥ अहह राम हा रमण, नाथ हा रघुपति सुन्दर । हा
 जगवीर सुजान, प्रचुर पुहमीश पुरन्दर ॥ हा दशार्थ नृप नन्द,
 सविदानन्द बृन्दनिधि । हा प्रिय पीतम परम, रम्य विरीत भयो
 विधि ॥ हा कृपासिन्धु संकटहरण, दीनबन्धु अशरण शरण । बर
 विदित तिमल वारिज वरण, चरण चारु मङ्गलकरण १ ॥ दोहाउन्द ॥
 क्रन्दत निमिनृपनन्दिनी, जगत बन्दनी सीय । कुरी इव कूकन
 करत, धरत न धीरज धीय २ अति अबिलम्बित गगन मग, लिये
 जात लङ्केश लखि बानर गे ३ शिखरपर, निज अभगण शशेश ३

सैरध्वजी उतारि हुत, अलंकार निजअङ्ग । डारिदिये गिरि शिखर
 पर, उचरत गिरा अभङ्ग ४ मारुति प्रति इमि उचरत, ये आभूषण
 लेउ । राम पीउ देवर लण्ण, तिन्है तात तुम देउ ५ ॥ कविरुवाच ॥
 मायामृग मारीचहो, तिहिं मनाकमधि मारि । पुनरागमनकरन्त
 तव, कलुक कुचिह्न निहारि ६ दाहिनिदिशि हुमडित्थ पर, करटर-
 टत रवकूर । प्राणप्रयाण समान कहु, है संकष्ट जर ७ लषणभ्रात
 अनुजात युद्ध, लखि अपलपनकर । करत अमित अनुमान मन,
 हरणहार सुदमूर ८ क्षण क्षण क्षण मधि बिश्रमत, धरत धीय नहिं
 धीर । पर्णशालमधि भ्रातपुत, पहुँचे श्रीरघुवीर ९ सिय न लखत
 विलखत हिया, किया कोखत्रय शोध । सूर्यकोण तिन तजिदिया,
 किया हृदय अत्रोध १० शोकभीति धूजत हृदय, सदय सदा रघुवीर ।
 कोण चतुर्थहुजौन सिय, ताकस धरिहौं धीर ११ ॥ अत्र श्रीहनुमन्ना-
 टके चतुर्थोऽङ्कः ॥ पदपदच्छन्दः ॥ महाघोरतर समय, प्राण उत्क्रमण अ-
 धिक है । सिय बियोग अधिगम्य, असवतनु तजत न धिकहै ॥
 पर्णशाल सब अन्त, राल आलोकन कीन्हो । कतहुँ न पतिव्रत
 सहित, सीय अवलोकन लीन्हो ॥ हा हृदय विदीरण होतहै, इहिं
 अध्या अशु कइत किन । मम प्राणनते प्यारी प्रिया, तिहिबिन नहिं
 रहिसकत छिन १२ ॥ दोहाछन्दः ॥ एतेपै अवलोकि उत, उत्तरीय
 शुचि सीय । सुधि रमणी रमणीयमन, करि करि प्रिय कमनीय १३
 पुनि पुनि पट जोवनलगे, रोवनलगे अधीर । नयननीर धोवन
 लगे, लगे निचोवन चीर १४ ॥ पदपदच्छन्दः ॥ शूतसमय उद्योत, होत
 इहिंको पण कीन्हो । प्रणय केलिमधि कएठ, पाशइहिं करि करि
 लीन्हो ॥ वरव्यञ्जन सुरतान्त, समय श्रमहर शुभ सरसत । शय्या
 मरम निर्गन्ध, समय याहीदृग दरशात इत विधि वशते प्राप्तभयो

उत्तरीय स्मनीय अति । कमनीय कलेवर सीयके, वरयामानि सुहृ
सुहृगहति १५ ॥ चन्द्रायणच्छन् ॥ नहिं अन्दर पद चिह्नन वाहरपारि-
ये । पर्णशाल यह मोर कि अन्य निहाभिये ॥ में यह वहहों राम कि
अथवा औरहै । परहां । सिय दिन जिय नहिं सकत जु अववाकि-
शोरहै १६ ॥ पद्मदब्द ॥ केहरि हरिले गये, कशीस्मित हिमरुचि
लीन्हो । हृगहरिगये कुरङ्ग, कान्तिबुनि चम्पक चीन्हो ॥ कलख
कोकिल गह्यो, गमन युगभाग कियो है । अर्द्ध गह्यो मातङ्ग, अर्द्ध
हरि हंस लियो है ॥ कांतारबीच परु हनि यथा, सब विभागकरि
लेतहै । कान्ता तथैव समभैथिली, लई हाय दुख देतहै ॥ १७ ॥

इति श्रीवरदिलालसेरामविलापरत्नोनामद्वादशोऽङ्कः ॥ १२ ॥

दोहाच्छन् ॥ युक्त यही केकयलुता, सुहिं पडयो बनबीच । यह मम
मति कित कनकमृग, अवणन नयन नगीच १ ॥ पद्मदब्द ॥ अत्रा-
लिङ्गित ललित, कमल कोरकचपवारी । पीतांबर अति मधुर, सुधा-
कर समसुखवारी ॥ कलक्रीड़ाविरभाव, मञ्जु भकरन्द विमर्दित ।
शुचि यह सुमनसमूह, देवदयिता विन दर्दित ॥ कितगई बचन
बदरसमयी, गजगमनी मृगलोचनी । हा सिये प्रिये मम बल्लभे,
संतत शोचविमोचनी २ गाहि गाहि कान्तर, बनांतर विपुल वि-
लोके । बल्लीदर्पक भल्लि, सहस्र सब चप अवलोके ॥ स्मारस्मार
गइहूर, प्रिया बहुवारवारहै । गिरिवर ऊपर अटत, विलोचन वारि-
घार है ॥ हा सिये प्रिये कितमें गई, कछुहु न सुखते कहिगई ।
ममसर्वसुख संग लेगई, अति दारुणदुख देगई ३ भूरज रञ्जित
सर्व, बपुष विधुबिलसत कैसे । दह्यमान विरहागि, धरालिङ्गितक्रिय
जैसे ॥ मन्यु विदारित चित्त, दुचित है उचरत वानी । हा सीते हा
जनक, नन्दिनी सिय सुखद नी लखनेरे आनन चन्द्रमा, मेरे

नयन चकोर है । पुनि मेरो हृदय पपीहरा, स्वाति सलिलवपु तोर
 है ४ इहि विधि बिलपत विविध, पर्णशाला बहूँओरन । फिरत
 धरत ध्रुवधीर, वीर श्रीअवधकिशोरन ॥ हा जानकि कलकमल,
 नयनि सीते सुखदेनी । मम ममवारिज विपिन, राजहंसिनि अहि
 बेनी ॥ बहु विरह वह्निअति दग्ध उर, दीनभयों दृग जलभरौं ।
 किहिठौर जाय कासोंकहौं, किहिदिशि अवलोकन करौं ५ गिरि
 शिखर, त्यक्त वृक्ष, लतावरबायु न बीजित । कौनगयो गहि सीय,
 लखी काहू कहू तुम इत ॥ चारुवपी विम्बोष्ठी, विपुल जघनारसना
 रटि । सीता नीता केन, बद्धनागेन्द्र काचिकटि ॥ तेतरु बूझत तुम
 कौनहौं, आपकहतहौं रामहौं । नृपअवध ईश दशरथतनय, शोक
 अनलधिय धामहौं ६ हे गोदावरि पुण्य, वारि पुलिनेते देखी । कम-
 ललैन मृगनैनि, इतै आवत न विशेषी ॥ बरविनोद कञ्जुकरन, वि-
 मल बारीविच बिलसी । ऐसे बूझत फिरत, रई मृगति हिय खिलसी ॥
 इमि प्रतिपादप प्रतिनम पठत, प्रत्यापग प्रत्यग रटत । पुनि प्रति
 बरहिण प्रत्येण प्रति, जानकियाचततित अरुत ७ ॥ दोहाछन्द ॥ पुनि
 लक्ष्मण प्रति प्रायुहै, बिल्लव बचन बदनत ॥ विपुल विरह उन्माद
 बशा, वावरसम बिलसन्त ८ ॥ पदपदछन्द ॥ कोहोतुम कहू कहा, यह
 हे नाथ नाथतर । दासलक्ष्मण नाम, आप में कौनआर्यवर ॥ आर्य
 कौन श्रीराम, विजनवन कहाकरतइत । देखत देवी दिव्य, कौन
 देवी सियसंभित ॥ सियनाम श्रवणसुनि विकलहै, विविध भांति
 बिलपन लगे । हा जनकराजतनये प्रिये, विरहपयोनिधि मधि
 पगे ९ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि बन बन हूँदत फिरत, सह सौमित्री राम ॥
 बिलखत बिलपत चकितचित, नहिं जिततित विश्राम १० येते
 पै निरखत भये, गृद्धजटायु अचेत अरु रावणरथ भग्न लसि,

उत्तरत रामसचेत ११ दशम्य नृपको मित्रवर, शत्रुनिपूदनहार ॥
 ताप्रति प्रभुउत्तरनलगे, मूर्ध्नि नयननिहारि १२ ब्रूवतप्रभु पक्षीन्द्र
 प्रति, कशी वोर वनवात ॥ कौन कुटिल वृत्तान्त सब, मोहि सुना-
 वहु तात १३ तत्र विलोकि विभुवदनवर, वदत जटायुवैन ॥ वरण
 अब ऊदन सो, सुनिये नीरजनैन १४ निशिदिन शशि रवि अर्द्ध
 सब, रावण निज चितचीन ॥ सामलपक्ष सिताष्टमी, वैदेही हरि
 लीन १५ ॥ किरौट्ठन्द ॥ देवनको दिन अर्धलखो यह लेख किये
 चितचेत वितावत । पितृनकी निशि अर्द्ध कहैं जिहिते अधपक्ष
 प्रतप्त पिखावत ॥ आठकला युत अर्द्धशशी पुनि मध्यदिने रवि
 अर्द्ध लखावत । निर्मलपक्ष भये भृगुवासर अष्टमिद्योस हरी सिय
 गावत १६ ॥ दोहाब्द ॥ चैतशुक्ल तिथिअष्टमी, भृगुवासर वरतन्त ॥
 मध्यदिवसमधि मैथिली, रावणहरी अमन्त १७ ॥ पद्मरब्द ॥ यह
 सुनि बोले राम, भग्न किमिकियो महारथ । बज्रांकुर इव क्रू, तुराड
 धनुखड़े गिरेपथ ॥ हे सीरध्वजराज, पुत्रि तू धन्य लखावत । पञ्चा-
 नन पक्षीन्द्र, दशानन कुञ्जरयावत ॥ अतिभयो भूरि संग्राम इन,
 सो तैं निरख्यो नयनभरि । संचार दशानन मत्थपर, भोजदायु सम-
 रत्थकरि १८ पुनि जटायुप्रति कहत, रामभो तात सुनहु मम ।
 तुम्हरे तेज प्रताप, स्वर्गपद पावतहौ तुम ॥ भले सिधावहु स्वस्ति,
 सहित पै एक कहतहौ । कान्ताहरण वृत्तान्त, तातदिग न कहू
 चहतहौ ॥ है रामनाम जो मोरतौ, कछु थोड़ेसे दिननमें । तित
 रावण समुत सबंधुजन, ऐहैं कहिहैं छिननमें ॥ १६ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवचितासेजटायुस्वर्ग
 संप्रतिवर्षेननामत्रयोदशोक्तासः ॥ १३ ॥

तदनन्तर श्री राम, विपिन विचरत मृग देखे इन

दुष्टन के वपु, प्रपञ्च मारीच विशेषे ॥ प्राणबलभारलेप, विपुल
 विरलेप कियो है । सुगी चक्रवध ठानि, चहतसुग विरह दियो है ।
 अतिमग अयोव नालीक सब, दूरघात नित करतहै । पै प्रिया स-
 दृश सोहत नयन, इहिकारण जिय डरतहै १ ॥ चन्द्रायणाञ्जन्द ॥ एते
 पै गिरि अस्त, गये रवि आपहै । उदय भयो शशितरय, सदृशवपु
 थापहै ॥ देनलगे संताप, कमलदल नैन है । अरिहां । उचरत है
 श्रीरामलक्ष्म प्रतिबैनहै २ ॥ पदपदञ्जन्द ॥ चलतहतल सौमित्रि, तरणि
 ते तनुतापत अस । लक्ष कहतभो नाथ, निशामधि मिहिरकथा
 कस ॥ चन्द्रोदयहै यहै, सुनत प्रभु पुनि बचबोले । वञ्चलभ्रमन
 ललित, कथं वक्षःस्थल तोले ॥ सौमित्रि बदत सुनिये विभो, लखि
 कुरङ्ग लक्षण लसत । हाहा कुङ्गलोचनि सिये, चन्द्राननि तव विन
 असत ३ ॥ चन्द्रायणाञ्जन्द ॥ मन्दरगिरि करि मथितभयो नहिं पा-
 तकी । जाखो नहिं तम तुञ्छ तोहिं धनवातकी ॥ हौं तेरे शत
 टूक करौं इकछनकमें । परहां । जो होतौ नहिं बदन बिदेही बनक
 में ४ ॥ पदपदञ्जन्द ॥ दाव दहनतरु शिखर, निवारहु निर्भर जल-
 कर । नाहिं दसानलनाथ, उदयगिरि समुदय हिमकर ॥ वञ्च
 सुधाकर स्वञ्च, धूमधारन किमि कीन्हो । नाथ नाहिं यह धूम,
 छौनि छाया चित चीन्हो ॥ हा धरणिसुते सीते प्रिये, कान्ते कुत्र
 गता असी । तव बिरहानल संदग्ध हिय, तदुपरि जारत यह
 शशी ५ ॥ दोहाञ्जन्द ॥ रामचन्द्रकरुणासहित, बदत बचन अति
 रम्य । प्राणप्रिया पदुप्रेयसी, परमप्रेम अधिगम्य ६ ॥ चन्द्रायणाञ्जन्द ॥
 अङ्क कहत कविकेपि, कहत केउपङ्कहै । कित नेकहत कुरङ्ग, विव
 निरशङ्क है ॥ प्रवदत बिहुष कितेक, छाया यह भूम है । परहां ।
 हौं जानत जिय बिरह, दहन धुवधूम है ७ ॥ पदपदञ्जन्द ॥ रेरे

निर्दर ६निवार, कन्दर्प मनोभव पङ्केरुह प्रोत्फुल्ल-वाणसंबुधु
संबुधुतव ॥ तजहु धनुषपरि धीय, कहा पुरुषारसमोप्रति । काता
संग वियोग, जात हुतमुक ज्वालाअति ॥ वपुहोयारह्यो संदग्ध
अति, ताहि प्रहारतहै कहा । सब शूरपुरुष पावत नहीं, मृतक
मारिकै यशमहा ८ आहुंखाअ निमग्न, तोरशर पंचपंचशर । मह-
नाग्नी निर्दग्ध, यहै वपुहोहु निरन्तर ॥ निपट निरायुध काम, जीति
सकिहै न अपरजन । सुखी हूजियो सर्व, दुखी इकहौहि रहहुमन ॥
अति उत्तमते उत्तम सब, यहै बात अवलोकिये । इत एक आपसं-
कष्टसहि, दुख त्रिलोकको रोकिये ९ ॥ दोहाछन्द ॥ तरु अशोक वि-
कसित विमल, तिहितल गहि विश्राम । उपरहि कछु किञ्चितसमय,
बदत बचन श्रीराम १० ॥ पदपद्यच्छन्द ॥ तू नवपल्लव रक्त, रक्तमें प्रिया
गुननकर । आवत अनिश अभङ्ग, शिलीमुखगन तो ऊपर ॥ तथा
कामधनु मुक्त, शिलीमुख मोप्रतिआवत । कान्ता पदतल हती,
हीय उभयन हरसावत ॥ समभाव मोर तव सकल है, भिन्नभाव इक
यह बसत । लख मुहिं सशोक विधिने कियो, तव अशोक अभिधा
लसत ११ ॥ लोट्टाछन्द ॥ हियपर धर्यो न हार, सिय वियोग भय
मानि जिय ॥ तरुवर सरित पहार, अब अनन्त अन्तर बसत १२ ॥
पदपद्यच्छन्द ॥ चन्द्रचण्डकर सदृश, पवनध्रुवु गति पवि ओपम ।
मलयजलैप कुलिंग, सुमन ममलूचि अग्रसम ॥ रात्रि कल्पशत
तुल्य, प्राण भासन्तभाइव । यहै वैदेही विरह, समय संहार काल-
मिव ॥ हाहन्त कितक संकटसहौं, कौनसुनै कासों कहौं । हिय
हटकत हटकत फटत है, अटत रटत जकि धकिरहौं १३ वपुभृश
कृशता पाय, मोस बिरलाय गयो है । नैननिरन्तर नीर, चलै वारी
नरयो है । दीर्घ दीर्घ निस्सांसलिये, सब श्वसन अर्थो है हरण

होतही तीय, तेज तरतोमघञ्यो है ॥ इमि चारतत्त्र भोगवन तनु,
रह्यो शून्य अवशिष्ट है । यह कहा राम जीवन तजउ, कुलिश
कठिन अतिक्लिष्ट है ॥ १४ ॥

इति श्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रद्विरहदशावर्णननामचतुर्दशोत्तमः ॥ १४ ॥

पद्मवद्वन्द ॥ लक्षसहित श्रीराम, महावन विच विचरत उत । गौर

गवय मातंग, शरभशार्दूल कोलरुत ॥ कोलाहल आहूत, भूत
बैतालपाल है । समुत्ताल कङ्काल, काल बिकराल जाल है ॥ चय-
चक्र बालनालकृत, तुमुल घोर विकारमिल । वहलान्धकार करि-
कलितगुह, अन्तराल बिलसन्तकिल १ अबिरल परिमलबहल,
सरल चञ्चल बहु बिगलित । बृन्दबिमल मकरन्द, विन्दुकीलाल
जालजित ॥ आलवाल बरवृक्ष, सुपिच्छिल लसत ललिततित ।
प्रमत्तलि गणमाल, लुलित मारुत आन्दोलित ॥ बाचाल विपुल
फुल्लित लसत, बकुल मुकुल कुलजाल है । धूसरितधूलि कोकिल
बधू, कूकमाधुरी माल है २ ॥ चन्द्रायणावन्द ॥ तरल शिलोच्चय शिखर
शिखी समुदाय है । नर्तनलीला सानुकूल मुदपाय है ॥ प्रचलत
चक्रचकोर पक्षिगण लभ है । परहां । गुञ्जत मञ्जुलशब्द विपुल
प्रतिवृक्ष है ३ ॥ पद्मवद्वन्द ॥ अम्बर चुम्बनललित, लक्ष उर अन्दर
दरसत । आलम्बनफल विपुल, भार आलम्बित सरसत ॥ सकल
जन्तु संतोष, पोष निर्दोष विभूषित । सुधास्पर्द्धि बर्द्धिष्णु, सरस
रत्नमय निरदूषित ॥ हिंताल तमाल रसालतरु, ताल प्रियाल वि-
शालफल । मालूरशाल मलशल्लकी, पुनि शिरीष कृतमालभल ४
अशन शमी शिशपा, शाक चम्पक अशोकचुन । कर्णिकार
सुरदारु, अवर बहुसार श्रवणसुन ॥ कोबिदार जम्बू कदम्ब, अरु
निम्ब उदुम्बर । सो भोजनरु करञ्ज, बकुल निचुलक खजूरवर ॥

पुनि बीजपूर जम्बीर, भाण्डार वहुरि वानीरहै । अरु कर्मरङ्गनारङ्ग-
 चन्दन कदली काश्मीरहै ५ धात्री पाटल कुटज, चील कङ्कोल
 विभीतक । बटअङ्कोल मधुक, हरीतकि अरु भल्लातक ॥ आम्ना-
 तक केतक, जयन्ति वैकङ्कन कङ्कत । अरु अश्वत्थ कपित्थ, ति-
 त्तिणी जपा अलङ्कृत ॥ बन्धूक नागकेसर प्रसुप्त, आरण्यानि
 दुस्तर अटत । वाराहकन्ध आरुद्ध उत, वाम करत उत्कट रटत ६
 पुनि दक्षिणादिशि पेलि, दक्षिणाचलपर प्रचलित । मलय मा-
 लती तगर, जाति दमनक लवङ्गतित ॥ मरुवक अरु कंकोल,
 कमल कुलसुकुल कुमुदिनी । शतपत्रादिक ललित, कलित कहार
 प्रमुदिनी ॥ तिनमञ्जु परमपरिमल मिलित, चुञ्चित चारु अपार
 है । कावेरी ताम्रपर्णी सरित, तुङ्गभद्र जलधारहै ७ नीरधार गम्भीर,
 सान्द्र परिपीत तमङ्गन । मैत्रावरुण सुतीय, ललित लङ्का शशाङ्क
 भन ॥ रम्यरुद्र पादाद्रि, सरल सिंहल सालकजन । श्रीगोपालक
 पारङ्ग्य, अचल विद्रुम मण्डलवन ॥ पुन्नाटककेरल चोलचुन, कु-
 न्तल कर्नाटक कलित । करहाट आंभ्रकल कामिनी, कृतसनान
 जित अति ललित ८ पीनस्तन बरवदन, जघनवन भल भुज
 मूलन । तिष्ठित ध्रुव धर्मिल, भार अन्तर्गत फूलन ॥ मृगमद
 अगुरु कपूर, कलित कुंकुम श्रीखण्डन । रचित यक्ष कर्दम, विमर्द
 वर्द्धित वपुमण्डन ॥ वह विविध गन्ध परिमल बहुल, कुसुम मि-
 लित मारुतचरत । प्रोत्थित भुजंग प्रफुलित फणन, खंजरीट क्रीडा
 करत ९ स्वच्छ क्षीर नीहार, कलित काश्मीर फटिकसित । शुद्ध
 शंख कर्पूर, कुन्द अवदात अपरिमित ॥ महाभुजंगम परम, स्फीत
 फुत्कार प्रफुलित । फणामण्डिन मधि खंजरीट क्रीडन्त बिलोकित ॥
 हुव वाम नयन सकरुण सजल, इतरस विस्मय मदेमय ' उभचिह्न

होतही तीय, तेज तरतोमप्रज्यो है ॥ इमि चारतत्र्य भोगवन तनु,
रह्यो शून्य अवशिष्ट है । यह कहा राम जीवन तजउ, कुलिश
कठिन अतिक्लिष्ट है ॥ १४ ॥

श्लि श्रीवटविलासेश्रीरामचन्द्रविरहदशावर्णननामचतुर्वेदशोलासः ॥ १४ ॥

पद्मदण्ड ॥ लक्षसहित श्रीराम, महावन विच विचरत उत । गौर
गवय मातंग, शरभशार्दूल कोलरुत ॥ कोलाहल आहूत, भूत
बैतालपाल है । समुत्ताल कङ्काल, काल विकराल जाल है ॥ चय-
चक्र बालनालकृत, तुमुल घोर विकारमिल । वहलान्धकार करि-
कलितगुह, अन्तराल बिलसन्तकिल १ अचिरल परिमलबइल,
सरल चञ्चल बहु विगलित । वृन्दविमल मकरन्द, बिन्दुकीलाल
जालजित ॥ आलवाल वरवृक्ष, सुपिच्छिल लसत ललिततित ।
प्रमत्तलि गणमाल, लुलित मारुत आन्दोलित ॥ बाचाल विपुल
फुल्लित लसत, बकुल मुकुल कुलजाल है । धूसरितधूलि कोकिल
बधू, कूकमाधुरी माल है २ ॥ चन्द्रायणाण्ड ॥ तरल शिलोच्चय शिखर
शिखी समुदाय हैं । नर्तनलीला सानुकूल मुदपाय हैं ॥ प्रचलत
चक्रचक्रोर पक्षिगण लक्ष हैं । परहां । गुञ्जत मञ्जुलशब्द विपुल
प्रतिवृक्ष हैं ३ ॥ पद्मदण्ड ॥ अम्बर चुम्बनललित, लक्ष उर अन्दर
दरसत । आलम्बनफल विपुल, भार आलम्बित सरसत ॥ सकल
जन्तु संतोष, पोष निर्दोष विभूषित । सुधास्पर्द्धि बर्द्धिष्णु, सरस
रसमय निरदूषित ॥ हिंताल तमाल रसालतरु, ताल प्रियाल वि-
शालफल । मालूरशाल मलशङ्खकी, पुनि शिरीष कृतमालभल ४
अशन शमी शिशपा, शाक चम्पक अशोकचुन । कर्णिकार
सुरदारु, अवर बहुसार श्रवणसुन ॥ कोविदार जम्बू कदम्ब, अरु
नेम्ब उदुम्बर सो भोजनरु करअ, बकुल निचलक खजूरवर ॥

पुनि बीजपूर जम्बीर, भाण्डार बहुरि वानीरहै । अरु कर्मरङ्गनारङ्ग,
चन्दन कदली कारमीरहै ५ धात्री पाटल कुट्टज, चील कङ्कोल
विभीतक । बटअङ्गोल मधुक, हरीतकि अरु भल्लातक ॥ आम्रा-
तक केतक, जयन्ति वैकङ्कत कङ्कत । अरु अश्वत्थ कपित्थ, ति-
त्तिणी जपा अलंकृत ॥ बन्धूक नागकेसर प्रसुख, अरण्यानि
हुस्तर अष्टत । बाराहकन्ध आरूढ उत, वाम करत उत्कट रत ६
पुनि दक्षिणदिशि पेलि, दक्षिणावलय पर प्रचलित । मलय मा-
लती तगर, जाति दमनक लवङ्गतित ॥ मरुवक अरु कंकोल,
कमल कुलमुकुल कुमुदिनी । शतपत्रादिक ललित, कलित कङ्कार
प्रमुदिनी ॥ तिनमञ्जु परमपरिमल मिलित, चुंबित चारु अपार
है । कावेरी ताप्रपर्णी सरित, तुङ्गभद्र जलधारहै ७ नीरवार गम्भीर,
सान्द्र परिपीत तरङ्गन । मैत्रावरुण सुतीय, ललित लङ्का शशाङ्क
भन ॥ रम्यरुद्र पादाद्रि, सरल सिंहल सालकजन । श्रीगोपालक
पाण्ड्य, अचल विट्टम मण्डलवन ॥ पुन्नाटककेरल चोलचुन, कु-
न्तल कर्नाटक कलित । कारहाट आंध्रकल कामिनी, कृतसनान
जित अति ललित ८ पीनस्तन बरवदन, जवनवन भल भुज
मूलन । तिष्ठित ध्रुव धर्मिल्ल, भार अन्तर्गत फूलन ॥ मृगमद
अगरु कपूर, कलित कुंकुम श्रीखण्डन । रचित यक्ष कर्दम, विमर्द
वर्द्धित बपुमण्डन ॥ वह विविध गन्ध परिमल बहुल, कुसुम मि-
लित मारुतचरत । प्रोत्थित भुजंग प्रफुलित फणन, खंजरीट क्रीडा
करत ९ स्वच्छ क्षीर नीहार, कलित कारमीर फटिकसित । शुद्ध
शंख कर्पूर, कुन्द अवदात अपरिमित ॥ महाभुजंगम परम, स्फीत
फुत्कार प्रफुल्लित । फणामणिन मधि खंजरीट क्रीडन्त विलोकित ॥
दुव वाम नयन सकरुण सजल, इतरम विम्मय मैदमय । उभचिह्न

अशुभ शुभ सूचना, भये संगमन प्रीतिभय १० संस्थितकोल
 कपोल, काकरव बावभाग हुव । कहत व्यसन अति दुधित, उ-
 यित संतत सब जनभुव ॥ बरततहै दिन रैन, कहा अब अग्र
 दिखावहि । पुनि दक्षिणदिशि, खंजरीट शुभलक्ष लखावहि ॥
 अखिरुद्ध भुजंगम फणनपर, क्रीड़त यहहै राज्यप्रद । मम एकसंग
 दोनोभये, हैं वह अति आचरजपद ११ ॥ लोखालन्द ॥ भरेनयन
 युग नीर, क्षण विश्रामकरि विन्तवन ॥ सकरुण श्रीरघुवीर, बूझन
 लगे भुजंगसों १२ ॥ पदपदलन्द ॥ तरुप्रलवइव लोल, जिह्व बन्धूक
 सुमनसम । तेरे नीरजनयन, भूरि आजन्त भुजंगम ॥ हों बूझत
 हों तोहिं, पवनभुक्त कहु करुणाकरि । कोमलांगि शरदेंदु, सुखी
 देखी कोउ सुन्दरि ॥ इमि सुनत बचन रघुवीरकर, रचनरम्य सुक-
 रणसने । बोल्यो विनीतहै बैन शुभ, भुजंगराजहियहित घने १३ ॥
 चन्द्रायणलन्द ॥ गई गई वपु चम्पवर्ण पीनस्तनी । कुंडुम चर्चित
 अङ्गि करुणरसमें सनी ॥ शीतलांगिका आश गङ्गइव आजिता ।
 हरिहां । तारागण मधि चन्द्रेख समराजिता १४ कहत राम इहिं
 व्यसन अधिकका औरहै । कहाहोयगो अग्र अभ्युदय मोरहै ॥
 मरण शरण बरमोहिं नाहिं चइ राज है । परहां । वह लक्ष्मण को
 होउ सुसुखद समाज है ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतर्जाश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीविरविलासेशुभाशुभशकुना
 ऽवलोकनोनामपञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

पदपदलन्द ॥ वाम तिरस्कृत कियो, कियो दाहिनो पुरस्कृत । धन्य
 सुवन्यशरन्य, अरन्यानी गाहनमृत ॥ किष्किन्धात्री रौद्र, रुद्र अव-
 तारमारुती । दीनी सकल सुनाय, ताहि निज उरसि आरती ॥
 लेगयो सीयहरि कोउ कित, तुम ताको देखी सुनी । कपि हृष्टहोय

संकष्ट हर, बदवानी चेतमिडुनी १ सुनिये कृपानिधान, कापिरामा
 अम्बर मग । हौंथित हौ तिहि समय, अहो इतमें याही नग ॥ पाप
 रजनिचर प्रबल, किये आकर्षण अतिहुत । जावतहो जिहि बेर, श्र-
 वणधुनि आई अद्भुत ॥ हाराम प्राणपति जेहिरिपु, मुखउचरत डारत
 भई । मणिभूषित भूषण भव्यते, अवलोकन करिये सई २ ॥ दोहाकवच ॥
 आज्ञनेय इमि कहि गिरा, भूषण भव्य समग्र । अविलम्बित उत
 आनिकै, रखे रामके अग्र ३ रामसजल चप सह करण, गदगदगिरा
 गँभीर । भूषण निरखे नयनभरि, बाढ़े पुलक शरीर ४ ये भूषण वै-
 देहिके, निश्चय मेरे जान । तुमहूँ लक्ष्मण निरखिये, करिलो जै पहिं-
 चान ५ ॥ लहनथउवाच ॥ नाथ न जानत और मैं, कुण्डल कङ्कन
 आदि । पहिंचानत नूपुरनको, अनिश अंग्रिअभिवादिद ॥ कवित्वाच
 षट्पदकवच ॥ सियआभूषण अखिल, राम निज हृदय लगाये । युगल
 नयन भरिनीर, वयन गदगदगिर गाये ॥ इतर आभरण धरत, हुती
 नहिं हार हीयपर । इतकहूँ अन्तर सहि न, सकत जानकीजीय
 पर ॥ फल पंक्ति भेदको प्रापभौ, यह कीन्हो निरधारहे । अब हारन
 की गिनती कहा, अगणित परे पहारहे ७ मुद्रा मुख मैथिली, लखे
 विन गमन चहतत्रित । परमहंस यह जीव, तदपि नहिं जायसकत
 कित ॥ वैदेही बहुविरह, बह्निज्वाला बिदग्धतनु । तेहिते भो पर
 बश्य, पंगु प्रचरत न वनतजनु ॥ पुनि पवनपुत्र प्रापत किये,
 आभूषण अवलोक उन । शुविगये प्राणन पायन किय, आज्ञनेय
 आलाप सुन ८ अनुनय सहहनुमान, विनयवर वचन उचारत ।
 पुहुमिपाल श्रीराम, हीय नहिं हूजै आरत ॥ त्यज निज दयिता
 शोक, एकलंकेश लोकसह । जीतनको समरथ, कबू संशय नहिं
 सामह ॥ यह गिरि सुग्रीव निवासथल, तितमें प्रभु पगुधारिये

रघुवंशनाथ नरनाथ उत, वानरनाथ निहारिये ६ ॥ कविस्वाच ॥
 तदनन्तर हनुमान, लक्ष्मण रामसहित तित । गवनकियो अवि-
 लम्ब, सभय सुग्रीव हुते जित ॥ तीनहुँको कपिनाथ, लखतभो उत
 बें कैसे । सूर्तिमन्त मनु अग्नि, अङ्गधरि आवत ऐसे ॥ है गार्हपत्य
 इक अनल अरु, दक्षिण दहन द्वितीयहै । अभिधान अमल बिल-
 सन्त, उहिँ आहवनीय तृतीयहै १० अनिलज आनन अकनि,
 राम कान्ताहृति वृत्तं । आनरेंद्र वरनन्त, प्रबल बाली कृतकृतं ॥ विद्य-
 मान पतिहोत, यहै अति अकृत कियो है । मारणकारण ताहि, राम-
 पन तुरत लियो है ॥ श्रीरघुबर कियो अधिज्य धनु, सुबहुल रोपा-
 नल प्रबल । कान्तापहरणकी ताप अति, हुती अनुभवित भांति
 भल ११ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ नमन ससंभ्रमकियो अवधके इन्द्रको ।
 आलिङ्गनकरि प्रचुर प्रेम सुकपीन्द्रको ॥ हुतभाविनि कन्दर्पकेलि
 सबिलासहै । परहां । विस्मृत पुनरभ्यास करत मनुतासहै १२ ॥
 वोहाछन्द ॥ कपिपति बूझत मारुती, दशरथनृप सुतचार । ताटक
 अन्तक कौन कहु, बोले पवनकुमार १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ राम भरत
 अरु लषण, शत्रुहन सुवन चारचुन । दशरथनृपके विदित, विश्व
 कपिराज श्रवणसुन ॥ दिनकरकुल सन्तान, बल्लिवर गुच्छ सुमधु-
 कर । राजपुत्र सुबिराज, मान तिन मध्य धीयधर ॥ ताटका काल
 रात्री हुती, रामचन्द्र प्रत्युष यह । जिहिँ चरित कथा कल कन्दली,
 मूलकन्दसम स्वादगह ॥ १४ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाभिपालरावतजीश्रीबृहहार्सिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
 कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीराम
 सुग्रीवसमागमोनामपोडशोह्लासः ॥ १६ ॥

कविस्वाच । षट्पदछन्द ॥ सुनत प्रतिज्ञा परम, राममुख वारिज
 विकसी । बालीपठये सप्त, ताल अवलीउन निकसी । दैत्य सात

तरु ताल, सात अन्तर्गत अतिदुत । प्रकृति कुटिल करि कृद्ध, युद्ध
कारण आये उत ॥ सौमित्रि किये ते सरल जिन, शेषपृष्ठ धिन
सूलक्रिय । निज चरणभार करिलक्ष्मण, दिव्यअस्त्र खुगाजलिय १
सोरठाछन्द ॥ सुनिये कृपानिधान, वदत लपण साशंकवच । इनपै
शरसन्धान, सावधान हैं कीजिये २ कीजै सात निपात, एकसाथ
इक विशिखकरि । करत प्रहारक वात, यामें है जो अन्यथा ३ जनि
शाङ्किये सुजान, रामकहत सावग्यहै । हरत असज्जन प्रान, सज्ज
भये सज्जन रहत ४ ॥ कविकवाच । षट्पदछन्द ॥ रामलियो कर बाण,
वानि मुखलगे उच्चारण । कियोहोय हृदभाव, कुशिकनन्दन पद
धारण ॥ अरु पुनि जो मैं होऊँ, तिरस्कृत विप्ररोप विन । अन्य अ-
ङ्गना मध्य, गयो मममन न एकछिन ॥ तौ सप्ततालको भेदिकै, प्र-
विशहृ शर पातालमहँ । इमि कहि करि धनुषहि सज्जकरि, कियो
बाणसन्धान तहँ ५ कदली बाल प्रकारद, भङ्गसम सत्वर कीन्हो ।
एक बाणमधि सप्त, ताल तरु बेधन चीन्हो ॥ सप्तसप्ति गज सप्त, सप्त
सुनि सप्त सरिपति । सप्तदीप अरु मातृ, सप्त भयभीतभये अति ॥
संख्यान साम्यता तालसम, हनि तिनको हमकोहने । जे सात सात
जितनेहुते, ते सब घबराने वने ६ छूँओ बाण कमान, ताल तरु सात
फोरिकै । धँस्यो धरातलले प्रमाण, तिहिं तुरत दौरिकै ॥ भङ्ग भुज-
ङ्गम भूरि, भीत अश्वर पुनि आयो । पुंष धुनाय धुनाय, भाव विधि
को दरशायो ॥ कीन्हों न पराक्रम प्रबल कह्यु, रूख्यो शेष अश्लेष
है । निश्लेष बसुन्धर दारिवो, यामें कहा विशेषहै ७ सुन्दतश्रवण
संग्राम, रामहत सप्तताल सब । निरपराध बंधकियो, तरुन अस
जियजान्यो जब ॥ कोपानल प्रज्वलित, हृदय निकस्यो वह वाली ।
गिरिवत्वर विवचल्यो, निरन्तर संगशाली ॥ फट्कारी पुच्छ अति

उच्छलत, कटकगत किलकिल करत । उच्छाह छकयो बहु बक्षथल,
 अतिअधीर धीर न धरत ॥ कविस्वाच ॥ ताराभई सहर्ष, मोद मनमें
 नहिं भावत । पुरुषोत्तम श्रीराम, परम कृपया पुनि पावत ॥ विर
 विरही सुग्रीव, बक्षथल लुठिहों तूरन । प्रियतम प्राणसुजान, काज
 सिधिहै सम्भूरन ॥ इति मन्यमान गिरिशिखरपर, आरोहन कीन्हों
 कलित । संग्राम राम अरु बालिको, लोयनभरि लखिबे ललित ६
 शैलशिखर संवरत, मनोरथ बितरत तारा । वारागत शोकाब्धि, बीर
 सुग्रीवसुदारा ॥ प्रभुनारा नाराच, प्रबल धाराधिपधारा । हाराबलि
 संत्यक्त, लस्त धम्मिल्लनभारा ॥ किलकिला शालि बालीमहा, कुटिल
 कुचाली कूरहै । प्रियसन्तापी पापी परम, यमपुर जलदि जरूरहै १०
 गिरीगरिम गम्भीर, महा महिमालखि बाली । कहत लक्षसन राम-
 वच्छ निरखहु बलशाली ॥ बहल कलकला करत, बानराली प्रति-
 पाली । शिव शिव तुमुलोत्काल, चलित अति कृतघृणिमाली ॥
 लांगूलवलि प्रोद्यत शिखर, कवलित कौशिक कुलिशकिय । दो-
 दर्दणशैल प्रहरण निपुण, किहिं करिकै योद्धव्यजिय ११ ॥ दोहा
 छन्द ॥ रामधीरता धारिधिय, नारायणनाराच । सज्ज कलित को-
 दण्डकरि, सुरचन बचन उवाच १२ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ पुरामूर्छ अभि-
 सिक्त सगुणवर विप्रहै । वेदमन्त्रकरि कियो कलित तब छिप्रहै ॥
 तिनके तेज प्रताप करहु उच्चिन्नहै । परहां । दारुण परतिय हारि
 प्राणवपु भिन्नहै १३ ॥ दोहाछन्द ॥ पौरन्दरि परदारको, हरण पराभव
 प्राप ॥ ब्रह्मतेज परिपूर्ण पटु, लसत रामशर आप १४ ॥ षट्पदछन्द ॥
 पायो बीर प्रमाण, बाणरघुपति वर बिलसत । पावक प्रलय समान,
 रोचि विजुरी जिमि उलसत ॥ हृदय भेद कृत बालि, तवै पौरन्दरि
 उचरत सबके शिरपर काल, यहै वासर निशि प्रचरत ॥ मम पिता

पुरन्दर तासु रिपु, रावण अनिहत इतरयो । यहशल्य हृदय शालत
प्रबल, हौं सशल्य परपद गयो ॥ १५ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालरावलजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितऋषि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीचरबिलासेवालि
हृदयमेवमोनामसतदशोत्तासः ॥ १७ ॥

पदपदछन्द । कविरुवाच ॥ हूँ सकरुण सविपाद, राम उन्नत लक्ष्मण
प्रति । सुन सौमित्रे यहै, काज कीन्हों अनुचित अति ॥ गिरिगह्वर
मधिविहित, योनि निजमानि मरुतसुख । अनपराध अनुभवत, ताहि
दीन्हों महानदुख ॥ किय महावीर बालीहनन, तासु प्रबल परिताप
है । हौं मन्दभाग्य हूँ कहा, अब सुहिं सियसुख प्रापहै १ शिशुनाय
पछताय, रामकह पौरन्दरप्रति । तू ऊरनरन तात, बात यह जग जा-
हिर अति ॥ मेघनाद शस्त्रोघ, प्रसर हरिदुर्यश दीन्हों । गौतममुनि
के शाप, नियन्त्रित भुजबल कीन्हों ॥ किय जनकजास रावनत्वया,
कक्षागर्त कुलीरहै । हूँ वै विशल्य तव शल्य हर, जाअत अङ्गद वीर
है २ ॥ दोहाछन्द ॥ मेरी पाय सहायता, अङ्गद हनिहैताहि । हूँ विशल्य
कीजै गवन, रावण रहिहै नाहि ३ ॥ बालिरुवाच ॥ कहाबालि सुप्रीव
जो, कारज करिहै तोरा ॥ सो हौं कानहिं करिसकत, निरपराधबधमोर ४
कविरुवाच । पदपदछन्द ॥ रामनयन भरिनीर, विमलवर बोलेबानी ।
सुनहु पुरन्दरनन्द, कहतहौं तोहिं बखानी ॥ निरपराधसुखअर्थ,
तोखधमयो मोरकर । हनहु अबतू मोहिं, शुद्धिहूँ ममसरवर ॥ भत
होहु जनकजा विरह अब, अबिरत उर इच्छत यही । सुनिबैन कमल-
दल नैनके, बाली तव बोल्यो सही ५ ॥ दोहाछन्द ॥ जबतौं हौं हनिहौं न
तुहिं, तबलौं शमनसकास । हूँ निवास तजिदीजिये, स्वर्गवास अ-
भिलास ६ इमि कहिकै श्रीराम प्रति, बाली छाँड़े प्रान । तिहि बचको
सचकरन बिभु, रघुवर परमसुजान ७ कलुककाल सेवित शमन,

संयमनी पुरबीच । प्रहरि पुरन्दर पुत्रको, निबसे नयननगीच ८
 पुनिविपाद परिहारकरि, कियपौरुप अवलम्ब । परम सुहृद सुग्रीवको,
 दियोरज अवि लम्ब ६ ॥ पदपदछन्द ॥ आदिकियो अभिषेक, सुहृद
 सुग्रीव राजपद । यौवराज्य अभिषिक्त, बालिसुत कीन्हों अङ्गद ।
 पवनतनय ले आदि, कपिन सेनापति कीन्हे । विनशंका प्रस्थान,
 ललित लङ्काप्रति कीन्हे ॥ तब वर्षाकाल व्यतीतकी, कपिभट म-
 न्त्रिन विनय किय । सुनिमाल्यवान गिरिप्रवरपर, बर निवास जानन्त
 जिय १० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ नाहिं रामते इतर शूरतर कोयहै । तिय
 हतिसम नहिं अन्य पराभव होयहै ॥ तदपि न कीनो सपदि समुद्र
 प्रवेशहै । हरिहां । बन्धनसेतु करन्त आप अवधेशहै ११ नाहिं रामसम
 बली सकल संसार है । दारहरण सम अहंकार न निहारहै ॥ तदपि
 प्रतिक्षाशरद सेतु दृढ़बंधिया । परहां । तदनन्तर तितजाय निशाचर
 रंधिया १२ ॥ दोहाछन्द ॥ माल्यवान गिरिशिखर थित, लषणसहित
 श्रीराम । सुमिरिसीय कमनीयता, बंदत बचन गुणग्राम १३ ॥ पदपद
 छन्द ॥ इन्द्रू अञ्जन लिस, गलित दृष्टी इव हरणी । विद्रुम अरुण
 मलान, श्यामलबि सुवर्ण बरणी ॥ सियास्वल्प सुरलेश, कोकिला
 कण्ठ परुपसम । बरहिनके बरबरह, गरह युतहेरत हियहम ॥ इमि
 बरणि अङ्ग सादृश्य को, जानकि गुण कीर्तनकियो । लखितारडव
 आढम्बर तड़ित, कहनलगे पुनि भरिहियो १४ ॥ किरीटछन्द ॥
 लोचनचारु समान सरोज तिन्हें यहवारि हुबावत पावत । तोर
 मुखच्छत्रिधाय छटासम छज्ज छपाकर मेव छिपावत ॥ तो गति
 तुल्य हमेश चलै जगहंस हमें दृगदूर दिखावत । यावत तावतमात्र
 विनोदन वस्तुसमै लखि दैवदुरावत ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाश्रिपालरावतजीश्रीदूलहलिहजीविद्यापितर
 पुरस्वरुविटीक

बलासे

अब श्रीहनुमानाटके पञ्चमोंक । कधिरुवाच दोहाछन्द श्रीरघुवर कह
 बचनवर, वानर भटन सुनाय । शुचि सैनिक सुग्रीवके, चित्त सुनत
 लगाय १ महतव्यसन प्रापतभये, धिर न रहत कोउ लोग । लखि
 निशङ्क लङ्कापुरी, को इत आवन योग २ ॥ परशरद्वन्द ॥ है सहर्ष
 हनुमान, भुजन आस्फालन कीन्हों । निज प्रचरड दोर्दण्ड, परम
 पौढत लखिलीन्हों ॥ देव परय ममअङ्ग, अष्ट अंगुलमय दशत ।
 द्वादश अंगुल पुच्छ, बाहुअति लघुतर सरसत ॥ अति अमित
 अगाध अपार है, रतनाकर किहि विधि तरत । यह सुनतराम वि-
 स्मित भये, जाम्बवान तब उचरत ३ ॥ चन्द्रायणाद्वन्द ॥ देव मारुती
 यहै रुद्र अवतार है । करहु रुद्र को तवन धीय निजधार है ॥ सुनत
 यहै बच स्वच्छरामनुति कीन है । हरिहां । कारज मोर अशेष
 आप आधीनहै ४ सुद्रितमन जनि करहु कहावपु सुद्रहै । लसत
 रुद्र अवतार कितोक समुद्र है ॥ अघटित घटना घटन पटी थश
 पेखिये । हरिहां । लङ्का शङ्का कहा गिनतमें लेखिये ५ ॥ दोहाद्वन्द ॥
 सुनत बचन श्रीरामके, हिय हस्ये हनुमान । मनसि महामुद मानि
 कै, बदत प्रबल बलवान ६ ॥ मनोहरद्वन्द ॥ कूरम है मूल आलवाल
 तूल पाथोनिधि, दशौंदिशि शाखा सर्व शोभाकी समाज है । प-
 ल्लव समान मेघ सुमन नक्षत्र सर्व, सूर्य सोम फल दौऊ विपुल वि-
 राजहै ॥ कहै हनुमान स्वामि करुणानिधान सुनो, यहै व्योम वृक्ष
 मोर क्रम गतआजहै । सुनि कपिराजकी अवाज सियशोध काज,
 आयसु उचारी अबधपुर अधिराजहै ७ हुकुम चढ़ाय शीशबोले
 पुनि हाथजोड़ि, इहिकी खुलासा खूब स्वामि सुनि पाऊँमें । लङ्का
 इत लाऊँ जम्बूद्वीप लेइजाऊँ उत, अथवा अशेष अम्बुसागर सुखाऊँ
 में । किंवा कैलासमेरु मन्दर विन्ध्यादि आ दे अदिन उखारि सेतु-

बन्धन कराऊँ मैं । येहो परिपूर्ण प्रभू कीजिये हुकुम तूर्ण, सीय इत
 लाऊँ लङ्का चूर्ण करि आऊँ मैं ८ राजन के राज महाराज अधिराज
 राम, रावरी रजायसु यथैव सुनि पाइहौ । शोपिहौ समुद्र सुद्र लङ्काको
 अलङ्का करौ, लङ्का अधिपाल बेगिबांधि इत लाइहौ ॥ पतिव्रत
 मानकीर्ण जानकी ले आऊँ नाथ, अंग्रिप उत्तारि अद्रि ओघन
 उठाइहौ । सागर पटाइहौ हटाय वारिनिधी वारि, दुष्टन दटायकै अ-
 रिष्ट उचटाइहौ ९ कहिये कृपानिधान होतहै बिलम्ब मोहिं, भारतएड
 बंशके बिभूषण अखण्डहै । संयुत प्रकारसविहार तोरणादिसह, लङ्का
 लाऊँ इतै कै तितेई करौ खण्डहै ॥ युद्धकाज कुद्धहै समुद्धत सकल
 सैन्य, सबको उठाय तितजाय करौ मण्डहै । कबूहू असाध्य नाहिं
 सकल सुसाध्यमम, परम प्रचण्डचण्ड मेरे दोरदण्ड है १० ॥ लोरठा
 बन्द ॥ सुनि मारुत बरबोलि, श्रीरघुबर प्रमुदित भये । मञ्जुमुद्रिका
 खोलि, पवनसुवन अर्पण करी ११ लङ्कन करहु समुद्र, सिय बिसास
 दे मुद्रिका । पुनि इत आवहु रुद्र, मोजीवत अविलम्ब अति १२ तव
 तथास्तु हनुमन्त, कहि गहि मञ्जुल मुद्रिका । किय बन्दन अगि-
 नन्त, श्रीरघुबर सुग्रीवसह १३ पवनपुत्र बड़वीर, चपलचले बहुबेग
 ते । पतितरंगिनीतीर, चितवत किय चित चिन्तवन ॥ १४ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविद्यापितकविटीका
 रामाङ्गजगोविन्दरामधिरचितेश्रीवरविलासे पवनपुत्रप्रयासो
 नामैकोनविंशोऽङ्काः ॥ १६ ॥

कविस्वाच । षट्पदबन्द ॥ दूरतिक्रमक्रम मिलित, घूर्म ऊर्मी
 मर्मच्छिद । युतरज भरकादम्बककुभ रुन्धत गुरुगति भिद ॥
 गाढाभ्रडन रुद्र, घटाघन संघट्टनकरि । नील व्योम सुर सरित,
 अम्बुकण गहत धायधरि ॥ अति ऐसे भंभा बात ये, करत घोर
 घनघातहै । अवलम्बि धैर्यधिय श्वसनसुत, सज्जकियो सवगातहै १

प्रीयतकृत तांगूल, स्फालकेलीकरिव्याकुल स्ये गानचर अखिल
 पुच्छकटकार छत्रकुल ॥ स्तम्भित अस्ति प्रकाशजलविजलचरवा
 चालित । भयेभूरि दिगभागीर लङ्घत जलनिभिजित ॥ जङ्घालचंड
 उड्डीन अति, खगपति अङ्गीकृतकियो । मनमगन गगन मगसंच-
 रत, हनूमान हरपिताहियो २ पुच्छकेतु उचाल, नभसि पृथुगति अङ्गी-
 कृत । अभ्रद्विशा उत्पतन, पृष्ठ कृष्टोष सत्यवृत ॥ उरवेग उल्ललित,
 पयोनिधि ललित लहरकिय । अरुण अङ्गुलीचिपू, दूर सिन्दूर छत्र
 लिय ॥ अतितेजभाग करिकै सकल, दिङ्गिरि कटितठ अरुणकृत ।
 ते सूर्य विद्ध अम्बुदसदृश, अति उत्तम उपमानभूत ३ ॥ कविस्वाच ।
 कोहाछन्द ॥ उहि अवसर आयो उतै, हिमगिरि सुत मैनाक । कलु मो
 पर विश्रामगहि, गमनकरो युनि नाक ४ ॥ म्नेहरछन्द ॥ प्रेरित पयोधि
 रत्ननाभ कलकांचनाग, सुवनहिमाद्रिमइनाक नाम धेय है । वचन
 उचारत भो आये दूर अध्व आप, सुन्दर शिखर मोर अत्रश्रम हेय है ॥
 सुनि गिरिवाच अग्र अंगुली लगाय ताहि, चले अग्र उग्रगति मारुति
 अगेय है । भुजरय पौनपुञ्ज पूरित ककुभकरि, आज्ञनेय अरिन
 अजेय मग श्रेय है ५ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ माला शालतमाल तालगण
 जाल है । बेजातट मारुती लखत सुविशाल है ॥ वल्लभ कल्लोलिनी
 तूर्ण सुल्लंघयन् । परहां । उच्चत्रालधी बल्लिगगन सुल्लोलयन् ६ ॥ पद्म
 पदछन्द ॥ अथ दशरथनृपसूनु, अमल आयसु करिकायो । वन
 मक्षिकसम रूप, पुरीलङ्का जालि पायो ॥ पवनपुत्र हनुमान, अद-
 तरत शिशप अग है । मात्रा परिमित देह, जाहि जान्यो नहिं जग है ॥
 जानकी अग्र उत आयकै, अभिवन्दन अगणित करत । कश्चं-
 लीय धुनन्दकी, धरणि सुता सम्मुख धरत ७ जनकनन्दिनी जननि,
 कौनतू हौ शाखामृग कौन पठायो तोहिं, रामपठयो इततवदिग ॥

यहै कहा तव हाथ, मुद्रिका तिनके करकी । तोहिंदई यह नाहिं, नि-
 शानीहै निज बरकी ॥ जबलई जानकी प्रेमयुत, हृदय लगाई स-
 हित हित । रोमांच कलेवर संचरे, नयननीर बरसत अमित ॥
 दोहाछन्द ॥ आंखिनते अविरल गलत, अश्रुन ओष अमाप ।
 सुवर्णकी जानी नहीं, तब मारुति कह आप ६ ॥ नगानिकाछन्द ॥
 सुवर्णकी सुवर्णकी सुवर्णकी सुवर्णकी १० ॥ सोरठाछन्द ॥ अवनि
 अंगजा आप, कछु आशा उरआनिकै । पोंछे अश्रुकलाप, मुद्रिक
 सों बूझनलगी ११ ॥ षट्पदछन्द ॥ अरी मुद्रिका कहहु, कुशल सह
 श्रीरघुनन्दन । कहु कुशली है लच्छ, स्वच्छ चितसरसत चन्दन ॥
 सुन स्वामिनि युग आत, कुशलपै तव चिन्तातुर । बिरह न दीजै
 देव, यहै अभिलाष रहत उर ॥ सिध तव वियोग जबते छयो, मुद्रिक
 अभिधा भजिगयो । प्रभु करमधि धारण करत, नित नामधेय क-
 ङ्कण भयो १२ इहिमुद्रिक मणि मध्य, पीउ प्रतिदिम्ब विलोकत । करौं
 दरश अस आश, उरसि चितदे अवलोकत ॥ निज प्रतिबिम्ब नि-
 हारि, अमित उर अचरज आयो । प्रभु मनमेरो ध्यान, धरत सोही
 बपुपायो ॥ तद्रूपतनकहू ना लखत, पोखिपरत मद्रूपहै । अमभूरिभयद
 आजन्त मन, सुता जनकपुर भूपहै १३ ॥ कविस्वाच । चन्द्रावणाछन्द ॥
 पुनि कछु चेतन पाय कहत हनुमानते । अति कृश पिथ वपु जान
 परत अनुमानते ॥ मुद्रिक कङ्कणभई अवर कहिये कहा । परहां ।
 दारुण दशा वियोग रची है विधिमहा १४ तब बोले हनुमान
 युगल करजोरहै । पहिलेही कृश परम बिरह पुनि तोरहै ॥ प्रतिपद
 तिथि नर पदत तासु विद्या यथा । परहां । पावत तनुताकन्तकले-
 वरहै यथा १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ पुनि वैदेही बरत, बिरह मधि कछु
 न सटावत दिनकर समदी धिती, सधाकर दृग दरशावत । पङ्कज

लगे फुलिङ्ग, कुलिश कर्पूर परसहै । सम्पाहम शशिकला, वायु
बड़वानल जसहै ॥ मनुमलयज दावानललगन, बहुवियोग दुख
गाइये । संदेश मोर गहि रामद्विग, अविहम्बित उतजाइये १६ ॥

हनुमानुवाच । चन्द्रायणाञ्जन्द ॥ कछु न राम शरदूरनात मनमानिये ।
हरियूथप दुर्गम्य कछु न पहिचानिये ॥ कुपित सलक्षण स्वामि
रक्षकुलहै कहा । परहाँ । सानुकूलतव देविदैव प्रसूदितमहा ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपरुनाधिपालरावतजीश्रीहूलहसिहजीविहारितरङ्गदुरहयकवि
टीकारानाङ्गजगोविन्दरामधिरचिते श्रीनरविलासेकारुतेवैवर्ति-
सेवादीनामविशोद्भासः ॥ २० ॥

कविरुमाच । पदपदञ्जन्द ॥ एते वै सप्रपन्न, पवनसुत पूछनलागे ।
राजवाटिका कहाँ, बात कह पश्चिमभागे ॥ शस्त्रो रूप प्रचण्ड, पुच्छ
फटकारि गयेतित । लीलावन उत्पादि, कियो मधुकुल मरुणजित ॥
अभिधान अक्ष रावणसुवन, माखो परिवाघातहै । तिहि क्रोध अ-
रुण लोचन किये, मेवनाद दरशातहै १ ब्रह्मदत्त ब्रह्माक्ष, बलाघो
मेवनाद जब । रुद्ररूप मारुती, जयरै वृथाभयो सब ॥ इन्द्रजीत उर
आनि, अमित विधि निन्दाकीन्ही । तवै विधाता पवनपुत्र, छुनि
कृतिचितचीन्ही ॥ छुनि चारुचतुर्मुखविनयते, आये बन्धनबीचहरि ।
बानर बिलोकि रावणतदा, बोलत रचना बचनकरि २ रे बानर तू
कौन, अरेहौ तवसुतहन्ता । खण्डखँडन श्रीराम, दूत अभिधा हनु-
मन्ता ॥ मम दोईड कठोर, ताड़नाश्रुत गतिसोहै । त्रिकुशबल है
कहा, मेरु का तू पुनि कोहै ॥ क्रोडइड जगत दीक्षा गुरु, अवध
अधिप अधिकायते । लङ्केश निशाचरनाथ तू, कहा कोटि कीटा-
यते ३ ॥ चन्द्रायणाञ्जन्द ॥ कुपितहोय लङ्केश बलाघो लागहै । कञ्जो
न कपिको केश सुमन जिमि लग्न है ॥ सज्जन मैत्री यथा नाहिं
उच्छिन्नहै । हरिदां तय श्वसनसुन वपुष भयो नहिं भिन्न है ४

शण्वेष्टितकरि बहल चलंचयतूल है तेलप्रुतद्रुत कियो ललित
 लांगूलहै ॥ दनुज करत देदीप्यमान दरसन्तहै । हरिहां । हेरिहेरि
 हनुमन्तहीय हरसन्तहै ५ सिया हिया अकुलाय कहत बरबैनहै ।
 चित चिन्तातुर महातनक नहिं चैनहै ॥ अरजी अनल जुनन्त अ-
 निलसुत कारने । हरिहां । सुहृद सुवन जियजानि कृपाकफवास्ने ६
 आज्य होमकरि कियो राम तुहिं तुष्टहै । परुषबचन सुनि विप्र भये
 नहिं रुष्टहै ॥ पतिभक्ती करि युक्त मोर जो चित्तहै । हरिहां । हृजोशी-
 तल मद्य मरुतके मित्तहै ७ ॥ सोरठाछन्द ॥ शीतल भयो हुतास, सुनि
 सियकी पदुप्रार्थना । हनुमन्तहीय हुलास, चारुचन्दनालेप समन् ॥
 मनोहरछन्द ॥ निपट निशङ्क लङ्कगढ़को दहन कियो, वानरके पुच्छ
 पायो जन्म अग्नि आप है । ज्वाला आसमानलौं विकासमान
 भासमान, दशों दिशि पूरिहीं अम्बरअमापहै ॥ आसुरी असुरबाल
 वृद्ध तरुणादि सब, व्याकुल विशेषहाय अखिल अलापहै । मनो
 राम चापशर दापके संताप तप्त, स्वर्गभो पलायमान रावण प्रताप
 है ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ पलभक्षक पल भक्षिहुताशन प्रबलहै । परम
 प्राप्त संतुष्टिभयो अति चपलहै ॥ गिह्यो अम्बुनिधि वीच जासप्रति-
 बिम्बहै । अरिहां । मानोपिबत अति तृपित तितै अब अम्बु है १०
 दशग्रीव उहिवार करत सुविचारहै । हनुमान वरविदित रुद्र अवतार
 है ॥ हौं आजत भव भक्कनगर मम किमि दह्यो । परहां । इहिको
 कारण यही चारु चितमें चह्यो ११ दश शिरकरि दशरूप भये संतुष्ट
 है । एकादश अवशेष भयो यहरुष्टहै ॥ पंक्तिभेद कल्याण कौनको
 देतहै । हरिहां । नगरदाह हनुमान कियो इहि हेतहै १२ ॥ पद्मपदछन्द ॥
 बड़वानलकरि सिन्धु, बिम्बदिनमणि करिअम्बर । चपलाचयकरिल-
 सत, कहा अतिमेघाडम्बर । भालनेत्र अ जन्त, तथा न हिं श शिभृत

करहै । प्रलयानल करि काल, इन्द्रधनुधाराधरहै ॥ इमि भ्रुवमण्डल
करि मेरुगिरि, तस शोभा नहिं लहतहै । देदीप्यमान कपि पुच्छ
करि, अनुपम उपमा गहतहै ? मन्दमन्द गिरि कहत, निशाचर न-
गर निवासी । मरुतपुत्र इक यहै, पुच्छ ध्वज गगनविलासी ॥ रक्षा
मणि कपि कटक, अहह इत पीछो ऐहै । चीन्हि चीन्हि के सकल,
दुसह दारुण दुख दैहै ॥ इहिं एक कियो उत्पात अस, अगणित
वानर आयहै । अति हाय हाय धवराय, घट कहा कहा दुखपाय
है ? नभमण्डल थितहोय, कहत कपिवर दशसुखसौ । हौं इकतू
कोटीश, तदपि तुहि जीतौ सुखसौ ॥ जनकसुता जानकी, लेव
जावो तित अतिदुत । सबप्रकार समरत्थ, स्वाभि मुहिं दिय न
हुकुमउत ॥ सुग्रीव अग्र रघुवीरवर, भुज उठाय ऐसे कही । क्षणमध्य
छपाकर निकरयुत, रावणहौं हनिहौं सही १५ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि
कहि लङ्का भस्म करि, बनिकाशोक विहाय । अभिज्ञान याचन
करत, श्रीज्ञानकि ढिगजाय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोद्वपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविद्यापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामधिरचिते श्रीवरविलासे लङ्कापुरवहनो
नामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

कविबवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ काल व्यालवर बधू सहश बिल-
सन्तहै । धूमशिखा सम शत्रु शिखा सरसन्तहै ॥ शिरोरत्न सियलेय
दियो हनुमानहै । परहां । अभिज्ञान यह एक सु प्रथम पिछानहै ?
चित्रकूट गिरि काककलेवर धारिकै । शक्रसुवन सम गयो सुहृदय
विदारिकै ॥ ईषिकास्र करि कियो तस्य चखकान है । परहां ।
श्रीगधुवर को देउ द्वितीय अभिज्ञानहै २ मनरिशालामम तिलक
कुललित कपोल में । कियो पाणितल मृष्ट करहु, जिय तोल में ।
यह तीसर अभिज्ञान पँउप्रति भाषिहौं अरिहां जीवन अवधी

मासमात्रकी राखिहों ३ ॥ कविरुवाच । पद्मपदछन्द ॥ जलयुक्तं गहि
 रत्नः प्रमुख अभिज्ञान अनूपम । अभिवन्दन किं जनकनन्दिनी
 पद वारिजसम ॥ आय उदधितट आप, अटन अम्बर मगकीन्हो ।
 आडम्बर भुज प्रबल, पराक्रम अद्भुत चीन्हो ॥ हनुमन्त महामति-
 मन्त अति, साधि स्वाभि कारज सकल । अति सत्वर उत आवत
 भये, जित रघुवर बिलसत विकल ४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ मारुत चुम्बित
 चारु केसरा लसतहै । प्रसुदित ताराधीश अग्रशर दृशतहै ॥ विर-
 हित रामालोक सुआतुरवन्तहै । हरिहां । आयो यहै बसन्त किधौ
 हनुमन्तहै ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सीतापति सम्भ्रम सहित, आलिङ्गितअव-
 लोकि । विनवत युग करजोरिकै, बारम्बार बिलोकि ६ ॥ हनुमानुवाच ।
 पद्मपदछन्द ॥ पियो नाहिं अम्बुधी, नाहिं लङ्काचुर नीता । शयणशिर
 लायो न, नापि सीता आनीता ॥ आश्लेषार्पण पारि, तोप कारण
 किहिंपाऊं । लखि प्रभु प्रभुता परम, अनुग निज जीय लजाऊं ॥
 विभुवार्त्ताहारक दूत भैं, घुत सँदेश इतउत कहौं । किहि लायकहौं
 करुणानिधे, आलिङ्गन कैसे चहौं ७ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥
 रामकहत विकलपसहित, एरे कुटिल बिधात । कहा कहा करिहै
 अहौ, सो जानी नाहिंजात ८ ॥ हनुमानुवाच । पद्मपदछन्द ॥ कितै
 अयोध्यापुरी, अवर पुनि रामभद्रकित । तेऊ दशरथ बचन, पाय
 आये दण्डकइत ॥ कौन दृष्ट मारीच, कनकमय मृग अति अद्भुत ।
 कुत सीता अपहार कितै मैत्री कपिपतियुत ॥ सुहिं कित सीताकी
 शोधको, पठयो श्रीरघुवर तिलै । अति क्रूरकर्म सुबिधात यह, अव-
 टित अघटित कृतइतै ९ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामरसत विदरत
 हृदय, प्राणचहत परलोक । तूस्त आवेदन करहु, जिमि जानकि
 अवलेक १० हनुमान सत्वर बढत, जगदानन्दक राम । तोर

प्राणगति द्वारकी, अर्गलकर अभिगम ११ इमिकहि अप्यौ शिर
 रतन, तिलक मृष्टवस्त्रपूर्ण । चित्रकूटगिरि शिखरपर, सो वरणयो स-
 म्पूर्ण १२ रामपाय अभिज्ञानत्रय, साधु साधु कह बैन । प्रियाकुशल
 पूञ्जनलगे, जलभरि नीरजनैन १३ ॥ हनुमानुवाच । पश्यदञ्च ॥ कृ-
 शता वरणकरौ, शशिकला प्रतिपद धूला । पाँडेये पुनि पाण्डुता,
 मृणाली मेचकतूला ॥ अश्रुश्रोत्र उच्चरौ, अम्बुनिधि अल्प लगत
 है । लखत सीय सन्ताप, हुताशन शीतपगतहै ॥ लावण्य शेष वपु
 लगत वह, हिय रावर स्थितिमात्रहै । हनुमन्त कहत सुनिये प्रभो,
 केवल करुणापात्रहै १४ ॥ कविहवाच । दोहाछन्द ॥ प्रभु पृञ्चत हनु-
 मन्त पुनि, लङ्कापुर के बीच । कहा कथाकिय कर्णगत, कहहु उच
 अरु नीच १५ ॥ हनुमानुवाच । पश्यदञ्चन्द ॥ नाहिं कथा शृङ्गार,
 कुतूहल कथा नाहिं कित । नाहिं साङ्गीतक कथा, कथा विद्यान जितै
 तित ॥ नाहिं करिन की कथा, तुंगम कथा तथा नाहिं । नाहिं वसुप
 की कथा, विशिख आदिकन कथाकहिं ॥ मुन नाथ निशाचर नगर
 मध्य, स्वपतहुं मधिनहिं अन्यथा । भयभीत रावरै भूरिभन, प्रवल
 पलायनकी कथा १६ ॥ श्रौतप्रववाच । दोहाछन्द ॥ त्रिदशन करि
 दुर्द्धर्ष अति, लङ्कापुरी महान । विद्यमान दशकण्ठके, किमि जारी
 हनुमान १७ ॥ हनुमानुवाच ॥ सीताके विश्वासकरि, कियो लङ्कापुर
 दाह । पहलेही वह दग्धही, कोपानल नरनाह १८ इक शाखाते
 कूदिकै, शाखान्तर पै जाय । शाखासृग को जोर यह, रञ्ज न अ-
 धिक लखाय १९ सागरको उल्लंघिबो, तथा लङ्कापुरदाह । रावर पूर्ण
 प्रभाव भल, निरखिलेउ नरनाह २० ॥ कविहवाच ॥ लङ्कामधि शङ्का
 सहित, शरमाप्रति मियबैन । क्रीडभ्रमरके न्यायकरि, पिय वपु
 मोरवनैन २१ शर्मोवाच तू गहि है जो पीयवपु, पिय बनिहै

तनुतोर । होहिं युगल विपरीत रति, यामधि कहो निहोर ॥ २२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे हनुमद्विजयो
नामद्वाविंशोऽङ्काः ॥ २२ ॥

हनुमन्नाटकेशोऽङ्कः ॥ कविह्वाच । पदपदहृन्द ॥ पवनपुत्र जब जाय,

कही कपिपति ते ऐसे । राज्य गर्वकरि बिसरि, गयो प्रभुकारज कैसे ॥
बालीदशा विमारि, दई सब भूरयो निजदुख । पूरण रामप्रभाव, अनु-
भवत इत सारेसुख ॥ सुग्रीव सुनत मारुत बचन, सकल सैन सह
संचरत । परिहारि प्राणप्रिय प्रेयसी, समरबीरता धियधरत १ विजय
दशमि आसौज, विशददल श्रीरघुनन्दन । कियो प्रबल प्रस्थान,
निखिल निशिचरन निकन्दन ॥ बल अष्टादश महा, पद्म संख्या
कस बलहै । यूथनाथ ये कहे, अपर कपिसंख्य प्रबलहै ॥ बहु व्याप्त
भयो भूतल सकल, दिशाविदिश आकाश है । कपि कटक विकट
कटकटत रद, किलकिल शब्द प्रकाशहै २ हनूमान कह सुनहु, नि-
खिल नरनाथ सुकुटमनि । आवत यह चहुँओर, अमित कपिकटक
अनीकनि ॥ जिनके भाराक्रान्त, भूमिमज्जत तिहि भरकरि । दशन
कटककरि लिखत, शेष अहिकमठ पीठपरि ॥ उत्पतत पतत ज्यों ज्यों
प्रवङ्ग, त्यों त्यों नमतरु उन्नमत । फणिराज प्रयाण प्रशस्ति लिखि,
फेनपुञ्ज अविरत वमत ३ रुन्धित सन्धी सन्धि, रवास उर्मिन करि
अविरत । हारावलि गलद्वन्न, रल अदयालु अमितष्टत ॥ कीन्हों फल
भञ्जिका, भङ्गक्रम परम परिश्रम । श्रवणाकाश निरन्तराल शिरस्तब्ध
भुजंगम ॥ ध्रुव धारत धरणीधीर धरि, भुञ्ज भयो भासन्तहै । बानर
सुबीर विक्रमनभर, तरलताप त्रासन्तहै ४ रटतरामभो मरुत, सूनुसुनि
जीजै सत्वर क्लेश करनको कूर्म, ककुभकुल थगित निखिलकर ॥

कटक कपिकेर अपरिमित ॥ नासीर पुरपुर प्रह्वरवल, बागाडम्बर
 बहुलसत । पै जानतहों यह मोर सब, विजय तोर भुजवल वसत ५
 क.वि.वाच । रोहाळद ॥ अति अद्भुत कपि कटक लखि, भिल्लभामिनी
 भूर । बदत वचन परिहासधुन, निरखत सैनानूर ६ ॥ पदपङ्कज ॥ नाहिं
 शस्त्रकित लखत, न कछु अञ्जन अरजोक्त । नाहिं स्थनकी कथा,
 वाहवारण न दिलोकत ॥ नाहिं उपभ नहिं सुतर, शिखर नहिं नृपहु
 जटाधर । वित्तनाहिं बर वसन, नाहिं नृप रत्न छटाधर ॥ भापत जरठ
 भिखीन सों, हम बैठी इतमातहै । सुनि कहत सकल समुभायकै,
 तिनकीते सब मातहै ७ लङ्कागढ़ जेतव्य चरण, तरणीय जलधि
 जल । प्रबल शत्रु पौलस्त्य, सहायक इतमरकटबल ॥ यद्यपि राम यह
 एक, सकल रिषु प्रतिबल दलिहै । निशिचर निकर निशेप, पराभव
 पावत पलिहै ॥ कहि क्रिया सिद्धि सब सत्त्वमधि, महतजनन की
 मानिये । आडम्बरहै उपकरणको, यह अवश्य उर आनिये ८ ॥ कवि-
 वाच ॥ अत्रान्तर वृत्तान्त, तत्र लङ्का लीजै सुनि । मन्त्रशाल उप-
 विष्ट, मन्त्रि प्रोच्छाहित चित्त चुनि ॥ बदत विभीषण बचन, सहित
 उत्कण्ठ भटनप्रति । स्वर्णपुंख शित विशिख, बज्रमम मनो वायु-
 गति ॥ जबलौं न गहैं शिर सधन के, तबलौं है कर्त्तव्य यह । इत
 दशरथनन्दन दीजिये, निमि नृप नन्दिनि सोदमह ९ ॥ मनोहरदम्भ ॥
 त्रिवरग धर्म अर्थ काम ये कहावत है, मोक्षको मिलाय चतुर्वर्ग
 पहिंचानिये । धारिये धरम प्रातहीते मध्यद्योस जौलौं, उत्तर अहनि
 अर्थ संग्रह सुआनिये ॥ सायंकाल समै काम सेवन यथेच्छ कीजै,
 गावत गोविन्द श्रुति बचन प्रमानिये । मोक्षहै महान जिय जानहु
 जहान बीच, आठौं याम सो अवश्यमेव उर आनिये १० ॥ लोका-
 ष्य अर्पहु सीता रम. कहत विभीषण अ तते नय धारहु धिय

धाम, अत्रय क्रिये विनशत सकल ११ ॥ पदपदछन्द ॥ पुनि रावण
 प्रति कहत, यहै नर बानर जाती । इनते रहिये डारत, बड़े ये सब उ-
 त्गती ॥ हयहय महिपति मनुज, बसे कार, गृह अन्दर । निवसेजाकी
 कक्ष, बहे बालीहो बन्दर ॥ पौलस्त्य करतहौ प्रार्थना, रघुवर सीय स-
 मर्पिये । बन्धनागार शित विबुधगण, तिन विसर्जि सन्तर्पिये १२ ॥
 चन्द्रायणाछन्द ॥ किल नाशक कुलकीर्ति कोप तजिदीजिये । बहु
 वर्जन यश वंश धर्म धियकीजिये ॥ ह्वै प्रसन्न सब बचै काज सो
 कीजिये । हरिहां । दाशरथी श्रीराम भैथिली दीजिये ॥ १३ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहर्जाविद्यापितकविटीका
 रामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे विभीषण
 सन्भाषणोनामत्रयोविशोक्ताः ॥ २३ ॥

रावणउवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ कह सकोप जानकीजीय जानन्त
 हौं । मधुसूदन रघुनन्द मनसिमानन्तहौं ॥ बधजानत दशबदन
 तदपि थिर थपिहौं । हरिहां । मेरे जीवत राम सीय न समपिहौं १ ॥
 दोहाछन्द ॥ रावण ऐसे वचनकहि, कृतबामांघ्रि प्रहार । तबै विभीषण
 गमन किय, लिये सचिव संगचार २ महातङ्क लङ्कानगर, धूमकेतु
 निजवंश । छांड़ि विभीषण तूर्णतिहिं, चलयो हुलसि हिय हंस ३
 विविध बिराजित नितहुते, श्रीरघुनन्दनराम । तितअति तूरन आ-
 यकै, चितपायो विश्राम ४ ॥ पदपदछन्द ॥ लखत विभीषणभाव, पर-
 स्पर बानर उचरत । करि है लङ्काधीश, प्रणति पदपङ्कज प्रचरत ॥
 जिमि कीन्हों सुग्रीव, सकल मर्कटभट राजा । तैसे याहि अधीश,
 अपिहैं असुर समाजा ॥ इहिसाखी तुम हम सकल, है यामें संशय
 नहीं । अतिउर उदार दातार तर, श्रीरघुनन्दन हैं सही ५ ॥ दोहा
 छन्द ॥ जो विभूति दशग्रीवको, शिरछेदे शिव दीन । राम विभीषण
 कोदई, दाश होत लघुचीन ६ प्रणमि चरण वारिज वरण, पुनिबर

आयसु पाय । निकट विभीषण धित भये, कविलसि उर न अत्राय ७ ॥
 पद्मदङ्ग ॥ अथ सौमित्री मित्र, पुत्र दशरथ नरनायक । उत्तर
 तट अम्भोधि, भये धित जन सुखदायक ॥ गर्भ इर्भ आकीर्ण, अमल
 उपवेशन ऊपर । वैठे रघुविराम, अपर सब आजत भूपर ॥ आयो
 न अग्र जब अम्बुनिधि, तब अति कोपालण वरण । आरनेय अग्र
 आदत उन, सिन्धु सलिल शोषण करण ॥ कविरवाच । चन्द्रायणा
 छन्द ॥ रामचन्द्र दशवदन नाश उद्यम कियो । मांसहारीजीव
 महामन सुदलियो ॥ छुग कपि बन अरु वैरव तयोवन आदिकी ।
 अरिहां । महाभित्तता मानिलईहु अनादिकी ६ ॥ पद्मदङ्ग ॥ हां तो
 नहिं मारीच, हिरन वञ्चन को करतो । हनुमत कपिविन कौन, कहै
 मनसंशय हरतो ॥ सवन महावन विना, सीय हर रावण कैसे । विन
 तपसी के शाप, सबै वानक किमि ऐमे ॥ ये सुहृदवर्य हमरे सबै,
 परम कृपा इन प्रापहै । अब करिहैं अदन अत्रापकै, आमिष असुर
 अमाप है १० ॥ कविरवाच । लोखाङ्ग ॥ अति भयसंयुत सिन्धु,
 सुखपु धरिआयो उतै । राम दीनजनबन्धु, तवन करत कर जोरि
 युग ११ ॥ समुद्रउवाच । पद्मदङ्ग ॥ पूर्व पितामह सगर, आप
 निश्रय अनुमान्यो । हूहै हमरे गोत्र, नृपति दशरथ जगजान्यो ॥
 हयमख करिहै वहै, आज्य आहुति बहु परिहैं । न्याकुल हूहै कमठ,
 शेष किमि धरणी धरिहैं ॥ तिन ताप शमन सागर सकल, सुस्मरि
 संयुत प्रकट कृत । धिरथै तिन्हैं उथपत अवे, अतुचित उचित न
 धीयघृत १२ ॥ श्रीरामउवाच । दोहाङ्ग ॥ चापलपाउ सौमिनि मम,
 शोषौ सागरनीर । चरणन ते चलिजायँगे, विन अमवानर वीर १३ ॥
 कविरवाच ॥ तवै विनय किय तोयनिधि, जो है बन्धन सेतु । युग युग
 लौ ज हिर रददि, जगमधि कीर ते केतु १४ ॥ मुनि वारिषि के बचन

वर, हुकुम दियो श्रीराम । करत सेतु रचना रुचिर, बानर नलअभि-
 राम १५ ॥ कविरुवाच । पदपदछन्द ॥ तिरत देखि प्रस्तरन, मरुतसुत
 बचन उचारत । बड़ अचरजकी बात, प्रभो प्रत्यक्ष प्रचारत ॥ पाहन
 डूबत आप, अवर संगीन डूबावत । इहां तिरत सबतेपि, अपर सह-
 चरन तिरावत ॥ यह प्रावनको गुण है नहीं, वारिधि बानर को
 तथा । रावर प्रताप महिमा लसत, इतरन की इत का कथा १६ ॥
 चन्द्रायणछन्द ॥ प्लवग पुरोगम सिन्धुसलिल मय देखिया । तिन
 पाछे कपिकटक पङ्कमय पेखिया ॥ उनहूँ के पश्चात् भाग बानर
 रहे । हरिहां । जलधि हुतो इहिठौर बचन ऐसे कहे ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूतहसिहजीविद्यापितकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरधिलासेसेतुबन्धननाम-
 चतुर्विंशोऽङ्कः ॥ २४ ॥

हनुमन्नाटककेसप्तमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ गिरिसुबेल तट कपि
 कटक, सुत उतरे रघुबीर ॥ उर अनुकम्पा आनिके, उचरत गिरागँ-
 भीर १ ॥ श्रीरामउवाच ॥ महावीर अङ्गदबली, तुम रावणदिग जाउ ।
 प्रथम साम कर्त्तव्य है, सो करि हुत इतआउ २ ॥ पदपदछन्द ॥ उभय
 बन्धु असमच्छ, होत तैने हरिसीता । आधिपत्य अहंकार, मत्त अ-
 थवा आनीता ॥ ताहि दीजिये तुरत, नतर लक्ष्मण मार्गन गन ।
 करहिँ असुर उच्छन्न, उच्छलच्छोनित क्षितिघन ॥ सह पुत्र पौत्र
 परिजनसहित, अन्तकपुर प्रतिजायहौ । जउ बीसश्रवण चष बीस
 तउ, बधिररुअन्ध कहायहौ ३ ॥ कविरुवाच ॥ कहि तथास्तु युवराज,
 पितृबध वैरविसर्जित । चलयो चपलगति लङ्क, उरसिरिपुशङ्क वि-
 वर्जित ॥ गगनाङ्गन उत्पतन, करत किलकिलारव करिकरि । प्रवल
 पुच्छ फटकार, उच्च धाराधर धरि धरि ॥ उतपात केतु उद्भट असुर,
 सिंहामन आसीनव हि उपम न अमित अङ्गदलसत, निर्जरपति

सुत सुवनसहि ४ ॥ कविरुवाच । चन्द्रावलाङ्गन्द ॥ मालुमकरी प्रहस्त
 रामको दूत है । आवन चाहत इतै कोपि कपिपूत है ॥ आयसु अ-
 सुराधीश दई अन्दागयो । हरिहां । अवलोकत आकाश वचन
 उचरतभयो ५ ॥ अङ्गदउवाच । पद्पदछन्द ॥ रे कौनपकुल कहौ, कौन
 रावण अभिधाना । रतनरवीन्दू वंश, हरनकरि नष्ट निदाना ॥ त्रि-
 जगदहन त्रयनयन, त्रिशिप शूजहुते अनुलित । प्रलयानल प्रसु
 राम, असुहृहै पतङ्ग तित ॥ चितचाहत जो तुमरो भलो, उचमवात
 बतात अब । सीता समर्पि सन्तर्पिये, घटिजैहै वनघात सब ६ ॥
 कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ साभ्य सूर्य रावण रस्त, अङ्गद उत्तरदेत ।
 भय उक्ती प्रत्युक्ति युत, उत्तम उपमालेत ७ ॥ अन्योन्यभाषण । पद्पद
 छन्द ॥ रेकपि तू है वही, कौन जो पहिले आयो । जाकी जारी पु-
 च्छ, तनय मम जाहि वंशयो ॥ ताने तो तित कही, निखिल लङ्का
 पुर जास्यो । मास्यो तव सुत अश, मुधा कपिवचन उचास्यो ॥ यह
 भूठ वात कै सत्यहै, कोप लाज भय युतभयो । अङ्गद वरिष्ट बरवैन
 सुनि, रावण मुख मुद्रितरयो = पुनि रावण ब्रूकत, अरे कपिगुण
 कहतावक । रामराज लेख्यार्थ, दूरप्रापक बहुधावक ॥ लङ्कादाहक
 हनुमान, वह कहहु कहां अब । गशस सूनू बद्ध, श्रवण सुनि तित
 ताड़ित सब ॥ भासत जित सबीण अति, परम पराभव पायकै ॥
 वह कोजाने किहि और है, कितमें रह्यो लुकायकै ६ जिहि कपिकिय
 पुरदाह, अवर कानन कृत भङ्गन । गिरि दरि असुरन भरी, अक्ष
 सुत कीनो गङ्गन ॥ तुम जानतहो ताहि, कछू वह करिहै विनती ।
 पै हमरे इहि कटक, बीच ताकी नहिं गिनती ॥ वह दूर दूर धावन
 विपे, विदित बड़ो मजबूतहै । सन्देश इतै उत भेजवे, ल्यावन कारन
 दूतहै १० लङ्का दई जलाय, अश तवसुन संहास्यो । अरु पुनि

असुरान ओष, अमित क्षण बीच प्रहास्यो ॥ सम्भाषण सियकीन,
 अविष उल्लङ्घन ठान्यो । उहि अविधा हनुमान, मान कानन भल
 भान्यो ॥ जबकामपड़े बड़युद्धको, तितै ताहि भेजत न कित । कहु
 दूलेन सन्देश है, तब तितको प्रेषन्ति नित ११ ॥ रावणउवाच ॥ राम
 सुन्दरीविरह, विदित बैअ्यो वपुहारित । तासचिन्तया लच्छ, भयोभल
 बच्छ विदारित ॥ बयोवृद्ध सुग्रीव, यथा निर्मूल कूलतरु । कौन
 विभीषण गिनत, अतिथि अरिभयो दीनअरु ॥ रावण बहन्त अङ्गद
 मुनहु, और न कोऊ अनेकहै । लङ्कालगाय पावक परम, मोरबध्म
 कपिएकहै १२ ॥ अन्योन्यभाषण ॥ कोहै बनपति तनय, कौन बनपति
 तव संगी । कोसंगी इकदिवस, सप्तसागर कृतअङ्गी ॥ कक्षापुट
 तुहिलिये, फिखो वह वानरबाली । हां जान्यो वह कुशल, कुशल
 तितकर्म कुवाली ॥ श्रीरामचन्द्र जबरुष्टहै, स्वस्तिमान को रहि
 सकत । अनरन्यभू तर्पण करन, रम्य रुधिर तो तनुतकत १३ कहा
 करतहै राम, प्रतीपन विजय निरन्तर । किहिप्रतीप जयकियो, वि-
 दितबाली सुदिगन्तर ॥ कोबालीका विभरिगयो, पहिंचान कहा
 कपि । यहहू विस्मृति तोर, अहो बड़मोह महानपि । परियङ्क बद्ध
 दश बदन तू, निज बालक कलकेलिकृत । लत्ता प्रहार ममविस-
 रिगो, अति अचरज ध्रुवधीय घृत १४ ॥ अङ्गदउवाच ॥ प्रथम तिखो
 दुर्लभ्य, अम्बुनिधि वानर शावक । दैत्यन बडु दुर्भेद्य, भेदि प्रविश्यो
 पुरतावक ॥ बनरक्षक उच्छिन्न, भक्षिफल अक्षहननकिय । प्रदहन
 लङ्कापुरी कियो, अवलोकनहू सिय ॥ इतिविद्यमान दशबदन तव,
 एक अल्पकपि आचरित । मै कौनकौन वर्णनकरौं, रामभूप अग-
 णित चरित १५ ॥ रावणउवाच ॥ रावण करि आक्षेप, उचारत आनन
 ऐमे । भग्न भग्न शिवचाप, बालि आहतहत तैमे । सप्त तालहत

हतक, वारिनिधि बद्धवद्धकृत । कहापराक्रम राम, अहंकृति करि उर
 आवृत ॥ धृताधरत शैलमारगधरा, अहिपति अङ्गद शिवलसत ।
 तिनसहित अबल कैलास धृत, विरहित रुज ममभुज दृसत ॥ १६ ॥

इति धीपिपलोदपत्तनाधियालरावतर्जाश्रीदुलडालिहजीविजापित
 कविटीकारामाङ्गजगोविंदरामविरचितेश्रीवरचितासेरावण-
 कदान्योन्यसंभाषणनामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

कविहवाच । दोहाछन्द ॥ सुनि सुनि रावणके वचन, करि करि
 कपिपति कोप ॥ स्वामिभक्ति अभिनेय उर, वच उचरत साठोप १ ॥
 अङ्गदउवाच । पदपदछन्द ॥ करि कशागत तोहिं, बालि नामा बल
 वारो । कपिकुल तिलक सुसप्त, सिन्धु सन्ध्वार्चन सारो ॥ कियो
 अखिल अनिच्छिन्न, बलिष्ठ न उहिं समकोऊ । श्रीरघुवर रणधीर, हन्यो
 इकशर करि सोऊ ॥ सत्यज्य अहंकृति अमितउर, वह बानर सुर-
 पुर गयो । तजिदेउ गर्व यह सर्व तुम, निज हिय अन्दर जो रयो २
 जिहिसँदेश हरिदूत, मरुतसुत तिथ्यो वारिनिधि । गोपद इव उर
 आनि, स्वामि किय सब कारजसिधि ॥ निज आलय जिमिआय,
 प्रवेशन कृत लङ्कापुर । सिय सम्भाषण दर्श, कियो कानन भङ्गन
 तुर ॥ तव भूरितैन गङ्गन ससुत, पदुपत्तन प्रदहन ठयो । किहि
 भांति राम वर्णनकौं, प्रभु प्रताप सब भित्तिछयो ३ ॥ कविहवाच ।
 दोहाछन्द ॥ बालि तनय वर वचन सुनि, रावण भयो सक्रोध ॥ अहं-
 कार आरूढ़ ह्यै, उचरन लग्यो अक्रोध ४ ॥ रावणउवाच । पदपदछन्द ॥
 हन्यो कनकमृग मात्र, तुच्छ तृणचर कानन भधि । प्रवग वृक्षते
 वृक्ष, करन शाली बाली भधि ॥ वीर कहावत राम, मोर हियहास
 होत है । प्रबल पराक्रम पुञ्ज, दशानन जग उदोत है ॥ बहु बलि
 मालज्वाला जटिल, अति दृढ़शर सन्धान है । जिय जवर युद्ध
 उद्योगयुत, मम समान नहिं आनहै ५ अ १ दोहा छन्द

मेको दूतभयेमते, सन्धी विग्रह होय अक्षत सक्षत तनु पीठक्षिति,
 अवलुण्ठनहै तोय ६ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ रावण जानहु मोहिंदूत श्री
 राम को । महावीर रणधीर सुगुणगण ग्राम को ॥ स्वरूपण मृगभक्षि
 तृषित शरभूर है । अरिहां । पितृहिं कण्ठ घट रन्ध्र रुधिर सुजर
 है ७ ॥ रावणउवाच । दोहाछन्द ॥ रेवानर अति अधम, कटुक प्रला-
 पत काहि ॥ श्रवणलाय सुनिलीजिये, यहिबिधि रावण आहि ८ ॥
 पद्यदछन्द ॥ भृशु भृत्य पादांत, तपति दिनकर सुमन्दरुचि ।
 लोकपाल पुनिअष्ट, मोरभय चकित रहत शुचि ॥ बन्दतनित पद-
 रेणु, इन्द्र आदिक निशिवासर । चन्द्रहास ममलखत, गर्भ सब सुर
 अहितियनर ॥ अति उग्रप्रतापी असुरपति, रहत सकल करजोरिकै ।
 अब आये इत तपसी युगल, बानर सैन बटोरिकै ९ ॥ कविरुवाच ।
 दोहाछन्द ॥ भूतल ताड़ित पानितल, भुज अस्फालन कीन ।
 अङ्गद होइ सक्रोधवपु, उचरत बचन अदीन १० ॥ अङ्गदउवाच ।
 पद्यदछन्द ॥ रेरे राक्षसवंश, घोरघातक पातकचय । समर मध्य श्री
 राम, करहिं तत्र सकल शीशक्षय ॥ दिशा विदिशि परिपूर्ण, निकर
 नाराचन करिहैं । रघुवर वीर सुशीर, जत्रै कर वर धनुधरिहैं ॥ तत्र
 तोर मत्थ भूपर परहिं, गृद्ध करहिं लुण्ठित लपटि । समुदाय शिवा
 कवलित करै, भलै काग भुण्डन क्षपटि ११ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥
 रावण बद्ध प्रपञ्चयुत, कटुवादी कपि तोहिं । हौं न हनत इहिहेतु
 तुहिं, धर्मशीलता मोहिं १२ दूत यथोकत वादि है, नरपति हनत
 न ताहि । क्रूर कोपकरि करत हैं, वपु बिरूप कछु वाहि १३ ॥
 अङ्गदउवाच ॥ परदारा अपहरण मधि, लई न रचक लाज । अबै दूत
 परित्राण विच, धर्मशीलता आज १४ ॥ रावणउवाच । पद्यदछन्द ॥
 इन्द्र माल्य करमोर, द्वार प्रतिहार सहसकर गृह सम र्यक वायु

बहुण तुन चन्द्रवत्रधर ॥ परि निष्ट पाचक्य, परम पाचक पदुपाचक ।
 राचक नारद प्रहस, देवगुह आदिक याचक ॥ मम भवन विभव
 लखत न कहा, तवन करत खुर महा । वह मनुज मात्र वपु विदित
 है, वर राक्षस भक्षण रहा १५ ॥ अङ्गद उवाच ॥ रेरे रावणहीन, दीन कु-
 मती तव दरशत । रामहिं मानत मनुज, पूज्य याचक चय परशत ॥
 कहां नदी सुरनदी, कहां गज ऐरावत गज । रवि हय है हय कहां,
 कहां परजापति है अज ॥ रम्भा कहां अबला कहां, युग गिनती कृत-
 युग कहां । किलकाम धनुषधारी कहां, कावानर हनुमत महां ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीतुलसीदासिहजीविल्लापितकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावलाङ्गदयो
 रुत्तरप्रत्युत्तरवर्षेर्नानपद्दिविशोक्ताः ॥ २६ ॥

अथ प्रश्नोत्तर ॥ रावण उवाच । पदपदछन्द ॥ कोतू किहिको सुवन,
 यहां आयो किहि कारण । विष्टपविजयी पृष्ठ, ताहि तृणसम कियो
 धारण ॥ अङ्गद उवाच ॥ वाली तव बलमथन, पुत्र अङ्गद अभिधाना ।
 आयो अबल सुबेल, दूत खुर जगजाना ॥ बहु बार बार समुक्ता-
 यकै, कहत तोहिं जड़मति अजहु । जानकी देहु जगदीश को,
 किंवा मस्तकतति तजहु १ ॥ रावण उवाच । सोरठाछन्द ॥ धिक धिक
 अङ्गदजान, जाने तव माख्यो जनक । बीरवृत्ति निर्मान, दूत होय
 अरि लजत नहिं २ ॥ अङ्गद उवाच ॥ युक्ति कियो श्रीभाम, जानेमम
 माख्यो जनक । शास्ति त्रिलोकी धाम, कृत्यकाज सुदुरात्मन ३ ॥
 रावण उवाच ॥ राम कहा कृतकाज, यहै चित चाहत चीन्हो ॥ उत्तर
 दिप युवगज, अम्बुनिधि बन्धन कीन्हो ॥ रावण उवाच ॥ लङ्कानाक
 निकाय, वेरि बसती नहिं जानत । अरु अतरल बल मोहिं, मना-
 कहु नहिं पहिंचानत ॥ तव कहि अङ्गद जानत सबै, पै तुम्हरी नहिं
 बत है लङ्का धिराज वह विभीषण, विदित वीर विहय त है ४ ॥

रावणउवाच ॥ व. नर बांध्यो सेतु, लखी कौनसी बड़ाई । गिरिसमान
 बलमीक, पिपीलिक बिरचितपाई ॥ लङ्कइही हनुमन्त, याहुमें नहि
 अधिकारै । दाहक अग्नि स्वभाव, बिदित जगजन सबठारै ॥ आ-
 श्रय शौर्य निज भुजनको, राम अपर किंचित कियो । युवराज वही
 वर्णन करहु, सो सुनिबे हुलसत हियो ५ ॥ अङ्कउवाच ॥ तिहि तिय
 निकट नितान्त, धिरीकृततनु चित बिलसी । सिय समान सुम्लेन,
 बहिन रावर हिय हुलसी ॥ तिहिकी नासा वसा, खड्ग कीन्हो प्रभु पं-
 किल । खरदूषण त्रिशिरादि, रुधिर करिकै धोयो किल ॥ परियस्त
 नयन तव दर्पइइ, स्वसानाक छेदन कियो । श्रीराम वही बिसरत कहा,
 पिश्व विदित जिहि यशालियो ६ ॥ रावणउवाच ॥ परिमित महिमा
 छुद्र, तितहु कृत शितिधरघटना । तरिकै तुच्छ सगुद्र, लगाई अविरत
 रटना ॥ अकलित महत महत्त्व, डुखइ दुष्पारं परमहै । विंशतिभुज
 दशबदन, विंशती सागर समहै ॥ ते अति अगाध जिन थाह नहिं,
 बृथा परिश्रम करतहौ । सब सिद्ध करहु निज निज निलय, बिना
 मौत क्यों मरतहौ ७ ॥ अङ्कउवाच ॥ रेरे रावण असुर, अग्नि पर
 रावण केते । हमने बारम्बार, श्रवणपुट कीन्हे एते ॥ कार्तवीर्य दो-
 दर्णइ, चण्ड पिण्डीकृत इक है । दूसरगत दैत्येन्द्र, द्वार दासीदतधि-
 कहै ॥ नाचियो नाच गहि कवल तित, तीसर लज्जाजन्य है । इन
 बीच कहहु तू कौन सो, अथवा इनते अन्य है ८ ॥ रावणउवाच ॥
 कुम्भकर्ण मम भ्रात, अखिल अरिकुलसंहारक । कालरूप विकराल,
 कलेवर भवभयकारक ॥ मेवनाद मम पुत्र, पुन्दरबन्धनकर्ता ।
 चन्द्रहास मम खड्ग, सकल शत्रुन संहर्ता ॥ ममहैं सहाय निशि-
 चरनिकर, त्रिभुवनविजयी शत्रु सुर । रावण लसन्त अभिधान
 मम, राजत राजा लङ्कपुर ९ भयेहुते बलवान, महा कपिपति

हैहयति दशकन्धरको कन्ध, प्रतिष्ठा अब छाई अति मद्य विपा-
 टित करउ, कन्दलीकी कसकण करि । अंसस्थलि अब कीर्ण, इभा-
 जिन पखव निज धरि ॥ धूर्जयी भ्रष्टिति प्रस्फोटयत, आनन उचरे
 धन्य है । सम वाली अर्जुन समयते, अब प्रसूदवल अन्य है १०
 बक्षस्थली कठोर, मोर संगरभो सुपति । ऐरावत गजदन्त, मुसल
 उन्नत आहत अति ॥ भग्नभयो मुखकरी, हृदय मम तनक न त्रा-
 सत । अरु हेला उच्छिन्न, अद्रि कैलास प्रकासत ॥ संत्रस्त अङ्गना-
 लिंगने, प्रचुर प्राप्त आनन्द हर । लङ्काधिगज सब ए विदित, गिपुन
 ओर है अन्यतर ११ ॥ अङ्गदवाच ॥ रे रावण हृशूल, मथन प्रख्यात
 पराक्रम । चहत समते युद्ध, युक्त नहिं लखत तोहिं हम ॥ रहनदेउ
 रघुराम, लक्ष्मण कृत धनुरेखा । लंघित भई न तुच्छ, तबहिं तव बल
 सब देखा ॥ उन लघु किंकर लंघित जलधि, पुगी दग्ध अरु अक्ष-
 हत । रण घनवमण्ड तजि दीजिये, मम वचकीजे श्रवणगत १२ ॥
 रावणउवाच ॥ हिरण्यकशिपु हिंसयाप्त, दैत्य ईश्वर भस्माङ्गद । अ-
 वर अमरद्विष सकल, बल कथा तुलित नचाङ्गद ॥ आहुसार मम
 अलं, अलंकृत इन अवलोकत । समता लहत न कोपि, यद्यपि बहु
 विश्व विलोकत ॥ जो रामचन्द्र रिपुहा कहत, भयो प्रिया अमहरण
 अब । अरु संधिजात करवातहै, जानि लियो इहि बीच सब १३ ॥
 अङ्गदवाच ॥ मथन करि मत्त कीड़, कहत कैलास सुपटसुन । शिव
 गहि गहि पुनि देत, तथा रामन रावण चुन ॥ अन्धी बन्धन देख,
 स्वल्प सरइव सरसायो । कपल बन्धु कुलबधू, छरद चह जो सुख
 पायो ॥ हम हितू हेरि हितकी कहत, यामधि न कर अचम्भ है । मम
 जनक दिव्य दोर्दण्ड जय, कलित सुकीरति खम्भ है १४ ॥ मन्तोत्तर ॥
 ३ ॥ के तू वली तनय दूत श्रीरामको । को रघुवर अरु

वानर बाली नामको ॥ बांधि तोहिं चतुसिन्धु सुहूरत मधि भ्रम्यो ।
हरिहां । वह बाली ममतात हीय ते किमि गम्यो १५ ॥ पद्मपदच्छन्द ॥
दोर्दण्ड परच्छण्ड तोर, प्रति हनन प्रबलगति । सहसबाहु भुज स-
हस, सद्य छेदन कृत भृगुपति ॥ परशुराम गर्वापहारि, श्रीरामदूत
हौं । अङ्गद मेरो नाम, पुरन्दर पूत पूतहौं ॥ जब भूरि भ्रमन सूचिञ्जत
लख्यो, जनक घृणा संयुत भयो । पुच्छाश्र बाल सुनिवास दिय,
तदपि तुच्छ विस्मितरयो ॥ १६ ॥

इति श्री. पिपलोक्षपत्तनाधिपालरावतर्जश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नापुरस्य
काविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवराधिलासेरावणाङ्गद
प्रश्नोत्तरज्ञाननामस्तविशो ज्ञासः ॥ २७ ॥

रावणउवाच । चन्द्रायणाङ्गद ॥ बाल तालतरु हने सार्द्ध त्वचते-
हुते । जर्जर जीर्ण पिनाक भङ्ग नहिं अह्वते ॥ हरक्रीडाचल कियो
कन्दुकी क्रीड है हरिहां । सो सुनि सुनि सब वीर होत सबीड है १ ॥
पद्मपदच्छन्द ॥ श्रवण पथन मधि पांच, शूर आवत मम कतिकति ।
साम्य शरणि उल्लंघ्य, जगति जागति लङ्कपति ॥ जिहिं दोर्यण्डल
गाढ़, परम पीड़न बरवशते । रक्कद्वय घनघटा, मनोद्व घातु दर-
शते ॥ अंकुरित करत शङ्का अजौं, शंकर गिरि कैलास है । अङ्गद
अशेष मम भुजन मधि, प्रबल पराक्रम वास है २ मूर्धनिज उत्कृत्य,
हुताशन हुत जवते अति । स्फुरित वही व्याकीर्ण, भाल लिपि
लखि लङ्कापति ॥ होहिं रामते काल, अस्य इति बर्ण बांधि तित ।
अधिक उमंगि शिर आप, असखलित होय चारुचित ॥ प्रभुपद
पिनाकि पीड़ित किये, गिरा जासु गुणगायते । अस लसत लङ्क
नगराधिपति, कवन तास बैगायते ३ इहिं दशमुख बड़बीर, धीर का
बर्णन करिये । प्रबल पराक्रम पुञ्ज, प्रचुर धिय धीवर धरिये ॥ पूजन
काज पिनाकि, करन वह मस्तक माला । सूत्रहेत हरकण्ठ,

विकर्षणकृत वर व्याख्या । तव भृकुगीकी करि सूचना प्रमथ गगन
 प्रतिबोध किय । लङ्केश मानि तिनको कथन, लियो अपक्षिभित हृष
 हिय ४ ॥ कविस्वाच । दोहाछन्द ॥ इहि अन्तर मधि आइ उत, पढत
 बचन प्रतिहार । सभास्तार संदोह मधि, अत्रिक उच सुरधार ५
 प्रतिहारउवाच । पश्यदछन्द ॥ नैप समय अध्ययन, मौन सुल धरहु
 विधाता । स्वल्प स्वल्प संजल्प, गुरो जड़मति खलु ख्याता ॥ नाहिं
 शककी सभा, स्तवनगिरसंहर नारद । पूर्ण करहु स्तुति कथा, तुम्बरो
 गीत विशारद ॥ भल सीता रत्नक भलकरि, भग्न हृदय लङ्केश है ।
 अश्वत्थवत्र इव स्वस्थ नहिं, व्याकुल बुद्धि विशेष है ६ ॥ कविस्वाच ॥
 अङ्गद होय सकोध, कहत एरे रावण सुन । तव मत्थन करि करहिं,
 राम दिग देव बलीबुन ॥ हौं हूँ मारन भोग, तदपि तोको नहिं मा-
 रत । तात कक्ष अवशिष्ट, विदित यह बात विचारत ॥ किलक्रीडित
 तवशिर कन्दुकनि, पद प्रहार अगणित किये । निज कीड़न की
 सामग्रि यह, भञ्जन करि लज्जत हिये ७ ॥ सोरठाछन्द ॥ शत यो-
 जन विस्तार, तिभि तिहिं निगलत तिमिगिल । तिमिगिल गिलहु
 निहार, ताहि गिलत शयव विदित ८ ॥ पश्यदछन्द ॥ अचिरत गल
 दल गलित, ललित लोहित रत धारा । धौत त्रिलोचन ईश, अंग्रि
 अम्बुज बहुवारा ॥ प्राप पिनाकिप्रसाद, मुधाजय महिमा जगमधि ।
 अरु अग्नी उद्धरन, गर्व आरुह हस्तअधि ॥ दश मस्तक विंशति
 करन को, केवल भार उठानभल । किलकर्त्तन फल बहु शिरन को,
 भार उद्धहन भुजन फल ९ सुञ्च सुञ्च मैथिली, रामपहु पदपङ्कज
 भज । करहु राज विरकाल, हविर्भुज होहु अमर त्यज ॥ लङ्कापुर
 प्रतच्छ, पराभव पावन जैसे । उर अन्दर निरधारि, काज वर कीजै
 ऐसे नातर चपेट वानरन की, मृष्टि वृष्टिहू है अमित अतिकू

कीन कुकरम कठिन, तिन सबको फल मिलहिहित १० निरखे नहि
 खुनन्द, प्रथम नहि सुने श्रवण पथ । कीन्हो क्यों न विलम्ब, वि-
 पिन विच हुतो महारथ ॥ थँभ्यो नाहि क्षणमात्र, मार्ग मधि भग्यो
 भयातुर । अजौ न धिरता गही, दशत उर अतिशय आतुर ॥
 अब अखिल मान तजि दीजिये, लियो श्रवण सुनि बालिवध ।
 सीता समर्पि रख बंश निज, दास होहु अधिपति अवध ११ ॥
 रावसउवाच । चन्द्रायणाञ्जन् ॥ हरिपवि पायप्रहार शोथ कछुहीलियो ।
 उर उदग्र गुरुगगन प्रसभ सब पीलियो ॥ सुरश्रीकरणी काज मोर
 भुजवनकियो । अरिहां । अङ्गद दशमुख बीर तोहि विस्मृतरियो १२
 मैंने मेरे हत्थ मत्थ दश छिन्न है । चन्द्रहास आसि किये अखिल
 उच्छिन्न है ॥ गदगद गिर गलिताश्रु नाहिं स्मितवान है । परहां ।
 याके मध्य प्रमान शम्भु भगवान है १३ छिन्धि मोहिं मुहिं छिन्धि
 छिन्धि मुहिं बोल है । पुनरुज्ज्वतन निरखि करत हिय तोल है ॥ नव
 भव आगे इन्हें दशानन काट है । परहां । भूमि पतित शिरहँसन
 लगे अट्टाट है १४ मूल पञ्चशिर पुष्प रम्य स्वना करी । तदुपरि
 लर दूसरी चार मस्तकधरी ॥ दशम कहा यह शङ्क दशम मस्तक
 भई । परहां । धर परिकरि कर परसताइ छेदत सई १५ लङ्केश्वर
 समधीर बीर अतिरम्य है । जिहिके गुणगण गूढ़ गिरादि अगम्य
 है ॥ मत्थ होमि लखि अनल मन्द शिख भीति है । परहां । श्वासा-
 नल सन्दीप्त कियो युत प्रीति है १६ ॥ अङ्गदउवाच । षटपदञ्जन् ॥ वि-
 क्रम मस्तक होम, कथा पौलस्त्य बहुत किय । सारो अङ्ग जलाय,
 देत वैधव्य भीति तिय ॥ अरु शिवगिरि उद्धरन, पराक्रम तुमहिय
 हेरे । रासभखर उट्टादि, भारबाहक बहुतेरे ॥ कछु अपर परम पुरु-
 पार्थकृत, होय वहे बर्णनकरो । बहु बार बार विस्तार किय, अब यह

प्रकरण परिहरो १७ ॥ कविरुवाच । सोरठाञ्जन्द ॥ विदित वीस चष
अन्ध, विंशति श्रवणन करि बधिर । बहन सन्धि सम्बन्ध, अङ्गद
उर ऐमे तुली १८ स्वामी शौर्य सुनाय, पुनि अङ्गद चलितो बहत ।
उचरत शीश धुनाय, बालिसुवन दशशीश सौ १९ ॥ अङ्गदञ्जच ।
पद्मदञ्जन्द ॥ अर्जुन नृप तुहिं बद्ध, विदित कारागृह अन्दर । मुनि
पुलस्त्य तवहेतु, भये याचक जिहि मन्दर ॥ तिहि भुजवन उच्छिन्न,
कार अन्तक क्षत्रिय कुल । परशुराम प्रख्यात, पराक्रम बहुवल
संकुल ॥ श्रीराम तेज बड़वागिकृत, शौर्य सिन्धु तम किय चु-
लक । लङ्केश तोर बज्र तुच्छ सर, दुन सूत्रहि लङ्का मुलक २० रेरे
राक्षसराज, सुंघ सहसा वैदेही । धर्मपति श्रीरामचन्द्र, सत्वर वै-
देही ॥ मिथ्या निज पुरुषार्थ, प्रचुर प्रागल्भ्य रखन उर । बानर भट
बाहिनी, भयंकर भापन तवपुर ॥ इमिकहि कहि अति उतकट
बचन, आतङ्कित लङ्काकरी । निष्क्रान्त भयो युवराज हुत, कहु
दशमुख श्रवणन धरी ॥ २१ ॥

इति श्रीपियलोदपत्तनाधिपानारावराजीश्रीदूकहलिहजीविजापितकवि
टीकारानाङ्गजगोविन्दरामधिरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गद
संवादोनामाष्टविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ हनुमन्नाटकेश्चमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । सोरठाञ्जन्द ॥ निज प्रताप
परचण्ड, चण्ड समर उत्साह करि । परिपूरण दोर्दण्ड, बिलसत पुर
लङ्कापती १ ॥ पद्मदञ्जन्द ॥ मुनिकै दशरथमुवन, सुबेलाचल कट-
कोपर । रावण रण उद्योग, अमित उत्सव निज उरधर ॥ दशकर
धनुटंकार, ककुभ परिपूरण कीन्ही । बहुरि शिलासित विपुल, विमल
विशिखावलि लीन्ही ॥ अवशिष्टरहे दशहत्थतस, तिनकरि चित्रा-
कृति करन । अभ्यशत अङ्गना कुचनपर, पत्रवलि रचना धरन २
तदनन्तर लङ्केश, राजमन्दिर शिखरस्थित मञ्चोपरि आरुह्य

अमङ्गल शान्त है, पुनि आनन गिनि उचरी ६ एक भृगु सुश्रीव,
 प्रथम कपि इतमे आयो । वन वनपालक भञ्जि, अज हति नगर
 जरायो ॥ चलयो गयो चुपचाप, लखि रहे वीरवर्ग सब । किहिते कछु-
 हुन बनी, सकल हे विद्यमान तव ॥ अद इत आयो कपिवल प्रबल,
 उल्लंघन जलनिधि कियो । वे इच्छत उर नहिं आन कछु, चाहत
 चित मैथिलि लियो १० ॥ कविउवाच । चन्द्रावशाब्द ॥ सुनि भन्दो-
 दरि कथन सभय रावण भयो । शुक शारण द्वै दूत पठायन मन
 ठयो ॥ रामदेव के शिविर जाउ आयसु दई । परहां । पुनि निज
 मन्त्रिन सहित स्वहित चिन्तत सई ११ ॥ विरूपाक्ष उवाच ॥ पदपदब्द ॥
 विरूपाक्ष वर सचिव, सुहित वच उचरत ऐसे । संप्रति प्रतिभट उ-
 परि, नाहिं प्रोक्तासन जैसे ॥ सीतारक्षण दद, लक्ष्मण कृत धनुस्वा ।
 नाहिं उलंघी गई, भई विस्मयप्रद लेखा ॥ कपिकटक सहित लङ्कित
 जलधि, राजन राम महान है । उन बैदेही बैदेहि हुन, यामहँ कछु नहिं
 हान है १२ जबलौं नाहिं निहार, राम दशरथ नृप नन्दन । जबलौं
 नाहिं निहार, नयन पाथोनिधि बन्धन ॥ जबलौं नाहिं निहार, निर-
 स्त्रालक लङ्कापुर । कुलाङ्गारता प्राप्त, अनुज सुवरित पवित्र उर ॥
 तबलौं बिचारि असुराधिपति, अनघा सीता अर्पिये । इत होय न
 कोणप कुलकदन, यहि विधि अरि सन्तर्पिये १३ ॥ रावण उवाच ॥
 ये एते ममबाहु, शक्र दोर्दण्ड कण्डुहर । सोहं लङ्कानाथ, सकल
 संसार विजयकर ॥ बांध्यो बानरसेतु, इमहँ श्रवणन सुनिलीन्हो ।
 देखतहो निजनयन, लङ्कगढ़ आयत कीन्हो ॥ जो जन जीवतहै
 जगत मधि, कहा न देखत सुनतहै । ध्रुव धैर्य वीर्ययुत होय सो,
 तित चित अविचल जुनत है १४ विरूपाक्ष पुनि पठत, शक्र शिर
 पर प्रभु आयसु । सकल शस्त्रधर मत्थ, रहत रावरी रजायसु ॥

लखत बानरबाहिनि जित ॥ यह बानर दग्धाश्र, पुच्छ लङ्काविकृती
 कृत । यहै बालिसुत विदित, तस्य आकृति इव बपुष्ट ॥ शरधनुष
 धारि कामाकृती, श्याम होहिं सीतापती । प्रत्येक शत्रु अवलोकि
 उत, मथस्थित उचरत अती ३ तस तिय मन्दोदरी, परमसुन्दरी
 बखानत । निशिवर वन स्वच्छन्द, दवानल राघव मानत ॥ पुनि
 निज पतिको परम, प्रेम सिय प्रति पहिंचानत । चहत विजय निज
 पक्ष, अजय प्रतिपक्ष प्रमानत ॥ वह कबहुँक गृह संचारकृत,
 कबहुँक पति ढिग प्रापहौ । क्षण पावत नहिं एकत्रथिति, अन्तरा-
 लगत आपहौ ४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ बृन्दारक वन्दारुबृन्द अभि-
 बन्दिते । अतिसुन्दर मन्दार माल मकरन्दिते ॥ मन्दिर मन्दिर मध्य
 भ्लानता मञ्जिते । परहां । मन्दोदरि चरणारविन्द रजरञ्जिते ५ ॥
 दोहाछन्द ॥ रिपुविशवण रावणहि, करि करि बहुरि निहोरि । मन्दोदरि
 अति सुन्दरी, कह अञ्जलिपुट जोरि ६ ॥ मन्दोदरिउवाच । पदपदछन्द ॥
 राशिशेखर गिरि आप, बाहु उद्धृत जगजान्यो । कुम्भकरण निज
 आत, जगतभक्षक उर आन्यो ॥ वासवविजयी विदित, सुवन वन-
 नाद तिहारो । तदपि बालिजित बली, राम रणधीर निहारो ॥ इहिं
 अबला छल बल करिहरी, नाथ जानकी दीजिये । निज मन्दिर मधि
 मन्दोदरी, रहसि विनय सुनि लीजिये ७ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥
 मन्दोदरिके बचन सुनि, सुललित लङ्कानाथ । निज भुज आढम्बर
 किये, बचन बहत दरामाथ ८ ॥ पदपदछन्द । रावणउवाच ॥ भामिनि
 क्यों भय करत, भीरु बहु निशिवरनायक । नशिहें रिपु मय
 महत, लेखपति नहिं रणनायक ॥ वन मार्गनगण प्राण, हरहिं
 डेरहु तपसी के । जानहु नाहिं विलम्ब, लम्ब निज उरमधि नीके ॥
 सुनि स्व मि बचन व क्षल सहित, भई सभय मन्दे दरी कहि प प

अमङ्गल शान्तहै, पुनि आनन गिरि उचरी ६ एक भृश सुग्रीव,
 प्रथम कपि इतमें आयो । वन वनपालक भञ्जि, अत्र हति नगर
 जरायो ॥ चलयो गयो बुधचाप, लखि रहे वीरवर्ग सब । किहिते कञ्जु-
 हुन बनी, सकल हे विद्यमान तव ॥ अब इत आयो कपिवल प्रबल,
 उल्लंघन जलनिधि क्रियो । वे इच्छत उर नहिं आन कञ्जु, चाहत
 चित मैथिलि लियो १० ॥ कविरवाच । चन्द्रायणाच्छन्द ॥ सुनि मन्दो-
 दरि कथन सभय रावण भयो । शुक शारण द्वै दूत पठायन मन
 ठयो ॥ रामदेव के शिविर जाउ आयलु दई । परहां । पुनि निज
 मन्त्रिन सहित स्वहित चिन्तत सई ११ ॥ विरूपाक्ष उवाच ॥ पद्मपदच्छन्दा ॥
 विरूपाक्ष वर सचिव, सुहित बच उचरत ऐसे । संप्रति प्रतिभट उ-
 परि, नाहिं प्रोह्लासनजैसे ॥ सीताक्षण दक्ष, लक्ष्मण कृत धनुखा ।
 नाहिं उलंघी गई, भई विस्मयप्रद लेखा ॥ कपिकटक सहित लङ्कित
 जलधि, राजन राम महानहै । उन वैदेही वैदेहि हुन, यामहँ कञ्जुनहिं
 हानहै १२ जबलौं नाहिं निहार, राम दशरथ नृप नन्दन । जबलौं
 नाहिं निहार, नयन पाथोनिधि बन्धन ॥ जबलौं नाहिं निहार, निर-
 स्त्रालक लङ्कापुर । कुलाङ्गारता प्राप्त, अनुज सुवरित पवित्रउर ॥
 तबलौं विचारि असुराधिपति, अनघा सीता अर्पिये । इत होय न
 कोणप कुलकदन, यहि विधि अरि सन्तर्पिये १३ ॥ रावण उवाच ॥
 ये एते ममबाहु, शक्र दोर्दण्ड कण्डुहर । सोहँ लङ्कानाथ, सकल
 संसार विजयकर ॥ बांध्यो बानरसेतु, हमहुँ श्रवणन सुनिलीन्हो ।
 देखतहो निजनयन, लङ्कगढ़ आहत कीन्हो ॥ जो जन जीवतहै
 जगत मधि, कहा न देखत सुनतहै । ध्रुव धैर्य वीर्ययुत होय सो,
 तित चित अबिचल चुनत है १४ विरूपाक्ष पुनि पठत, शक्र शिर
 पर प्रभु आयसु । सकल शस्त्रधर मत्थ, रहत रावगी रजायसु ॥

भक्ति भूनपति शम्भु, रहन लङ्कापुर आस्पद । दुहिणान्वयसम्भूति,
एकते अधिक एकहृद ॥ दुर्लभ हरेक इन गुणन में, सब जनको
सर्वत्र है । बिलसत अशेषहू आयकै, आप बीच एकत्र है ॥१५॥

इति श्रीवरदिलासेरावणविरुपाक्षसंवादे एकोनत्रिशोऽज्ञातः ॥ २६ ॥

रावणउवाच ॥ चन्द्रायणाङ्गद ॥ परिडत मन्त्री शुद्ध बुद्धि बिलसन्त
है । बिल, सीन को रती सचिव सुलसन्त है ॥ मानो मनुज महान
पराक्रमसार है । परहां । तिनको मन्त्री महद एक असिधार है १ ॥
कविरुवाच ॥ मन्त्रि महोदर असिध उचरत यों तबै । सुख सुख मधुरी
बीच लगत प्यारी सबै ॥ व्यासनाधीन धेश धीय उद्योत है ।
परहां । तित निषेध के बचन सुदुख सह होतहै २ प्रियारु मधुरावाच
सदन मधि स्वच्छ है । कर्कश सुनय समेत बचन श्रीरच्छ है ॥
प्रियवादी थिति विभव सुभोजन दान में । परहां । साधु वादि नर
रहे विपतिके थान में ३ जिहिं नियरायो निधन सूकता गुणमहा ।
तदपि भक्तप्रभु मुखर होयके हमकहा ॥ व्यसन पंकमधि मग्न स्वामि
को करतहै । परहां । हैन फेर उद्धरन सूकपन धरतहै ४ नटी पूरखल
प्रीति लक्ष्मी लेखिये । विन कारण द्वेषीन नियति पुनि पेखिये ॥
अरु बनिता सुकुमार उरसि आनो अबै । परहां । अस्थिर यौवन
जगति आप जानहु सबै ५ दत्तोच्चाह अकार्य मध्यहू जेरहै ।
ठकुरसुहाती बात सकल सन्तत कहै ॥ चित्त गृहन मधि चतुर वि-
दग्ध बखानिये । परहां । मधुकर इव कर्णान्त महीपति मानिये ६
दिनमधि पद्मनि प्रभा कुमुदति रैनहै । सन्तत रहत न चैन तथैव
अचैन है ॥ क्रमकरि सम्पद विपद सबहुको प्राप है । परहां । यह उर
अन्दर अवशि आनिये आप है ७ नीति शास्त्र यह त्रिविध धीय
धुवधार्य है । बर्णन किय गुर्बादि अखिल अचार्य है । यहां सुखद

है एक द्वितीय परलोक है । परहां । उभय लोकमधि तृतीय वना-
 नंद ओक है = अतिउत्तम उभयत्र सुखद उर आनिये । पुनि उत्तम
 परलोक मोदप्रद मानिये ॥ अधमाधम आनन्द प्रदायक अत्र है ।
 परहां । तिहिते कारज सरत नाहिं कछु तत्र है ६ स्वामिनिवनकरि
 सचिव शस्त्रविप आदिते । अरु अपनोप्रिय परम करत राज्यादिते ॥
 वहहै ऐहिक शास्त्र पाप सब सूरहै । परहां । तिहिं सुजगर बहुवार
 डारिये धूरहै १० निगम मार्ग उञ्जिन करत जो पाद है । आज्ञा
 भङ्ग महीप क्रिये सो प्रार है ॥ ताके बध मधिलहन जु कलुप अपार
 है । परहां । दिसह सहस्रनाशेप पावत न पार है ११ विन अपराध
 प्रधान प्रभू पीड़ितकरै । तनक न तिहिं वैरुष्य कदा धियमें धरै ॥
 वह आमुष्मिक शास्त्र सुखद परलोक है । परहां । उत्तम उहिं उच-
 रन्त विदुष अवलोक है १२ राज्य ग्रहण सामर्थ्य सचिव मधि है
 सही । तदपि स्वामि बध कदा मनहुं मानै नहीं ॥ वह आमुष्मिक ऐ-
 हिक बचन उचारिये । परहां । उत्तम उत्तम वहै धूत्र प्रिय धारिये १३
 शुक्र शारण तव सचिव युगल ऐहिक कहे । गल बानर वपुधारि
 अजों तितही रहे ॥ आमुष्मिक विरुपाक्ष महोदर दोयहैं । परहां ।
 सीय समर्पहु नतर संगचर होय हैं ॥ १४ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविहापितकविटीका
 रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमहोदरमन्त्रीवाक्य
 चर्यनंनामविशोद्भासः ॥ ३० ॥

कविरत्नाच ॥ बोहालन्द ॥ रावण मय शिरकम्पसह, करत स्वबुद्धि
 विचार । नीति शास्त्र निज श्रवण सुनि, शोधत सारासार १ ॥
 रावणान्तर्गतविचार ॥ कुम्भकर्ण आतावली, राजलोभ मनलाइ ॥ जो
 कदापि यह सुहिं हनै, पहिले पठवौं याइ २ ॥ कविरत्नाच ॥ विरुपाक्ष
 अरु महोदर, विभु अन्तरगत भाव । जानि लियो शिरकम्प कनि,

पुनि पठ सचिव सुभावर ॥ विरूपाक्षमहोदरावृत्तः ॥ बद्ध धर्मनित नीति
 विद, केवल नरपति अप्र । युवराजादिकके निकट, न कह कदापि
 समग्र ४ ॥ पश्यदृच्छन्द ॥ हा लङ्केश्वर नाथ, शुद्ध अधिकारी हम है ॥
 क्रिय लाङ्का अंकुरित, कहा वैरुप्य विषम है ॥ नाहिं सर्पमुख रक्त,
 लखत नहिं दृष्ट कलेवर । तथा न धननृप निकट, न पुनि वित रहत
 प्रजाकर ॥ बहु इव्य दुरधिकारी सदन, ते निजपति प्रति द्वेषकृत । हो
 स्वामि आपनहिं मूढधी, नाहिं उभय हष दृष्ट भूत ॥ चन्द्रायणाच्छन्दः ॥
 दृष्ट सचिव कर अर्पि राज सब भार है । महिपति रहत प्रमत्त सु-
 स्वैर विहार है । जिमि विडाल के अप्र राखि पयपात्र है । परहां ।
 सोवतते नृप मूढ सुसंशय नात्र है ६ ॥ पश्यदृच्छन्द ॥ किये अवनि
 उतखान, तिन्हें रोपत औरै थल । कुसुमित तरु समञ्जुनत, क्षुद्र लघु
 बद्धत नितभल ॥ बाहर कृत कण्टकी, सुतर संहत विश्लेषत । नम्र
 करत अत्युच्च, नीच दुम उच्चसतत कृत ॥ जिमिमाली तिमि महि-
 पालहू, करत रहत चित चिन्तवन । वह चतुर चक्र चूडामणी, नृप
 पावत आनन्द धन ७ ॥ दोहाच्छन्द ॥ संग्रह करत अशुद्धहू, यद्यपि
 महिपति शुद्ध । कछु कारज बरा होयकै, मदत प्रदाइ विरुद्ध = क-
 चित प्रयोजन हीनहू, देत प्रयोजन पूर । इत प्रमाण निज इष्टसुर,
 शङ्कर जान जहूर ६ ॥ पश्यदृच्छन्द ॥ सकल सुशक्ति समेत, सदा
 शङ्कर समलंकृत । यद्यपि जीर्ण क्रिय जहर, तदपि मस्तक सुधांशु-
 धृत ॥ क्रिया भस्म कन्दर्प, तदपि गिरितनया धारत । सुरसरिता
 शिर धारि, भाल दृग अनल दवावत ॥ नित नृपति नीति मधि
 निपुण शिव, संतत तव रक्षाकरौ । जग विदित बिरोधी वस्तु बहु,
 काज निरखि संग्रहधरौ १० दिपत दिग्म्बर देव, धनुष धारण किहि
 कारण धरौ शस्त्र जो हस्त, क्यों न क्रिय भस्म निवारण धरी

भसित तौ काहि, अंगना रखत निरन्तर । रखी प्रिया तो काहि, काम
 ते द्वेष करत हर ॥ अन्योन्य विरोधी कर्म मधि, निरतनिरखि निज
 नाथको । वपु अमित शेष भृङ्गी भयो, गावत स्वामी गायको ११ ॥
 चन्द्रायणाङ्क ॥ नृप दुर्योधन नाम भविष्यति अग्र है । ब्राह्मण मन्त्री
 भीर द्रोण सुजदग्र है ॥ तिहि के वचन उलंघि वहे भविता क्या ॥ ररहां ।
 नाहिं निशाचर नाथ हूजियो तुम तथा १२ ॥ कविरुवाच । दोहाङ्क ॥
 इमि कहिकै मन्त्री निखिज, निज निज गये निवास । रावण मन्दो-
 दरि सहित, वितरत विदुल विलास १३ कीन्हो गवन अशोकवन,
 असत जानकी यत्र । रावणसो मन्दोदरी, कहन लगी कछु तत्र १४ ॥
 मन्दोदरि उवाच ॥ मम अरु मैथिलि वपुष विच, भासत कितनो भेद ।
 सो निज बुद्धि विचार करि, उचरहु आप अखेइ १५ ॥ रावण उवाच ॥
 चरवैङ्क ॥ तव तनु गंध मनोरम मीन समान । परिमल सीय कलेवर
 कमल प्रवान १६ विलग न मानहु प्यारी मन सुनि बैन । रूप
 अनूपम उभय न कछु भिद हैन १७ ॥ शब्दालंकारेयमकालंकारः ॥ सीता
 धर्मधुरीणारामन योग । सीता धर्मधुरीणारामन योग १८ ॥ कवि-
 रुवाच ॥ मन्दोदरि सब सुनिके रावण बोल । कसन लगी निज जिय
 मधि लङ्का तोल १९ ॥ चन्द्रायणाङ्क ॥ पाप कथा मधि मगन विभी-
 पण भ्रात है । कुम्भकरण प्रस्वाप बीच दिन रात है ॥ अधिमानी
 असुरेश निमग्न कलङ्क में । परहां । लङ्का दूवत हाय अपरमित कम्प
 में २० ॥ कविरुवाच । दोहाङ्क ॥ तदनन्तर तिहि ठौरते, भये सकल
 निष्क्रान्त । ठांह ठांह बरखान करत, असंभवित वृत्तान्त ॥ २१ ॥
 इति श्रीपिपलोदपस्तनादिपालरावलजीश्रीदुलहसिंहजीविलापितकविटीकारामाङ्क
 गोविन्दरा मविरचिते श्रीचरविलासे मन्त्रिवाचयन्तामैकविशोद्धारः ॥ २१ ॥
 अत्र हनुमन्नाटकेन वमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदङ्क ॥ तदनन्तर
 लङ्केश, सानुवर मन्दिर सुन्दर करि प्रवेश उचरत, उई इच्छा उर

अन्दर भौ अनुजीवी मोर, अखिल सुनि लेउ बचन मम । माया
 रचन प्रपञ्च, कियो चाहत है चित हम ॥ मन रुचै देव सो कीजिये,
 इमि असुरन उत्तर दियो । सो सुनि सुख सरसावन लग्यो, रावण हर-
 पावन हियो १ तक्षण रजनिचरेश, राम सौमित्री भयहुइ । माया बिर-
 चित किये, रूप ललिताइ परतचुइ ॥ गलद बिरलरस्तधार, प्रेत परि-
 यस्त नयनबर । जनकनन्दिनी निकट, कटिति धर कटे अग्रधर ॥
 शिर युगल जोय युगभ्रात के, सजल नयन हुव जानकी । सुधिई
 कछु न सयानकी, बिसरिगई गतिप्रानकी २ अहह निमी नरनाथ,
 नन्दिनी गद्गद बयनी । चुवत चारु चषनीर, फुल्ल नवनीरजन-
 यनी ॥ स्वामिमरण भयभीत, उच्चरत आनन सीता । हृदय दहन
 नहिं दहत, मृत्युनापिच नहिं नीता ॥ हा राम रमण संकट शमन,
 हा लक्ष्मण यहका भई । अतिशूबीरता धीरता, रावर सब कितको
 गई ३ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामचन्द्र शिर कमल टिग, बहुविधि
 करत विलाप । हा प्रभु पीतम हा रमण, विश्वबीर बर आप ४ ॥
 सीतोवाच । षट्पदछन्द ॥ सुललित सरयू नीरु, तीर बनार कुञ्जपह ।
 कामकेलि कमनीय, मध्यवर बद्धत बचन वह ॥ सुमधुर अधरम-
 दीय, पान पीयूषभणततित । भयोशीर्ण परिपूर्ण, गयो सब उहिं
 प्रभावकित ॥ जिमि अम्बर बिनशत अर्कतम, तिमिकरिये अरि-
 गणहनन । मम देखि देखि अति दुर्दशा, मनमधि कछु कीजै
 मनन ५ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ शिर विलोकि सिय उर बिह,
 शोक मोह अरु कोह । प्रेमाकुल व्याकुल व्यथित, दुसह दुःख
 सन्दोह ६ रावण मधुरालाप करि, देत विपुल बिश्वास । तिन्हें
 सीप्रतनकन सुनत, रही न जीवन आस ७ ॥ सीतोवाच । षट्पदछन्द ॥
 चञ्चत प्राण परित्याग, कइत करुणामय बचना । पीतम प्यारे प्राण,

नाथ कैसी यह रचना ॥ उत्तर क्यों नहीं देत, बदन बारिज मधु-
वानी । नयन निहारत नाहिं, कहा मोको न पिछानी ॥ वर विबुध
बधू बल्लभभये, विसरिगये सुधि मोरसव । आलिङ्गि मत्थ हंसा
उड़हि, इहि अवसर अविलम्ब अब ॥ कविरवाच ॥ इमि कहि
मस्तक कमल, जवै आलिङ्गन लागी । गगन गिरा गम्भीर, भई
करुणारस पागी ॥ नखलु नखलु यह सीय, राम भूपाल सुकुट्मणि ।
समर शिरसि नहीं बध्य, तोरप्रिय कदा काहुक्षणि ॥ मतपरसमात
इहिं माथ को, धारहु धिय निरधार है । हाहर हर हर हरभक्त को,
यह माया अवतार है ६ ॥ कविरवाच । दोहाछन्द ॥ असु अकाश
बाणी सुनत, रावण युत युग मत्थ । करि अम्बर उत्पतन हुत, किय
निष्क्रमण अकत्थ १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ संयुत लज्जा हर्ष भई
तव जानकी । इक शरमा राक्षसी पियारी प्रानकी ॥ तासों वृ-
भक्ति सीय यहै अद्भुत कहा । परहां । प्रयुत्तर वह देत होय सक-
रुण महा ११ ॥ शरमोवाच । दोहाछन्द ॥ तू नहीं जानत जानकी,
रावण माया रूयात । भयजिन आनहु भामिनी, जीवत रामस-
भ्रात १२ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ काहल मर्दल आदि कुलाहल होत
है । सज्ज तुरङ्ग महेशननाद उदोतहै ॥ आकर्ण्य आकर्ण विलो-
चनि वार्त्त है । परहां । राम समागम शोर निशाचर आर्त्त है १३ ॥
षट्पदछन्द ॥ विरम विरम कोपते, कहा अपमान बिचारत । रावण
सतनय बन्धु, विमर्दन रघुवर धारत ॥ इन्द्रनीलमणि नील, राम
कोमल इन्दीवर । करिहै त्वदधरपान, कोमलाङ्गी जु निस्तर ॥
सुनि शरमा के वर बचन इमि, जियजानी पिय जियत है ।
तनु बिरह ताप मेठ्यो सवै, लज्जित हिय क्षण कियतहै १४ ॥
दोहाछन्द । पहिले लखि तस्यान्तमच, कढ़े न पापी

पान । अभिप्राय यह आनि उर, मैथिलि लज्जावान ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालराजतजीश्रीदूलहसिंहजी,विज्ञापितरुविटीका
रानाङ्गजगोविन्दरात्राविरचितेश्रीविरविज्ञासेमायामस्तक
निर्माणनामद्वात्रिशोक्कारः ॥ ३२ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ भिन्नमार नाराच भयो असुरेश है ।

पुनि अशोकवाटिका कियो परवेश है ॥ परिवृत्त मुरसुन्दरी अभित
सन्दोह है । हरिहां । द्विय विकार सिय करन महामन मोह है १ ॥

रावणउवाच । षट्पदछन्द ॥ अस्मत् चण्ड चपेट, घात स्वर्दन्ति पतित

है । कुम्भत्थल अतिथूल, रक्त सुतियततितितहै ॥ तिनकरि अचित

अग्नि,उरत्थल अविगत इनके । तव पदपंकज निकट,नमत अलिनी

शिर जिनके ॥ जानकी अद्य अत्रलोकिये, भामिनि भाग्यावलि

भली । इकसंग अहो इतआपकी, सतीचरित बल्लीफली २ लख

मैथिलि मम मत्य, इन्है शङ्कर शिरधारे । पद संश्रितते भये, अबै

इतआइ तिहारे ॥ कहां अवज्ञा करत, रस्त करभोरु विनय सच ।

सुनि सुनि सभय सकोप, भई परतिय लम्पट वच ॥ बैदेहि बदतरे

मन्दमति, शिवोत्तीर्ण निर्माल्य सब । धिकतोहिं तोर आननन

धिक, हे अतिशय अस्पृश्य अब ३ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ सिय

साध्वी सुन्दर वचन, अक्षर अलप अमोल ॥ रत्नाकरि हेरावरी, टा-

रहि विघन अतोल ४ ॥ रावणउवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ हूहे भोरम्भोरु

त्रिदश सुखम्लान है । स्थाता स्वामि राम न सङ्गरथान है ॥ सैना

शास्त्रामृगी विपद पुनि प्राप है । परहां । पठाक्षर परलोपि अर्थ थिर

थाप है ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ काहि अवज्ञा करत, यहै दशमुख तव पद-

नत । जबै किये शिरछेद, तबै मोप्रति इमि उचरत ॥ रेरेरे ल-

हैश, छेदि हमको शंकरते । मत मांगहु वरदान, न कबूहै मङ्गन

नरते ॥ अरु हरदूते ऐमी कही, गुहसोयन जिन देउ बर । जउतउ

सङ्कुद्ध शिरधरो, शिव इहिविधि रावण असुरवर १ राम अर्द्ध चित्त
 सीय, अर्द्ध चित्त रावण अन्दर। आधे में बिहागि, अर्द्ध रोपानल
 मन्दर ॥ शीत दाह है एक, अपर अति उष्ण दाह है। दग्ध करेजा
 भयो, जानकी तो ग नाह है ॥ अर तात आश उर छंडिये, मोमधि
 मानस मण्डिये। जिन देह दुसह दुख दंडिये, हिय दृढ़ हठ खलु
 खण्डिये ७ सुग्धे मैथिलि चन्द्रबिम्ब, सुन्दरसुखि सीते। औपव प्राण
 प्रयाण, प्राणरख प्राणपिरीते ॥ मन्मथ नदी मुगाक्षि, असुन ईश्वरी
 रक्ष अत्र। मुञ्च मुञ्च मुञ्चाणु, उरतियत यह आग्रह सब ॥ वह मनुज
 राज्य करि रहित नर, रामचन्द्र है एकमुख। हौं असुरनाथ निज-
 धान धित, इत गहि है दशबदनमुख ८ ॥ जानक्युवाच ॥ चुपहु
 चुपहु असुर, मुत्रा जल्पित नहिं कीजै। भेरे निश्चय वचन, बीस
 श्रवणन सुनिलीजै ॥ उत्पल श्यामल कान्ति, रामभुज भिगहिं
 कण्ठमम। बिंशति पाणि कृपाण, कगहिं हन्तन निर्दयतम ॥ इन
 उभय बातते तीसरी, तीनक ल मधिहोहिना। बड़ विंशति गल्ल
 बजाइ कै, बचन सुनावहु मोहिना ९ ॥ दोहाचन्द्र ॥ मोर निरन्तर
 ध्यानधरि, राम लियो मद्रूप। तैसे तवकुल कदनको, ममनिरखहि
 तद्रूप १० ॥ कविस्वाच ॥ रावण भो निष्कान्त तव, सुनि वैदेही
 बैन। निज मन्दिर अन्दर गयो, चढ़त न कित चित्त चैन ११
 कछुक समय तित बित्तह्यो, पै न चैन मनरञ्ज। पुनिसिय दिग
 जावन निमित्त, विरचत महा प्रपञ्च १२ ॥ पद्मचन्द्र ॥ नाना वा-
 दित वजत, तुँग स्पंदन गज गजत। कपि भटकटक सु भुजा-
 स्फाल कोलाहल छजत ॥ रघुवर विजय वजाय, कियो पूरित लङ्का-
 पुर ॥ रामरूप गहि बनअशोक, प्रति गयो उमँगि उर। लिय पञ्च
 पञ्च शिरक युगल, निशिचरपति के पत्र रिकत्र ॥ जानकी हेरि

हरपित भई, मानि मनसि निज स्वामि सच १३ ॥ चन्द्रायणाञ्जन्द ॥
 लङ्का भट रघुनाथ बेवबर धरिलियो । जनकात्मजा समीप गौन
 तूरन क्रियो ॥ नामलेत व्यभिचार हीय जिहिं हटतहै । परहां ।
 रुरधारि रघुवीर कि दुर्वट घटत है १४ निरखि निरखि निमि नृ-
 पति नन्दिनी नैन है । रघुनन्दन बरबेष विराजत ऐनहै ॥ भामिनि
 भय तजिभई सहर्षित हीय है । अरिहां । रुचि करि तासु समीप
 गई शुचि सीयहै १५ ॥ कल्पवृक्ष ॥ निरखि राम साक्षात, भविति
 कुचतयी भारनत । तदपि तूर्ण उत्थाय, अग्रचलि गई सीय तित ॥
 प्राणनाथ हों धन्य, रजनिचर मस्तक तजिये । शान्त होय विर-
 हागि, गाढ़ आलिंगन सजिये ॥ इमि मिलि न मनोरथ मैथिली,
 करन चही किंचित जबै । वह रामवेषधारी असुर, भयो क्लीब तत्क्षण
 तबै १६ ॥ चन्द्रायणाञ्जन्द ॥ सीतासती समीप निशाचर खरड है ।
 सत्वर भयो विशीर्ण जासु मण्डिरड है ॥ इच्छामात्र करन्त यहै
 फल प्रापहै । परहां । शिव शिव अन्तर्ज्ञान असुरपति आप है १७ ॥
 कविस्वाच ॥ कह शरमा जानकी यहै नहिं रामरी । रावण असुर-
 धीश सुमाया ग्रामरी ॥ सीय भई सबिषाद उचारत बैन है । परहां ।
 परिहै किमि पहिंचान सु नीरजनैन है १८ ॥ जानक्युवाच ॥ हा
 हाहा आकाश धरणि हा बरुण है । हाहा वायो अर्क करहु मम
 करुणहै ॥ रहिहै कौनप्रकार आत्मगत धर्म है । परहां । परिहै किमि
 पहिंचान प्राणप्रिय पर्म है १९ ॥ कविस्वाच ॥ तव बाणी आकाश
 अपल ऐसीभई । चतुरशिरोमणि सीय सिन्दाणी यह सई ॥ राम
 सराहत राक्षसेद्र रण सोयहै । परहां । जुम्बहि मन्दोदरी ताहि अति
 रोयहै २० तव परिहै पहिंचान सिये तव पीय की । शमन होयगी
 दुसह दुःखतति हीय की ऐसे सिय समभाय गगन गिर चुपरई

परहां । मैथिलि मानस मध्य सकल दुविधा गई २१ ॥ कविस्वाच
 दोहाछन्द ॥ रावण निजकेली सदन, थितहुइ करत विचार । मया
 प्राप्त रामत्व पुनि, कियतस चरित प्रचार २२ ॥ रावणउवाच ॥ पाप-
 मूल प्रवृत्ती विदित, निपट निरुन्धन कीन । कौन समयमधि क्लीव-
 पन, दुष्ट दुसह दुखदीन २३ ॥ पदपदछन्द ॥ जनस्थान मधि भ्रान्त,
 कनक मृगतृष्णा हतभिय । बचन सो वैदेहीति, साश्रु प्रतिपद प्रज-
 पित किय ॥ कीन्हों लंकाभर्तु, बदन परिपाटी घटना । मया प्राप्त
 रामत्व, कुशल वसु तासु निकटना ॥ इहि मध्य श्लेषत्रय चीनहै,
 प्रथम कीनरावण रचन । पुनि द्वितीय राम प्रवचन पठत, तृतीय
 काहु भिक्षुक वचन ॥ २४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधियालरावतजीश्रीकूलहंसिहजीविद्यापितकविटीका-
 रामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरचिलासेरावण-
 प्रपञ्चोनामत्रयार्द्धशोक्ताः ॥ ३२ ॥

अत्र श्रीहनुमन्नाटकदेशमोहः ॥ कविस्वाच । पदपदछन्द ॥ गिरि सुबेल
 थित कटक, बीच रघुराज विराजत । सहित भ्रात सुग्रीव, विभीषण
 युत छवि छाजत ॥ लङ्काधिप प्रतिजाय, जबै अङ्गद उत आयो । विद्यु
 बल्लभ वैदेहि, वाहि निज निकट विठायो । युवराज दूत वर्णन करहु,
 है संधी उपकारिणी । दशग्रीव निकट तुम्हरी गिरा, भइ अथवानुप-
 कारिणी १ ॥ अङ्गदउवाच ॥ अङ्गदयुग करजोरि, अरज कीन्हीं यहि
 रीती । अनुपकारिणी भइ, पुलस्त्य पोते परतीती ॥ उदाहरण
 हरिणाङ्क, भाल तिहि गुरु भव भाषत । उक्ताथ अरु अस्थि, गाल
 भूपण परकाशत ॥ अरु अङ्गराग भल भस्म जिहि, लसतवल्ल गज-
 चर्म है । एकालयस्थ धनपति सखा, जस गुरु तस शिष धर्म है २ ॥
 कविस्वाच ॥ सुनि विहँसे रघुनन्द, हुकम पुनि ताहि सुनायो । श्री
 अङ्गद युवराज, समरवर अत्रसर आयो ॥ सब सैनिक सुग्रीव,

दीजिये आयसु ऐसे रहे शर्वरी बीच, सकल सागध डूइ जैसे ।
 पुनि प्रात प्रभाकरके उदय, संगर उत्सवहै महा . तब कहि तथास्तु
 तारातनय, कपिन कपिन कपिवरकहा ३ सरस शर्वरी समय, राम
 लक्ष्मण दोइ भ्राता । कियो कटकमधि शयन, तहां त्रिभुवनजन-
 त्राता ॥ शवण पठई प्रबल, प्रभञ्जनि नाम एकसी । छाई छलबल
 सकल, बकी मद अन्नक छाकसी ॥ निर्भरशयान लखि राम को,
 तत्क्षण छुरिका करलई । गुरुभ्रमण सुदर्शन चक्र लखि, चकित-
 बराकी तकिरई ४ ॥ कविद्ववाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ तिहि अवसर प्रति
 बुद्ध सु अङ्गदबीरहै । प्रभञ्जनी अधिगम्य सुअधिक अधीर है ॥ पुन-
 र्गतुमुद्यता गर्वगति गोपहै । परहां । तब अङ्गद उच्चरत बचन साठोप
 है ५ ॥ अङ्गद उवाच । पदपदछन्द ॥ तिष्ठतिष्ठ निशिचरी, क्षणक रहिजाउ
 अत्र है । फिरि जावहु निज स्वामि, असुर अधिपाल यत्र है ॥ आई
 अङ्गदबाहु, पाशमधि आकन्दत अब । हरिणी सिंहाधीन, तासको है
 त्रातातब ॥ इमि कहि उहि अभिमर्दनकियो, भैरवरव चिकार कियो ।
 सो सुनत सकलकपि कटकके, जागिउठे अकुलायहिय ६ ॥ कविद्ववाच ।
 चन्द्रायणाछन्द ॥ अरूपार इव पार यामिनी पायकै । प्रात होत कवि-
 त्रात चले सब धायकै ॥ दोर्दण्ड आस्फाल केलि अभिनीय है ।
 अरिहां । उतपाटित साठोप शैल, कमनीय है ७ ॥ दोहाछन्द ॥
 गिरिवर तरुवर धरिकर, करि कोलाहल चण्ड । लङ्का कीन्हीं
 आकुलित, वानर ओत्र उदण्ड ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ लङ्कामधि लङ्केश
 उदय रबिहोतही । सुनिवानर बाहिनी कुजाहल श्रोतही ॥ अमरप
 मूर्च्छित होय सुभट बुलवायहै । परहां । दीन्हों उतकठ कटक म-
 टिति पठवायहै ९ लङ्काचल शुभशिखर मञ्जित आप है । मन्त्रि-
 महोदर पुरोभ ग महि थ प है । रघुवर बरव हिनी बिलोकन मानहै ।

परहां महिमा महद महान करत अनुमान है १० जलनिधि खेलत
 हुते इतै बानर सबै, यातु गान की फौज उतै अईजवै ॥ लीन्हें भक्ति
 उखारिबृक्ष बहु वृन्द है । परहां । क्षण मधि कियो निकन्द निशाचर
 कन्द है ११ सखिव विर्भ पण डरन लगे कपि त्रासते । त्राहि त्राहि
 रघुवीर उचारत आसते ॥ तव तूण हनुमान जितै जावत भये ।
 परहां । सकलहिषे समभाय भेद गावत भये १२ लङ्कामधि लङ्केश
 महोदरते कहै । कव आये इत राम समय सुनिवो चहै ॥ अनिदित
 आगम दिवस मोहिं रघुराज को । परहां । वन्दोवस्त नहिं कियो स-
 मरकेकाज को १३ सीयसमर्पहि राम यही उरआनिकै । मन्त्रिमहो-
 दरनाम सुकहत बखानिकै ॥ बानर वरबाहिनी नयनलखिलीजिये ।
 परहां । रामागम दिनकहत श्रवणगत कीजिये १४ ॥ महोदरउवाच ।
 षट्पदछन्द ॥ धरहिगई नम्रता, धराधर धूजनलागे । भुभित अखिल
 अम्भोधि, करण गिरि कूजनलागे ॥ वरपागमतम बैरि, बधू वरपन्त
 नयनपथ । बाहिनि पदप्रक्षेप, धूलि आञ्छादित रविरथ ॥ लङ्केश
 आप जान्यो न किमि, रामजैत्र यात्रादिवस । भुवधोलधाम धूजन
 लगे, शेषकमठ संकुचित अवस १५ ॥ सपस्या ॥ सूर्योदय के समय
 रुदन चकई कियो ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जयप्रयान रघुनन्दभयो हौ जा
 समै । अतिशय धूलि कदम्ब उड़े हैं तासमै । शशिप्रभ छत्रनिहारि
 नैनफाव्योहियो । परहां । सूर्योदय के समय रुदन चकई कियो १६
 दोहाछन्द ॥ सहायार्थ सुरपतिदिये, छत्र तुग गजआदि ॥ तिनकरि
 शुभशोभित भये, रघुवर राम अनादि १७ ॥ कविरुवाच ॥ पुनि रावण
 धूकनलग्यो, कहहु महोदर कुत्र । किहिं किहिं दिग का का करत,
 रघुवर दशरथपुत्र १८ ॥ महोदरउवाच । षट्पदछन्द ॥ कहत महोदर
 श्रीव, लसत सुप्रैव गोदमें ; अशनिहन्ता अइ, अत्रि बिलसत

विनोदये चारु कनक मृगचर्म, उपरि आखेलाङ्ग वैराजत अनु-
 जार्पित धनुसज्ज, सशरकरधर छ बिद्धाजत अति तीक्ष्ण अक्षीण
 कोणकरि, वीक्षमान तव लङ्कपुर । संदत्तकरण त्वदनुज बचन, राम
 धीर रणवीर उर १६ बद्धसेतु भ्रूमङ्गवन्दि, आवेदित रघुपति ॥ तव
 मातुलत्वधि विष्ट, अनुज मन्त्रनदत श्रुतिगति ॥ बाणदत्त दृष्ट्यर्द्ध,
 लषणलाखि कृतसस्मितमुख । ग्रीवबाहु सुग्रीव, गोदसमर्पित समस्त
 सुख ॥ अरु अङ्गदके हनुमानके, अङ्कनमें अंग्री उभय । लङ्केशनिहा-
 रहु नयनते, लसत राम निजजन अभय २० ॥ दोहाछन्द ॥ गगनगि-
 लित भूमीगिलित, गिलित दशहुदिशिदेख । प्लवंग पुञ्जपीता स-
 रित, सीतापति भटपेख २१ ॥ छमस्या ॥ व्याधसदनसम लसत नभो-
 मण्डलइते ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ देव महा उतपात मध्य दिन पेखिये ।
 क्वचित् मीन कहुँ मेघ दृष्टि दे देखिये ॥ कित लम्बित कृत्तिका, सार्द्र
 मृगशिरकितै । परहां । व्याध सदन सम लसत नभोमण्डलइतै २२ ॥
 कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ साभ्यसूय रावण बदत, अहो महोदर पश्य ॥
 नहिं प्रताप तप सहि सकत, आफताबहू यश्य २३ ॥ रावणउवाच ।
 पदपदछन्द ॥ मम प्रतापतति तीव्र, ताप संतप्त प्रभाकर । पूरव पश्चिम
 जलधि, बीच दूवत निशिवासर ॥ प्रविशति बारिधि मध्य, नाथ
 बैकुण्ठ निरन्तर । निवसत नित हिमगिरी, शान्तिहित सतत त्रिपुर
 हर ॥ क्षणमात्र कमल छोरत नहीं, कमलासन आसन कियो ।
 शिरच्छौनि छत्र लिये शेष, अहि कमठ तासु आश्रय लियो २४ ॥

इति श्रीमत्पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुर्लहसिंहजीविद्यापितकवि-
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणमहोदर-

संवादेनामचतुस्त्रिशोऽक्षः ॥ ३४ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ इतने अन्तरमध्य सुबिपिन अशो-
 कते । शरमा चतुर लुकाइ लङ्कपति लोकते सिय तत्रस्थ

विमान बीच बैठायहै परहां पीतम प्यारे राम दिये दरशायहै १
निभि नृपनन्दिनि नैन कलित कमनीयहै । रामरूप अभिराम प-
रम रमनीय है ॥ उभय न भयो मिलाप सरस शोभाभई । परहां ।
तरु तमाल पर जाय यथा मधु करिछई २ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि पिय
दरश कराय कै, शरमा चतुर सुजान । पुनि अखिलम्बित जानकी,
पहुंचाई निजधान ३ ॥ कविस्वाच । बरवैछन्द ॥ राम कटक बानर भट
लङ्क निहार । करि उतप्रेक्ष अलंङ्गति वचन उचार ४ ॥ बानरमदाछन्दः ॥
जवन कनक प्राकाश रतन डुकूल । त्रिकुशचल वनिता जनु
लङ्कानूल ५ ॥ कविस्वाच ॥ राघण लङ्कामधि इमि वचन उचार ।
अहो महोदर मन्त्री सुनिये सार ६ ॥ रावणउवाच ॥ कुम्भकरण सोवत
है जाहि जगाउ । निद्रा रसिक निरन्तर उहिं इत ल्याउ ७ ॥ कविस्वाच ॥
कहि तथास्तु तित गवनेउ सचिव समस्त । कुम्भकरण सोवत
जित निद्राअस्त ८ करि करि अति उच्चस्वर क्रूपुकार । कर्ण रन्ध्र
मुख धरि धरि किय चिकार ९ तनक न सुनत निशाचर हारे हीया
तत्र तिन प्रति उचरत है ताकी तीय १० ॥ सनस्या ॥ जिहिं गल-
करन्ध्र मधि मशकइव, बानरयूथ प्रवेश किय ॥ कुम्भकशोङ्गनोवाच ।
परपदछन्द ॥ कहा करत उपचार, जगावन कुम्भकर्ण है । किये
सुधारम्बार, शब्दकरि पूर्णकर्ण है ॥ कहु लीजै विश्राम, याहि निद्रा
न तजत है । यहहु आठौयाम, निरन्तर ताहि भजत है । अब अवरै
कवन उपाय बढ, सुनि करिलेउ विवेकहिय । जिहि गलकरन्ध्र
मधि मशकइव, बानरयूथ प्रवेश किय ११ गजाक्रमण अरु घोर,
सचिव चिकार शब्दकरि । जवन न जायो वह कुम्भकर्ण तत्र शङ्क
सकलधरि ॥ अब किहि विधि जागिहै, अमित उर करत अँदेशा ।
विना जगाये कूर, कोप करिहै लंकेशा गन्धर्व यक्ष सुर सिद्ध बर,

किन्नर कामिनि कलितकृत । बरगायन गीतामृत सुनत, भौवि-
 निद्रचैतन्यघृत १२ ॥ कविरुवाच । लोखलखन्द ॥ उत्थापन अवलोक,
 कुम्भकरण बड़ विकटवपु । सभय भये कपिलोक, लखि मारुति
 आशिष बढत १३ ॥ हनुमानुवाच । पदपदखन्द ॥ जिहि जृम्भा
 संभार, भीम भृकुटी तट भागत । कुम्भकर्ण अट्टट्टहास, व्याकोश
 विकासत ॥ अद्भुत बदन बिलोकि, चकित चित प्राणि पुण्यपद ।
 मृदुल मृणाली मिथिल, सुता सँग राजहंसहर ॥ सिन्दूर पूर्व गिरि
 शिखर शिर, शेखर श्रीखुबर बिपल । भय विकटयुक्त कपि कटक
 के, बर निभूतिप्रद होहुभल १४ ॥ कविरुवाच ॥ लङ्कामधि जब कु-
 म्भकर्ण सुसोत्थित दरयो । कवलितकृत पल शैल, जाल तीव्रा-
 सव परयो ॥ तृप्तभयो न तथापि, बचन सुख उचरत ऐसे । गङ्गा
 यमुना सिन्धु सुरापूरित हुवजैसे ॥ तब तृप्तिहोय मेरी कछुक, इतने
 ते का होत है । जिमि तप्तायस जलबिन्दुइव, अधिक अधिक उद्योत
 है १५ ॥ कविरुवाच ॥ निज कटकस्थित राम, निरखि वपु अद्भुत
 ऐसो । लङ्काशिगजिहिं जानु, अङ्ग अम्बरलौं तैसे ॥ वातात्मज ते
 बरत, मारुतेयहै कहा है । अष्टवातु संघटित, किथों यह यन्त्र महाहै ॥
 तब युगलहस्त पुटजोरिकै, पवनपुत्र उचरन लगयो । यह यन्त्र नाहिं
 महाराजजू, कुम्भकरण सौवत जग्यो १६ ॥ चन्द्रायणखन्द ॥ कुम्भकर्ण
 लङ्केश निकट जब प्राप है । सिय अर्पहु यह अभिप्राय उर आप है ॥
 जउ आयसु भित्तिपाल प्रचर सर्वत्र है । परहां । शास्त्रदीप संचार
 करत नृप अत्र है १७ भातृ बचन सुनि कह यथार्थ लङ्केश है ।
 निस्संशय बच शास्त्र सु इष्ट अशोशहै ॥ तदपि न तजिहों सिया यहै
 अभिप्राय है । परहां । बढत बचन सावज्ञ सुनावत ताय है १८ ॥

फाटिकावल उच्छिस्त, शिखर श्रेणी घृष्टाङ्गद

प्राप्त प्रतिष्ठ परम, पी नतर भुज बिलसतहृद सपर सुगन्ध भयद
 कितहु पानन न पराजय । नरव, नरहै कहा तयकसविहेय मो
 जय ॥ अति तोर भुजाडम्बर वृथा, भई त्वदाशा शिथिलसव । अति
 निद्रा बाधतहै तुम्हें, जावहु निद्रानिलयअव १६ ॥ कविव्वाच ॥ कुम्भ-
 करण हुइभीम, भएत भारती भयङ्कर । बलवद्विद्विप शोक, शल्य
 संपूरण परिहर ॥ पावहुनाहिं निषाद, रहहु कल्याण समाश्रित ।
 अहमहमिक या अहं तनक, नहिं तुहिं तजिहों इत ॥ कह काल
 विधाता है कहा, का अरिकुल भयकहा यन । यमदूत कहाको राम
 है, के कर्पीद्रण कुपितमम २० ॥ चन्द्रावलाञ्छद ॥ सुनि रावण सा-
 नन्द बचन उचरत भयो । सुमट संग बतलेउ पराक्रम प्रबलयो ॥
 रण प्राङ्गण अवतरतु वञ्छ उञ्छाहते । परहां । शीतल करिये हीय
 रिपुनके दाहते २१ ॥ कविव्वाच । पद्मदञ्चद ॥ कुम्भकरण साक्षेप,
 यथार्थ तिहिविधि कीन्हो । उरसि अमित उत्साह, समस्वर मारग
 लीन्हो ॥ जिन भाजहु कपिमल्ल, समय हुइकै संगरते । कुम्भकरण
 नहिं भिरत, कदाचितहू बानरते ॥ जउ लघु जलधरको पात तउ,
 स्वल्प सरित नहिं संचरत । पुनि मशककुटुम्बन केशरी, कबहुँनि-
 कन्दन नहिं करत ॥ २२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहासिंहजीविद्यापितकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविखालेकुम्भकर्ण
 रणाङ्गणावतरणनामपञ्चविंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

कुम्भकर्णउवाच ॥ पद्मदञ्चद ॥ नहिं वाली न सुवाहु, न खर त्रि-
 शिरा अरु दूपन । नहिं ताठक अभियान, तथा ताला वह रूपन ॥
 नाकछु सेतु समुद्र, रुद्रधनु ना सुहिंमानो । कुम्भकर्ण ममनाम, काल
 मूरति पहिंवानो ॥ रे रामप्रतापानलकवल, बीर मौलि नरशल्य
 सम संग्राम भूमि विचरत फिरत, के पे तुलत नहिं तुल्यमम १

कविरुच च तदनन्तरउत्पत्य, गगनमधि अबिलम्बित अति बहु
 मूल गहिलियो, लपकि सुग्रीव प्रगपति पुनि भुजकरि रविकण्ड
 देश दृढ पीडित कीन्हो । कुम्भकरण सानन्द, लङ्कपुर मारगलीन्हो ॥
 कपिराज तूर्ण भक्षण किये, कर्णघ्राण अतिहरापिहिय । कूर्पर प्रहार
 करि उदरमाधि, पुनरागमनिज शिविरकिय २ ॥ दोहछन्द ॥ रखत नि-
 रन्तर शूरपन, शूर्पणखा भल भ्रात । भगिनीसम अब इतउतै, आवत
 जातलजात ३ आनन कहा वतायहौ, कपिलै नाक कटाय । जग
 मधि जीवनते जबहिं, लीन्हों हियो हटाय ४ कुम्भकर्ण विन कर्णको,
 बहुरिभयो विन नाक । अब जीवन नहिं उचित है, उचरत गदगद
 बाक ५ ॥ बद्रपदछन्द ॥ लम्बनिसासे डारि, बिलोचन वारि बहतहै । स्वा-
 त्मजलांजलिदेय, चपलचित मरण चहतहै ॥ छेलोकियो मिलाप,
 होय सकरुण लङ्काते । गहि त्रिशूलकर चलयो, समर विरहित शङ्का
 ते ॥ क्रोधान्ध कालसूर्त्तीनयन, प्रलयानल अङ्गरगण । संछिन्नघ्राण
 अरु कर्णयुग, कुम्भकर्ण अवतीर्णण ६ तिहिं बिलोकि संत्रस्त,
 चित्त कपि भूरि भये हैं । जीविताश धियधारि, कितक गिरि कुहर
 गये हैं ॥ केते प्रचलित चरण, बात आकाश उड़े हैं । भ्रमरचण्ड
 दोर्दण्ड, परस पुनि पुहमि पड़े हैं ॥ सुखघ्राण रुचिर चय वमत, तित
 प्राण धरत संकष्टहै । फूत्कार करत अति बाखहु, मनो महा अहिदष्ट
 है ७ ॥ कविरुवाच ॥ त्रिनयनदत्त त्रिशूल, तडित कोटी प्रभुपूरण ।
 मनो केतु संहार, कियो उच्छेपन तूरण ॥ घोर प्रज्वलित महाताकि
 तित उर तारापति । चपलचलायो चण्ड, प्राणहारक अद्भुतगति ॥
 जानकी कन्त जानत सबै, शरकरि छेद्यो बीचते । सुग्रीवसखा निज
 प्राणसम, वचो निशाचर नीचते ८ गहि मुद्गर कपिकटक, बीच घट-
 करण महातुर । क्रोधानल अरु जाठरागि करि भयो क्षुवातुर ॥ एक

कमलमधि लिये, कौटि बानर अति उतकट । बदन मध्यरवि सद्य-
 अदन कृतभट अति उद्धट ॥ कपिचरण पीसिहारे अभित, कर्णरन्ध्र
 केते कटे । पुनि पकरि पकरि चर्वितकरत, दावि दावि दशननवदेह
 सव्य स्वकर करि सान्द्र, शिवि कपिकटक विदारन । विद्यमान वर
 विपुल, वीर बानर बनवारन ॥ घ्राणकरनको हरन, हार सुग्रीव वि-
 लोको । कुम्भकर्ण अतितूर्ण, ताहि उत्तरकर तोको ॥ सम इपु
 विरूप करता, यहै महाबैर मनलायकै । लेखरो चपलललि, गगन
 मग महाधूत धुवधायकै १० अङ्गदलखि निज तान, दृष्ट लेजानल-
 पटिकै । कुम्भकरण प्रतिगयो, वीरवर भूति भूटिकै ॥ गरुडपाम
 करि भुवि, निपात किय अरि अति तूरन । कञ्चु सचेत सुग्रीव, होत
 उतनै उहि पूरन ॥ पापिष्ठ तनक विसरत नहीं, खलु खिसानपन
 खीजको । नरसिंह पास बांधे युगल, काका अवर भतीजको ११
 दुहुँन बद्ध लखि नील, श्रवंग निज अनलरूप करि । कुम्भकरण
 मुख कन्ध, मौलि श्रुति घ्राण उदरभरि ॥ तीव्र ज्वाल किय दाह,
 कुपित है सकल अङ्ग जिहि । विकल भयो कव्याद, कुटिल खल
 कुम्भकरण तिहि ॥ सुग्रीव अवर अङ्गद उभय, बानरेन्द्र प्रोत्थित
 तदा । कपि कटक बीच आनन्द अति, युगल जोय ज्ञायो
 यदा १२ ॥ कविरुवाच ॥ लङ्कावर शिखरस्थ, निहारत रावण रनको ।
 भ्रात जरत लखि सुधा, वारि वरसाये वनको ॥ शीतल भयो श-
 रीर, सचेतन कुम्भकरन है । भक्षण चह नलनील, यथा अहि युग
 सुपरन है ॥ गहि लिये लपकि दृष्ट कपिनको, सब बानर देखतरये ।
 जब जाम्बवान जर्जर जरठ, उग्रवेग आवतभये १३ जाम्बवान
 अति उग्र, बेप विपदा विदरन है । निज भुज गुरु मदयुक्त, निरन्तर
 कुम्भकरन है ज नु बन्ध किय कण्ठ, गाढ़ रचि असुर भिगयो

जिमि गिरीन्द्र दम्भोलि, नील नल युगल छुटायो ॥ तब ऋक्ष-
 राज शिर ऊपरे, सुमन बृष्टि किय मरुतगन । करि क्रोध निशा-
 चर तूर्णतिहिं, कियो गुल्फ आघात तन १४ आलञ्छित सधु-
 बीर, सलक्ष्मण चले मरुतसुत । कालान्तक सम शत्रु, विशङ्कित
 उरजाउतउत ॥ समस्थान अवतीर्य, चार्य बहु धैर्य धुन्धर । रम्य
 रुद्र अवतार, उग्र कपि कटक पुरन्दर ॥ अति अरुण अश्रु नरसिंह
 सम, निजकर पर गिरिवर लिये । किल कलश करण विकरण नि-
 कट, बिकट सुभट हरपत हिये १५ पवनपुत्र पटुपाणि, पद्म पर्वत
 छवि कैसे । मेरु शिखर पर सरस, शोभ मैनाकजु जैसे ॥ कुम्भक-
 रण के करण, मञ्जु सुदूर सोहतहै । मनु मन्दरगिरि अग्र, अजनजन
 मोहतहै ॥ कल्पान्त समरमधि मरुतसुत, गिरिगिराय शिर ऊपरे ।
 सुदूर प्रहार क्रव्याद करि, भूधर पटक्यो भूपरे १६ ॥ दोहाछन्द ॥
 आज्ञनेय करिकोप उत, अञ्जुत दई चपेट । इत सुदूर क्रव्याद को,
 लिय लंगूर लपेट १७ ॥ कविस्वाच । पद्यदछन्द ॥ इहि अन्तर मधि
 राम, विशिख संधान किये हैं । इन्द्रदत्त शर युगल, तीक्ष्ण तिहिं
 समय लिये हैं ॥ कुम्भकरण के निधन, काज रण बीच चलाये ।
 एक हृदय अरु द्वितिय, विशिखशिर छिन्न कराये ॥ नभ नमोनमो
 जयजय धुनी, सब सजनजन शरनभो । लङ्केश बाहुबल हरण
 भो, कुम्भकरणको मरणभो १८ साहति चण्ड चपेट, गिखो मस्तक
 तुहिनाचल । जिहिं कपाल जलमध्य, दूबिहै भीम महाबल ॥ पुनि
 क्रव्याद कबन्ध, पुच्छ गहि गगन उड़ायो । चलयो गयो आकाश,
 पेख पार न कोउ पायो ॥ आनन्द भयो कपिकटक मधि, दुसह दु-
 रित दुख दरणभो । लङ्केश बाहुबल हरणभो, कुम्भकरण को मरण
 भो १९ दोहाछन्द । राम वीर्य अविलाम्बि उर, वरणत लक्ष्मणभ्रान्त ।

उच्चस्वर गम्भीर गिर, कह कवन्धवलुरुघात २० ॥ लक्ष्मणउवाच ॥ पद-
 पदद्वन्द्व ॥ बाजू विबुध विमान, दूर लीजे रविस्वन्दन । असुगधम
 अधराङ्ग, उद्यात्यो अञ्जनिनन्दन ॥ रे रे वानर वीर !, असुगत्रय सुनहु
 बचन मम । रण प्राङ्गण परिहरहु, रहहु एकान्त चहत हम ॥ जनु
 अञ्जनाद्रि प्रतिनिधि अवधि, विस्मापक जु अकन्ध है । आतङ्क हेतु
 लङ्का गिरत, कुम्भकरण कुकवन्ध है २१ ॥ कविव्याच ॥ तनुतेभो उत्-
 क्रान्त, प्रवर सुरबधु लिय भुज भरि । नारदादि संगीत, मधुर मृदु
 सुर जनरवकरि ॥ नहिं विमान आरोह, करत जउ कृप्यमाण है ।
 अभिलाषा उर रही, भर्तृ परित्राण प्राण है ॥ जिहि पुनरपि समर-
 च्छालसत, ध्रुव सङ्गर मधि धीर है । किमि शिव शिव शिव बर्णन
 करै, कुम्भकरण बड़ वीर है २२ लाखि लङ्का शिखरस्थ, बदत रावण
 विस्मय सह । मरुत चन्द्र आदित्य, इन्द्रमुख कृतभुज जहँ रह ॥ उप-
 सर्पत अनुदिवस, भये संतत जिहि मोपर । सकल सुरासुर करि,
 अजेय अविरत लङ्कापुर ॥ किय कोप विकम्पित अधर तट, पुट वा-
 नर भट विकटकरि । अति समाक्रान्त त्रासित भई, शिव शिव शिव
 दशमुख नगरि ॥ २३ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपाखरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविजापित
 कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरचिलासे
 कुम्भकरणवधोनामपद्यत्रिशोक्तासः ॥ ३६ ॥

अत्रहनुमन्नाटकपद्यादशोऽङ्कः ॥ कविव्याच । पदपदद्वन्द्व ॥ रावण भयो
 सकोप, तूर्ण सम्पूर्ण सेनसह । समरयज्ञ अध्वर्यु, इन्द्रजित अङ्गज
 किय बह ॥ कुम्भकरण बध अकनि, भयो आमर्ष विमूर्च्छित । सीता-
 पति वधबद्ध, लक्ष अवतीर्ण समरजित ॥ इत लक्ष्मण धनु गुण
 सज्जकरि, टण्टकार धरणी भगन । आपूरित कोपानल प्रबल,
 जगला बलिमाला भगन १ सूनासीरजित तितै, लपण नासीर

अग्रहत । लङ्का लङ्कापाल, सहित किय करण कवल चित मे-
नाद लखि लक्ष, बचन मुख उचरत ऐसे । अल्पहु कारण नाहिं,
कोप करियत इत कैसे ॥ थिर शुद्ध बुद्धि विन हेतु नहिं, कृपाक्रोध
किलकरतकव । कृत संचित चञ्चल चितै नर, नेह कोह विन काज
सब २ हरि विजहत संत्रास, भिन्न शक्रेभ कुम्भयल । लज्जा पावत
विशिख, तिहारे बपुष क्षुद्रबल ॥ तिष्ठ तिष्ठ सौमित्रि, त्वमपि नहिं
क्रोधपात्र है । मेवनाद मम नाम, बज्रसम अखिल गात्र है ॥ भ्रूमङ्ग-
मात्र नियमित जलधि, रामचन्द्र रघुवीर है । अति तूर्ण ताहि हूँदत
फिरत, वह मम संगर धीर है ३ अञ्जनिमुत सुग्रीव, नलाङ्गद नील
प्रमुख कपि । घन घमण्ड यित मेवनाद नहिं लखत किंचिदपि ॥
दियो बरफ वर्षाय, विपुल किय अन्धकार है । करत घोर शरघात,
निरन्तर बारबारहै ॥ अधिरुह्य महद माया सुरथ, नभ थल यित गम्भीर
गति । करि काल जलधि धुनि गर्जना, रावण बाल कराल अति ४ ॥
दोहाछन्द ॥ यथामेरु मन्दरगिरी, वासव बज्र निपात । नागपाश शर
बद्ध तिमि, राम लषण युगभ्रात ५ ॥ लमस्या ॥ चन्द्रउदित चित च-
कित, मुदित मन निर्तत चकई ॥ रोलाछन्द ॥ इहि अन्तर मधि पूर्व,
बैर सुमिरण किय कोकी । सरवर यित वह दशा, भ्रात युग नयन
बिलोकी ॥ शापतहौ मम दयित, राम रावनि हततकई । चन्द्र उदित
चित चकित, मुदित मन निर्तत चकई ६ ॥ पदपदछन्द ॥ बन्धन दश-
रथ नन्द, अकनि रावण आयसुदिय । सुमन विमान विठाय, बता-
बहु पिय देवरसिय ॥ कहि तथास्तु लेंगई, निशाचरि शरमा तित
को । राम लषण युग बन्धुबध यित रण मधिजितको ॥ द्रुत देखि
दुर्दशा दुहूँनकी, जानकि जिय शोचनलगी । बर बारिज से युग
नयन ते, नीर निचय मोचन लगी ७ भार्गव गौतम च्यवन, शिष्ट

कश्यप वशिष्ठ मुनि । लोमश कौशिकप्रमुख, गिरामुख ज्योतिष
 मत मुनि ॥ मुनि समीप आपके, मग्न चूचुका जिहिं तियतन ।
 संतत सधना रहैगहै, कबहुँ न विषयापन ॥ ते त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ
 ऋषि, सत्य बचन बक्ता सबै । तिन आशिष किमि मिथ्या भये, उर
 अचरज आवत अबै ॥ चन्द्रायणाच्छन्द ॥ हा प्राणेश्वर राम फुरत सब
 अङ्गहै । बाहु नयन नहिं अनृत अशेष अभङ्गहै ॥ तनक नाहिं
 सुखदेत माधुरी दृष्टिमें । परहां । मुजबिलास लुकि रह्यो कहौ किहि
 सृष्टि में ६ मात तात अनुजातरु अग्रज मानिता । मनसि तनक
 मुदलेत सकल सन्मानिता ॥ पावत परमप्रमोद किंचिदारवा-
 सिता । परहां । जिमि स्मणीय स्मणीय स्मण विश्वासिता १० ॥
 षड्दण्डच्छन्द ॥ प्रत्युत्तर नहिं पटल, प्राणपति पीतम प्यारो । हाहा ल-
 क्ष्मण बन्ध, मोर अपनयन निहारो ॥ स्मृ भयेहौ कहा, कलुक उत्तर
 चाहत हम । भूरि भूभ्रमण कीन, कज्ज मम भयो भूरिश्रम ॥ अब
 स्वर्ग सकल अवलोकिये, सिद्ध करत किमि भ्रात युग । दुर्दशा
 देखि दुहि बीरकी, उर अन्दर अतिशय तरुग ११ लखि है नहिं
 दिविलोक, मोहिं विधिलोक सिधैहै । विना किये मम शोध, उभय
 कितहुँ न थितिपैहै ॥ कीजै प्राणप्रदान, स्वर्ग मधि संगम दीजै ।
 कहा निहारत राह, प्राणपति मारग लीजै ॥ लखि इमि अचेत
 अति जानकी, शरमा समभावत तवे । वैदेहि बहत कह वावरी,
 युग सूद्धित जागहि अबै १२ ॥ दोहाच्छन्द ॥ मुनि शरमा शुचि
 बचन सिय, पुनि निज नाह निहार । शौच विमोचन कीन कहु,
 लम्ब निशासे डार १३ रावण के भयभीत है, शरमा परम सु-
 जान । बन अशोक मधि लेगई, सियसह सुमन विमान ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनप्रधिपालरावतजीश्रीदूतहसिंहजीविज्ञापितकविटीका

कविस्वाच ॥ मनोहरछन्द ॥ हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य
 महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति छायो है । सुन्यो है सुपर्ण
 शोर जाको विभु भौनबीच, क्रोधानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है ॥
 पञ्चन पवन वृक्ष लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त रावनि त्र-
 सायो है । स्वामिहि जिवायो सुधा बारि वरसायो सद्य, बिनताको
 जायो बेग धामधाय आयो है १ ॥ दोहाछन्द ॥ रामकृपा अवलोकते,
 भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन तापतनुत्रस्त २ ॥
 पदपदछन्द ॥ विरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । विलपत सुख
 हा रमण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ भो प्रवीर पश्यन्तु, पठत प्रबचन
 सुख पापी । कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि
 द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ मधिगयो । ब्रह्मोपदेश
 गिरिनिकुम्भिल, बटमूला बटधित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन
 निरख्यो मायासिय । उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी मूर्च्छालिया ॥
 रघुवर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो
 बिदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम,
 स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो
 श्रवणन धरिलीजिये ४ विकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज
 रसजलकरि । सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौ-
 मित्री पुनि पठत, कछू निश्रय ननिहास्यो । जामदग्नि मुनि शाप,
 सुग्धपन प्रकट प्रवास्यो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप स-
 कल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण
 है ५ ॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख ।
 इमि करिकै आलाप कछु, विलपत लषण विशेष ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥
 कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहै । अपर अक्षि प्रक्षेप

चले समरमहि कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलद्भ्रमुकगहि ।
 शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्ध्नि तलये सकलकपि । जाम्बवान उप-
 विष्ट, एकअवलोक्यो यद्यपि ॥ असुशे निहारत ऋक्षपति, धरि
 धीरज ब्रूभक्तभयो । हनुमन्त विपुल वानरप्रवा, कहहु कुशल
 जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुप्रज प्रमञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये
 जगजोय । कुशल सुनत कपिप्रवरको, मम हेय हर्षित होय ९ ॥
 विभीषणउवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहि अङ्गद में नेह । हनुमत मधि
 दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जान्बवाउवाच ॥ जो जी-
 वत दुर्धर्ष वह, हतवज्ञ अहतप्रमान । अरुण होय हनुमान तो,
 जीवत सृनक समान ११ जाम्बवान युत विभीषण, तूरण पहुँचे
 तत्र । पृष्ठभाग थित मरुतसुत, बिलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाथिपालरावतजीश्रीदूबहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
 कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासेविभीषण
 जाम्बवान्संवादीनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

कविदवाच ॥ दोहाछन्द ॥ गम निरखि लङ्केश चप, अति तीक्ष्ण
 हुवपीर । क्षण क्षण क्षण बिलखत अधिक, धरत न किहुँविधि धीर १
 श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तोर संग मम प्राणहै ।
 सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है ॥ गहिहैं गिरि कपि क-
 टक खटक हिय हायहै । परहाँ । यहै विभीषणवीर कहो कित जाय
 है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है । तदनन्तर तुम गहे
 अनुजकी गेल है ॥ पुनि पित्राय पानीय तदनु पीवतरहै । अरिहां ।
 किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहैं ३ मोको प्रथम सुवाय
 फेर सोवत रहे । क्रम न तज्यो किहि ठौर सुभग जोवतरहे ॥ अबै
 स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये । अरिहां । हम इत अगलीगह
 चित्त चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिबिष्टय जाय है

कविरुवाच ॥ मनोहरचन्द्र ॥ हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य
 महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति व्यायो है । सुन्यो है सुपर्ण
 शोर जाको विभु भौनवीच, क्रोधानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है ॥
 पक्षन पवन वृक्ष लक्षन अगेन्द्र उडे, तमीचर तोमयुक्त रावनि त्र-
 सायो है । स्वामिहि जिवायो सुधा वारि बरसायो सद्य, विनताको
 जायो बेग धामधाय आयो है १ ॥ दोहाचन्द्र ॥ रामरूपा अवलोकते,
 भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन तापतनुव्रस्त २ ॥
 पदपदचन्द्र ॥ विरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । विलपत मुख
 हा स्मरण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ ओ प्रवीर पश्यन्तु, पठत प्रवचन
 मुख पापी । कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि
 द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग स्थ मधिगयो । ब्रह्मोपदेश
 गिरिनिकुम्भिल, वटमूला वटधित भयो ३ संगर चत्वर वीच, निधन
 निरख्यो मायाप्रिय । उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी मूच्छालिया ॥
 रघुवर निरखि सशोक, भरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो
 विदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम,
 स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो
 श्रवणन धरिलीजिये ४ विकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज
 रसजलकरि । सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौ-
 मित्री पुनि पठत, कछू निश्चय ननिहास्यो । जामदग्नि सुनि शाप,
 सुश्रवण प्रकट प्रचास्यो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप स-
 कल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण
 है ५ ॥ दोहाचन्द्र ॥ मित्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेल ।
 इमि करिकै आलाप कछु, विलपत लषण विशेष ६ ॥ चन्द्रायणाचन्द्र ॥
 कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्त है अपर अक्षि प्रक्षेप

चले समर महि । कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदुल्लुक्कगहि ।
 शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्ध्नि तलये सकलकपि । जाम्बवान उप-
 विष्ट, एकअवलोकयो यद्यपि ॥ असुरेश निहारत ऋक्षपति, धरि
 धीरज ब्रूक्तभयो । हनुमन्त विपुल वानरप्रवर, कहहु कुशल
 जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुप्रज प्रभञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये
 जगजोय । कुशल सुनत कपिप्रवरको, मम हिय हर्षित होय ९ ॥
 विभीषण उवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहिं अङ्गद में नेह । हनुमत मधि
 दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जान्बवानुवाच ॥ जो जी-
 वत दुर्धर्ष वह, हतबल अहतप्रमान । अरुण होय हनुमान तो,
 जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत विभीषण, तूरण पहुँचे
 तत्र । पृष्ठभाग थित मरुतसुत, विलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीबिहारीपितरत्नपुरस्थ
 कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीबरविद्यालेखिविभीषण
 जाम्बवानसंवादोनामैकोनचत्वारिंशोऽङ्कात् ॥ २६ ॥

कविस्वाच ॥ दोहाछन्द ॥ राम निरखि लङ्केश चप, अति तीक्ष्ण
 हुवपीर । क्षण क्षण क्षण विलखत अधिक, धरत न किहुँविधि धीर १
 श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तौर संग मम प्राणहै ।
 सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है ॥ गहिहै गिरि कपि क-
 टक खटक हिय हायहै । परहां । यहै विभीषणवीर कहो कित जाय
 है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है । तदनन्तर तुम गहे
 अनुजकी गेल है ॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहै । अरिहां ।
 किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहै ३ मोको प्रथम सुवाय
 फेर सोवत रहे । कम न तज्यो किहि ठौर सुमग जोवतरहे ॥ अबै
 स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये । अरिहां । हम इत अगलीराह
 चित्त चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिविष्टप जायहै

कविहवाच । मनोहरछन्द हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य

महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति आयो है सुन्यो है सुगर्ण
शोर जाको बिभु भौनवीच, क्रोधानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है ॥
पक्षन पवन बृक्ष लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त रावनि त्र-
सायो है । स्वामिहि जिवायो मुखा बारि वरसायो सद्य, विनताको
जायो बेग धामधाय आयो है १ ॥ दोहाछन्द ॥ रामरूपा अवलोकते,
भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन तापतनुत्रस्त २ ॥
पदपदछन्द ॥ विरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । बिलपत मुख
हा स्मरण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ भो प्रवीर पश्यन्तु, पठत प्रबचन
मुख पापी । कीन्हो लङ्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि
द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ मधिगयो । ब्रह्मोपदेश
गिरिनिकुम्भिल, बटमूला बटधित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन
निरख्यो मायासिय । उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी सूच्छालिय ॥
रघुबर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो
विदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम,
स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो
श्रवणन धरिलीजिये ४ विकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज
रसजलकरि । सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौ-
मित्री पुनि पठत, कछू निश्चय ननिहाख्यो । जामदग्नि मुनि शाप,
सुग्धपन प्रकट प्रचाख्यो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप स-
कल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण
है ५ ॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेल ।
इमि करिकै आलाप कछू, बिलपत लपण विशेख ६ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥
कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहै अपर अक्षे प्रक्षेप

चले समर महि । कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदुल्भुकगहि ।
 शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, सूर्धितलये सकलकपि । जाम्बवान उप-
 बिष्ट, एकअवलोक्यो यद्यपि ॥ असुरेश निहारत ऋक्षपति, धरि
 धीरज ब्रूफतभयो । हनुमन्त विपुल बानरप्रवर, कहहु कुशल
 जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुप्रज प्रभञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये
 जगजोष । कुशल सुनत कपिप्रवरको, ममहिय हर्षित होय ९ ॥
 विभीषणउवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहि अङ्गद में नेह । हनुमत मधि
 दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जाम्बवानुवाच ॥ जो जी-
 वत दुर्धर्ष बह, हतबल अहतप्रमान । अरुण होय हनुमान तो,
 जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत विभीषण, तूरण पहुँचे
 तत्र । पृष्ठभाग थित मरुतसुत, विलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपाकराचतर्जुश्रीदुलहसिंहजीविद्यापितरत्नपुरस्य
 कविश्रीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासेविभीषण
 जाम्बवान्संवादोनामैकोनचत्वारिंशोऽङ्काः ॥ ३६ ॥

कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ राम निरखि लङ्केश चप, अति तीक्ष्ण
 हुवपीर । क्षण क्षण क्षण विलखत अधिक, धरत न किहुँविधि धीर १
 श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तौर संग मम प्राणहै ।
 सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है ॥ गहिहैं गिरि कपि क-
 टक खटक हिय हायहै । परहां । यहै विभीषणबीर कहो कित जाय
 है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है । तदनन्तर तुम गहे
 अनुजकी गेल है ॥ पुनि पित्राय पानीय तदनु पीवतरहै । अरिहां ।
 किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहै ३ मोको प्रथम सुनाय
 फेर सोवत रहे । क्रम न तज्यो किहि ठौर सुमग जोवतरहे ॥ अत्रै
 स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये । अरिहां । हम इत अगलीगह
 चित्त चितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिविष्टप जायहै

कविरुवाच । मनोहरछन्द । दृष्टाकार हांय ग्यां त्रिभुवन मध्य

महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति आयो है । सुन्यो है सुपर्ण
शोर जाको विभु भौनबीच, कोभानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है ॥
पक्षन पवन बृश लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त रावनि त्र-
सायो है । स्वाभिहि जिवायो मुधा बारि बरसायो सद्य, विनताको
जायो बेग धामधाय आयो है १ ॥ दोहाछन्द ॥ रामरूपा अवलोकते,
भये सचेत समस्त । मेघनाद सङ्कट सहित, तीन तापतनुत्रस्त २ ॥
पदपदछन्द ॥ विरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही । विलपत मुख
हा स्मरण, प्राणप्रिय परम सनेही ॥ भो प्रवीर पश्यन्तु, पठत प्रबचन
मुख पापी । कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी ॥ करि
द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ मधिगयो । ब्रह्मोपदेश
गिरिनिष्कुम्भिल, बटमूला बटधित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन
निरख्यो मायामिय । उरचीतल गिरि राम, परम गुरवी मूर्च्छालिया ॥
रघुबर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब । महि हिय भयो
विदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब ॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम,
स्मरणरूप निज कीजिये । इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो
श्रवणन धरिलीजिये ४ बिकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज
रसजलकरि । सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि ॥ सौ-
मित्री पुनि पठत, कछू निश्चय ननिहाख्यो । जामदग्नि मुनि शाप,
मुग्धपन प्रकट प्रचाख्यो ॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप स-
कल सप्रमाण है । गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण
है ५ ॥ दोहाछन्द ॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख ।
इमि करिकै आलाप कछु, विलपत लषण विशेष ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ।
कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्तहै अपर अक्षि प्रक्षेप

विरह पति स्वान्तहै ॥ अस्त समय रवि पेलि चरुई गति असभई ।
 परहां । रुद्र करुण रस युगलरूप चल छविछई ७ ॥ पद्मपदच्छन्द ॥
 तत्र निकुम्भिल अद्रि, मूल निग्रोध अष्ट मों । अति सत्वर घननाद,
 विभीतक समिध सुथटमें ॥ अर्द्धचन्द्र आकार, कुण्ड निजपल आ-
 हुति दिय । शत्रुजय रथ अर्द्ध, कढ़यो लखि भो हरपित हिय ॥
 हनुमन्त तूर्ण तितजायकै, असुर यज्ञ भङ्गन कियो । भो मुधा मनो-
 रथ दुष्टको, सिद्ध काज कछु ना लियो = रण प्राङ्गण मधि अक्ष,
 लगायो लक्ष स्वच्छमन । शनिते लिय दशरथ, नृपति ते लियो
 लक्षमन ॥ स्मरण कियो लंहार, अस्त्र सानन्द बचन कह । रेरे माया
 रथारूढ़ सुन भवनाद यह ॥ करि छिन्नभिन्न माया विपुल, तोहिं
 पडैहौं शमनपुर । हूँ सावधान संगर सजउ, असुर हूजिये गाढ़उर ६
 दोस्तम्भन आस्फाल, केलि फुट विकट ध्वानकरि । ध्वस्त महातम
 घोर, प्रवज संहार अस्त्र करि ॥ धनु संयोजन केलि, पानि आहत
 पुहुमीतल । धीर वीर क्रोधान्ध, उदगिरत अनल दृगञ्जल ॥ सौ-
 भित्रि छेदि घननाद, शिर हीस्क मण्डित मुकुट्युत । लङ्केश पाणि,
 पुट युगल मधि, अर्पण कीन्हो आपउत ॥ १० ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीबुलहल्लिहजीविष्णुपितकवि-
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासेहन्द्रजित-
 वधोनामाष्टत्रिशोःश्लोकः ॥ ३३ ॥

अत्र श्रीहनुमन्नामकेद्वादशोऽङ्कः । पद्मपदच्छन्द ॥ सुत निज निधन निहार,
 नेशाचरनाथ कुपित अति । अरुण वरण दशरदन, वदनदश
 नयन विंशतति ॥ एक बीद्यातिनी, शक्ति प्रक्षेप कियो है । लखित
 जक्षमण वच्छ, स्वच्छ लखि लच्छ लियो है ॥ हनुमन्त गहि लई
 बचमें, जलनि धि मधि छेपनकरी । र वण सकोह है सद्य तब, वध

चले समर महे कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदरपुकगहि ॥
 शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्च्छितलये सकलकपि । जाम्बवान उप-
 विष्ट, एकत्रवलोक्यो यद्यपि ॥ असुरेश निहारत ऋशपति, धरि
 धीरज वूमतभयो । हनुमन्त विपुल वानरप्रवर, कहहु कुशल
 जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुपन्न प्रमञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये
 जगजोय । कुशल सुनत कपिप्रवरको, मम हिय हर्षित होय ९ ॥
 विभीषण उवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहि अङ्गद में नेह । हनुमत मधि
 दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जाम्बवानुवाच ॥ जो जी-
 वत दुर्धर्ष वह, हतवज्र अहतप्रमान । अरुण होय हनुमान तो,
 जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत विभीषण, तूरण पहुँचे
 तत्र । पृष्ठभाग थित मरुतसुत, विलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूखहसिहजीविद्यापितरत्नपुरस्य
 कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासेविनीयण
 जाम्बवानसंवादोनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

कविस्वाय ॥ दोहाछन्द ॥ राम निरखि लङ्केश चप, अति तीक्ष्ण
 हुवपीर । क्षण क्षण क्षण विलखत अधिक, धरत न किहुँविधि धीर १
 श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तौर संग मम प्राणहै ।
 सो सुनि करिहै सीय सुत्रिदिव प्रयाण है ॥ गहिहैं गिरि कपि क-
 टक खटक हिय हायहै । परहाँ । यहै विभीषणवीर कहो कित जाय
 है २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल है । तदनन्तर तुम गहे
 अनुजकी गेल है ॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहै । अरिहां ।
 किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहै ३ मोको प्रथम सुवाय
 फेर सोवत रहे । क्रम न तज्यो किहि ठौर सुमग जोवतरहे ॥ अद्वै
 स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये । अरिहां । हम इत अगलीगह
 चित्त चितवत रये ४ गहाँ स्वर्ग सुख सकल त्रिविष्टय जाय है

इतै विनशि है राम भयो असहाय है ॥ तुम्हरी गति विपरीत पेलि
 सन्ताप है । परहां । प्रकट कियो सापल भाव किमि आप है ५ तार
 सुरन करि सबै तबै रोवन लगे । राम वन्द मुखचन्द्र सकल जोवन
 लगे ॥ भये विपुल बेहाल कछूनहिं अटक है । परहां । छाया रह्यो
 कपि कटक करुण रस कटक है ६ ॥ पद्मपदछन्द ॥ पुनि पुनि रोवत
 राम, कहत हावच्छ लच्छमन । सेवन कियो सदैव, अहर्निश मोर
 स्वच्छमन ॥ पवनपुत्र धिक्कार, तोहिं तजि भयो पराङ्मुख । तेहि
 ते संगरमध्य, प्रापभौ अति दारुण दुख ॥ मम अनुजघ्नात उद्धस्त
 धनुष, इहिरण होतो जो भरत । तो शक्तिपात घनघातते, सौमित्री
 कवहुँन मरत ७ ॥ दोहाछन्द ॥ मुधा जुधारण शस्त्रभर, यौवन बृथा
 हमार । तजन चहत सविशिख धनुष, हिय निर्बेद निहार ८ ॥
 कविरवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ निज अपराध निहारि त्रपा करुणा
 छये । साभ्यसूय भुज भस्त सवल सुनिके भये ॥ कियो मारुडस्थान
 हुमसि हनुमन्त है । परहां । पुरोभाग धितहोय बचन उचरन्त है ९ ॥
 हनुमानुवाच ॥ पद्मपदछन्द ॥ सात अम्बुनिधि दिशा, दशौं गिरिगोत्र
 सप्तमित । भुवन चतुर्दश पृथिवि, आदि नभमण्डल इकइत ॥
 एतावत परिमाण, मात्र ब्रह्माण्ड कटक है । इनमें तौ कितजाय,
 निशाचर नीच अटक है ॥ बिभु विनय करत करजोरि युग, अधिक
 बदत अनुचर लजत । जित जाय तितै तकि मारि है, आप कहा
 कार्मुक तजत १० ॥ कविरवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ बचन प्रभञ्जन
 सुनत सुनत रघुबीर है । गदतगिरा गम्भीर महारणवीर है ॥ श्रीराम
 उवाच ॥ मारुति कथन यथार्थ, यदपि सब तथ्य है । परहां । यालुधान
 जागर्ति मोहिं उन्मथ्य है ११ ॥ कविरवाच ॥ मारुति कह यह बात,
 सदा स्मरणीय है । नाहिं नीच नर नेह, कदा करणीय है ॥ दुष्ट

करत दुरवृत्त, साधु द्वै नद्ध है परहां हरी दशानन सीय, वारि
निधि बद्ध है ॥ १२ ॥

इति श्रीविप्लोदपत्तनाभिपालरावतर्जाश्रीदूलहतिहर्जाविज्ञापितकविर्जाका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरावलासेश्रीरामसर्जीरसूनु-
संवादोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

श्रीहनुमानुवाच ॥ पद्मपदच्छन्दः ॥ पाय कलू प्रारब्ध, योग जग मधि
दुर्जन इत । हस्त महजन मान, कथं वित कचित कदाचित ॥
पै उनके अनुज नित, गुण न धावत पामर नहि । पावहि किमि
अधिकत्व, विजोकहु विपुल सकलमहि ॥ स्वर्मानु रश्मि शशि
भानु की, समय पाय यद्यपि महत् । ब्रह्माण्ड खण्ड मण्डल त्रिपे,
नहिं ग्रहेश कोऊ कहत १ ॥ चन्द्रायणच्छन्दः ॥ रावण किय उन्म-
थित रावरो मान है । दैवयोग जड़ तऊ होय किम्मान है ॥ विनय
करत करजोरि सुवारम्भारहै । परहां । श्रीरज धरिवो सार सकल
संसारहै २ ॥ कविरुवाच ॥ राम कहत पुनि बचन समीरनसुत रहौ ।
कालान्तरगत सिया कहा कारज कहौ ॥ बन्धु करत उपभोग नाहिं
सुख लेतहै । परहां । अरु अरिगण आतङ्क दुसह नहिं देतहै ३ व-
च्छल लक्षण बच्छ बच्छथल भिन्न है । कृतप्रतिज्ञ हनुमन्त सविस्मय
खिन्न है ॥ सुनहु नाथ पणमोर सुरीति सदैव है । हरिहां । अय-
महोयमराजरुदेव अदेव है ४ ॥ पद्मपदच्छन्दः ॥ करि प्रवेश पाताल,
सुधारस सत्वर लाऊं । अथवा चन्द्रनिचोप, प्रचुर पीयूष पिवाऊं ॥
चन्द्र किरण उदण्ड, अखिल ब्रह्माण्ड निवारों । करि चूरणकी
नाश, पाश शासन यम टारों ॥ जो होय हुकमसोही करौ, कीजै
नाहिं विलम्ब अथ । रघुराज रावरी मेहरते, मोको है आसान सब ॥
कविरुवाच ॥ सुनि समीरसुत बचन, राम शोचन लागे उर । बदत
बदन महवीर, तथा तैसे करिहै तुर ॥ महाप्रलय है जाय, अनवसर

इमि करिवेते इमि उर अन्दर शोधि, बचन उचरत हरवेते । त्या-
 वह सुखेन अभिधा भिषक, असुर ईश अनुचर यदापि करिहै न
 कपट है बैद्य वह, लखिहि त्रिकित्सावर तदापि ६ ॥ कविरुवाच ॥ कहि
 तथास्तु हनुमान, लङ्कपुर जाय त्वरित है । पट्टु परियङ्क समेत, भि-
 षक भल्लत्याय अतित है ॥ सुप्तोत्थित लखि भिषक, राम सकरुण
 बचबोले । कहहु तरुण उपचार बैद्य, सुनि हिय निज लोले ॥ जीवि
 है भ्रात रघुराज तव, यह उपाय करिये अचिर । बह्नी विशालिबर
 द्रोणगिरि, चन्द्ररिम रजनी रुचिर ७ ॥ कविरुवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥
 राम बुलाये दूत बेगको आयहै । अपनो अपनो बेग बढहु मनलाय
 है ॥ सुनि खुबर बरहुकम हुमसि बोले तबै । हरिहां । निज निज
 बल अनुरूप अवधि उचरत सबै = जावत आवत नलकहँ लगत
 त्रिरात्र है । तथा मैद अरु द्विविद कपिन्द द्विरात्रहै ॥ एकरात्र
 सुग्रीव नील किय कौल है । परहां । यामचार युवराज बढत करि
 तौल है ६ ॥ कविरुवाच ॥ समय आर्त्त श्रीराम सुनत कपि बैन है ।
 संकोचित सुख जलज सजल युगनैन है ॥ संगर संकट विकट
 बीच भाशङ्क है । हरिहां । लखत रुद्र अवतार सुबदन मयङ्कहै १०
 सत्वर सकरुण गह्यो, गारुडस्थानहै । युगअञ्जलि पुटजोरि बढत
 हनुमान है ॥ क्षणक धारिये धीर सकल भल होनहै । अरिहां ।
 आवत हौं पहुंचाय भिषकवर मौन है ११ इमिकहि तिहि पहुँचाय
 तितै इत प्राप है । आज्ञनेय उचरत विमल बच आप है ॥ प्रभु
 हितकारक प्रचुर प्रवङ्गम पूरहै । हरिहां । दीजे आयसु अद्य अद्रि-
 मग दूर है ॥ १२ ॥

इति श्रीपिपलोद्पत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिहजीविज्ञापितकवि
 टीकारामाङ्गगोविन्दरामविरचिते श्रीविरविलासेवानरकुन्द
 वेगवर्धननामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

श्रीहनुमात्रुवाच ॥ मनोहरच्छन्द ॥ साठलाख योजन तो जावन जह,
 पै बेग, साठलाख योजन को आवन जरह है । मारुति बहत नाथ
 रावर प्रताप पुत्र, उचरत ऐमे नाहिं मनमगरह है ॥ अग्नितप्ततैल
 यित सरसों अवाज बीच, आवो उत जायते विगत्य बल्लिसूर है ।
 कौन मगदूर द्रोण गौन मगदूर नहीं, पौन मगदूर पौनपुत्र मग-
 दूर है १ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठाछन्द ॥ सुनत मरुतसुत वैन, हिय
 हर्षित रघुवर भये ॥ अवध कुशलपन लैन, अपर अमल आयसु
 दर्ई २ करि वन्दन रघुनन्द, कियो चन्द उड़ीत कपि ॥ दुहिण अद्रि
 सानन्द, अञ्जनिनन्दन गवन कृत ३ ॥ कविरुवाच ॥ पद्मपदछन्द ॥
 अब सुनिये वृत्तान्त, अवधपुर वारयो तितको । भयो सुमित्रा स्वप्न,
 वाम भुज भुजग असितको ॥ कौशल्या प्रति कह्यो, तुरत उठि
 उहि वशिष्ठ सुनि । शांति करावत भरत, स्वप्न भयप्रद श्रवणनि
 सुनि ॥ सब सामग्री मँगवाय शुचि, थल इकन्त कीन्हो गमन । दिग
 सशर शरासन धारिधुव, आज्य आहुति कृतहवन ४ ॥ कविरुवाच ॥
 जबै द्रोणगिरि गये, मरुतसुत तित अतिशयहुत । प्रभा सुधाकर
 सहस्र, बल्लिमणि सब निहारउत ॥ निश्चय नहिं ह्वै सकत, अमण
 चहुँधावहु लीन्हो । तब गिरिवर लेजान, मनोरथ मनमें कीन्हो ॥
 जब उठ्यो न अद्री आपते, तवै तात सुमिरन्तयो । पटु पितापुत्र
 युग जोरकरि, धराधरन धारत भयो ५ ॥ कविरुवाच ॥ इतै अवधपुर
 बीच, भरत अरु सुनि वशिष्ठ है । शान्ती मण्डप कुण्ड, निकट
 बिलसत बसिष्ठ है ॥ हवन करत श्रीखण्ड, काण्ड सतगर कुलुमा-
 दिक । जलजनाल कर्पूर, उमीराज्य प्रचुरादिक ॥ कृत नारिकेल
 पुरणाहुति, एते पै अवलोकिनभ । हुत आज्ञनेय आवत डतै, कर
 गिरिवर ज्वलदनत्तप्रभ ६ करनलगे सब तर्क, कइ यह इतमें

आवत प्रसित सुमित्रा मात, वाम भुज वही लखावत अथवा मस
 संहार, कार बंगलुर आयो । इमि भ्रम करिकै भरत, तुरत शरतिनै
 चलायो ॥ भो बाण भिन्न हनुमान जब, महावीर धीरुन धरत । हा
 राम लपण उचरत, प्रबलबली पुहुभीपरत ७ ॥ चन्द्रायणाञ्जन्द ॥ विर
 जीवी यह बीर, रहै श्रिति स्वच्छ है । विधि लिखिता भर पंक्ति, लोप
 परतच्छ है ॥ चण्ड भरत दोर्दण्ड काण्ड निर्मुक्त है । परहां । भये
 मारुती महा मूरुवायुक्त है न लारथो पट्ट ललाट भरत भटवान है ।
 गिरिलिय लांगुल अग्रवीर हनुमान है ॥ संमूर्च्छित महिपरे बंदत
 अभिराम है । परहां । हा रघुबर हा लपण गिरा गुणग्राम है ६ राम
 लपण बरनाम अभल आनन कहा । तित अशिष्ठ भरतादि भयो
 विस्मय महा ॥ अति आतुर है अखिल तुरत गत तत्र है । हरिहां ।
 महद मूरुवा सहित मारुती यत्र है १० गिरतभये तिहि चरण
 शलय किय दूर है । गिरिजौषध करि मुनि बशिष्ठ क्षतपूर है ॥
 गई मूरुवा सावधान हनुमन्त है । अरिहां । वितको बर वृत्तान्त
 स्वल्प वर्णन्त है ११ ॥ कविरुवाच ॥ शक्तिभेद उर लक्ष भयो हौ जा
 समै । राम बड़ाई भरतकरीही तासमै ॥ वह करिकै इतयाद हीय
 हनुमन्त है । अरिहां । साभ्यसूय करि रचन बचन उचरन्त है ॥ १२ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंजीविद्यापितकविटीका-

रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीचरविलासेहनुमद्भरत

समागमोनामद्विवरकारिशोलासः ॥ ४२ ॥

श्रीहनुमानुवाच । चन्द्रायणाञ्जन्द ॥ चन्द्र चन्द्रिका चारु रहे रजनीय
 है । गिरि औषध गहि तुरत तत्र गमनीय है ॥ हौं थकि गयो इहैव
 आप पहुँचाइये । परहां । ललित लक्ष्मण भ्रात जहां द्रुतजा-
 इये १ ॥ कविरुवाच ॥ सुनत समर संकष्ट राम अरुलक्ष है । स्वच्छ
 बच्छ भल भरत प्रबल परतक्ष है भुजा ठोंकि टंकार शरासन शोर है ।

परहां लङ्का और निहार सुमुञ्च मरोग्हे २ पदपदन्द । तिनै
समर मविराम, विविध विलपत उचरत है । बन्द्य लब्ध उत्तिष्ठ,
गहहु धनु रिपु प्रचरत है ॥ सैन्य हनत तव अयुः, ताहि तनक न
तुम जोवत । प्राप्त सीय ग्पिजीति, तथा निर्भय किमि सोवत ॥
प्रति वचन देत नहिं आतकसः, प्रीति छिन्न नहिं कीजिये । केकयी
मात पिय साहसे, होय कृतारथ रीजिये ३ ॥ कविस्वाच । चन्द्रायणद्वन्द ॥
इतै सुनत कपि वचन भरत साटोप है । अद्रिमहित गुन मरुत
विशिख आरोप है ॥ कृत कुण्डलि कोदण्ड अथग विम्भितभयो ।
परहां । लगे करन वरतवन गरव मनको गयो ४ उतरि विशिखते
भरत भुजन पूजनकियो । कुशललेय ततकाल लङ्कागलियो ॥
जिमि दरिद्र मन गमन दृशन्त दिगन्त है । परहां । पहुँचे अति
अविलम्ब वीर हनुमन्त है ५ ॥ पदपदन्द ॥ अद्रिरुद्र अवतार, प्रलय
रवि द्वादश समुदित । सहस्र द्रोण दोर्दण्ड, धारि अपनिशि आ-
गत तित ॥ दत्तदृष्टि दिगभाग, पूर्व सूर्योदय भ्रमवप । तीरतरल
तरसिन्धु, तार सुरकिय रोदन तप्त ॥ पर्वत उद्योत रविउदय भ्रम,
सरवरथित विकसित कमल । कपि लखत अनित लज्जित स्वत,
अक्षिन मग आंशू अमल ६ ॥ कविस्वाच ॥ तदनु निरखि दिग-
भाग, प्रभाकर उदय न पेख्यो । गिरि प्रकाश करि जलज, युत्य
विकसन्त विशेष्यो ॥ भोरहोन भ्रम भण्यो, भूरिहिय भयो सहर्षित ।
गये बाहिनी बीच, राम सुग्रीव हुते जित ॥ पटुपुत्र प्रभङ्गन अञ्जनी,
रम्य रुद्र अवतार है । गहि द्रोण अद्रि अविलम्ब उत, आवत
करी न बारहै ७ ॥ कविस्वाच ॥ माख्यो माय महर्षि, कालनेमी रज-
नीचर । ग्राहीरूप उदग्र, कन्द काली मारीत्वर ॥ राकस बल संमर्दि,
सर्व रावण प्रेरितहरि इन्द्रपठ ये प्रवज, को भिगन्धर्व विजयकरि

मणिज्वाल जटित आदाय गिरि, भटिति उतै आवत भये । श्री-
हनुमान कपि कटकमधि, हिय सबही हर्षितभये ८ मैद द्विविद कपि
प्रभुप, चनूचय रक्षाकारक । गय गवाक्ष नल नील, प्रबल अरिदल
संहारक ॥ सीतातङ्क महान्धकार हारक परभाकर । पवनपुत्र संप्राप्त,
हरीहर उत्सव आकर ॥ कपि कटक सुभट संघटन में, यहै गल्लगो-
पालहै । इतद्विशतु विशदवर लक्ष्मी, लक्ष वक्षथल हाल है ९ ॥
श्रीरामउवाच । दोहाछन्द ॥ एकहि इहि उपकार पर, प्राण समर्पित
तोहिं । अवर अखिल उपकृतिनको, मानहु ऋनियां मोहिं १० तुम
उपकृत आपत्ति वह, जीरन ममतनु होहिं । पुनि प्रत्युपकारार्थ हित,
हैं न आपदा तोहिं ११ ॥ पदपदछन्द ॥ हनुमत कृत आलेप, अद्रि
औपच करितूरण । धरणि धरन आतमा, मूरच्छात्यज संपूरण ॥
तरणि राम अरविन्द, लङ्कपति कुपित कालसम । आददान धनुष
शर, क्रोधकरि भये अरुणतम ॥ प्रोत्कुञ्जखदिर अङ्गारचष, टण-
त्कार कोदण्ड किय । सुखमारमार उचरन्त उत, लक्षउठे प्रोच्छाह
हिय १२ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ सहरष सपुलक साश्रुभये श्रीराम हैं ।
लक्ष्मण हृदय लगाय गहे गुणधाम हैं ॥ हावच्छल हावच्छ वच्छ-
थल अङ्क है । परहां । तव परिश्रम परिहार हेतु पर्यङ्क है १३
शक्ति भेद खलु खेदभयो तव पूर है । शयन धान मम हृदय महा
मुदसूरहै ॥ भेदनाद कुलकमल बर्ष प्रालेय है । परहां । प्रबलभई
वेदना न आनन गेय है १४ ॥ कविरुवाच ॥ कह लक्ष्मण करजोरि
कलुकमम खेद है । सम्पूरण श्रीराम वेदना भेद है ॥ प्रभुउर पीड़ा परम
प्रतक्ष प्रचार है । परहां । किंकर केवल कथन मात्र छतधार है ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविशापिलकवि
दीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीबराविलासेश्रीलक्ष्मणो-

अथ श्रीहनुमत्काण्डकलक्ष्मणशक्तिभेदोनामप्रबोधश्लोकः ॥ कविरुवाच । पश्यदृष्टम् ।

प्रात भये लङ्केश, बुलायो लोहितलोचन । कहहु राम प्रति जाय,
करत तव मैथिलि मोचन ॥ जामदग्नि निर्जित्य, परशु प्रमथाधिप
लीन्हो । वहै तुम्हरे निकट, वहै रावणको दीन्हो ॥ कहि तथास्तु
लोहितनयन, तूरण नभ मार्ग लियो । इत शिविरबीच क्रिय आ-
गमन, स्थुनन्दन वन्दन कियो १ ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ रावण
दूत निहार, रघुवर वतरावन लगे । तित अधिराज तिहार, कहा करत
लोहित नयन २ ॥ लोहिताक्षरुवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ लङ्क निशङ्क ज-
राय गयो अविलम्बहै । लंघन कीन समुद्र प्रतप्त प्रजम्बहै ॥ औपध
आन विशल्य जियायो लक्ष है । हरिहां । मारुति उपर पीसत दन्त
तनक्षहै ३ ॥ कविरुवाच । बरवैछन्द ॥ सुनि विहँसत श्रीरघुपति बोलत
बैन । किहि कारण आगत इत लोहितनैन ॥ कर युगजोरि कहत
तव लोहितअक्ष । देशदेश लङ्कापति पठव प्रतप्त ४ हरप्रसाद परशा
तुम भृगुपति जीत । वह रावण को दीजै राखि सुगीत ॥ कार्हि
समर्पण रावण रावस्सीय । सब विरोध मिटिजैहै निरखहुहीय ५ ॥
पश्यदृष्टम् ॥ विहँसि बचन कहराम, दूत देखहु रत लोचन । पेखि
प्रणय पौलस्त्य, सुमिरितव मति मोदत मन ॥ हरप्रसाद यह परशु,
तदपि नहिँ देनयोग है । दिये गलानी गहहिँ, लङ्कपति लखहिँ
लोगहै ॥ सब दई बसुंधर द्विजनको, असुर रसातल रीजिये । नि-
र्जित्य निशाचर लेय क्षिति, किमि बलभिद को दीजिये ६ ॥ दोहा
छन्द ॥ दूत दशानन अनुरपति, मन बचनन इमि वाच्य । हरप्रसाद
बर परशु यह, लङ्काधीश अयाच्य ७ ॥ कविरुवाच । पश्यदृष्टम् ॥
येते अन्तर बीच, पुरन्दर पटु पठवायो । शत्रुञ्जय रथ प्रवर, मातुली
सारथि लायो रघुवरहु हनुमन्त, ध्वजाप्रारोपण दीन्हो अति

उत्साह समेत, आप आरोहण कीन्हो ॥ तब लोहिताक्ष निष्क्रान्त
तित, लङ्काधिप सन्निधि गयो । निज शिर नवाय कर जोरियुग,
सब वृत्तान्त बरणात भयो ॥ ८ ॥

इति श्रीविप्लोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीब्रूलहसिहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रलोहिताक्ष
रावणदूतसंवादीनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

कविरवाच । चन्द्रायणछन्द ॥ कह लङ्का शिखरस्थ लङ्कपुर कन्तहै ।

ध्वजपर सुतदशरथ कोन बिलासन्तहै ॥ यह सुनि लोहितअक्ष
बचन उचरन्तहै । परहां । प्रबल पराक्रमपुञ्ज बीर हनुमन्त है ॥ पश्यद

छन्द । लोहिताक्षउवाच ॥ हे लोछंधित सिन्धुप्रस्त, अंगुन मण्डलधर ।

सियवियोग सहराम, दैत्य उदघाटन पटुतर ॥ निशिचर नायक

नगर, निखिल निरदग्ध अचलचित । संजीवित सौमित्रि, औपधी

अद्रि आनि इत ॥ उपमा अनन्त हनुमन्त यह, जिहि मग अवर

न अनुसरत । अतिप्रबल प्रभञ्जन पुत्र वर, रघुवरध्वज गज्जन क-

स्त २ ॥ कविरवाच ॥ मन्दिर मन्दोदरी, गयो रावण अति तूण । ब्रू-

भन लग्यो विचार, चारु मति नयसंपूरण ॥ विनिहत राघव वि-

शिक्ष, विबुधपुर करौं मैं । अथवा सीय समर्पि, राम संकष्ट हरों मैं ॥

मम मात्ररह्यो अवशिष्ट बल, कौन पक्ष है तोर प्रिय । सो सपदि

सुनावहु स्वामिनी, धारण करिहौं हर्षि हिय ३ ॥ दोहाछन्द ॥ वि-

हँसि वदत मन्दोदरी, पहिले सुनी न एक । प्राणनाथ लङ्कापती,

अब किमि भयो विवेक ४ ॥ मन्दोदरिउवाच । पश्यदछन्द ॥ दैत्यभ-

गिनिको देखि, स्वरादिक निधन श्रवण सुनि । मातुल लख्यो

बिनाश, ताल भेदन श्रुतिगत पुनि ॥ कपिवर वालीदहन, वद्ध

सुग्रीव सहयसुत । जज्ञधि तरन उद्यान, भङ्ग बध विदित अक्षसुत ॥

षट पत्र पाँत्र परिवार जन, नष्ट भये कुलके सबै कृतसेतु विनि-

र्गत नीरसम, उर विवेक आयो अथै ५ ॥ रावणश्चाच । मनाहरद्वन्द ।
 धिक धिक इन्द्रजीत जाग्यो कुम्भकर्ण वृथा, स्वर्ग ग्राम लुण्ठन वि-
 त्तच्छ भुजबीशहै । लाखन धिकार मोहिं मेरे सुनि शत्रुहोय, तामें
 तुच्छ तापस सहाय संग कीशहै ॥ सोहू अत्र आयकै प्रहारे कुल
 राकसको, जीवतहै रावण निहारे नैन बीशहै । एक अङ्क शीशवार
 पीसडारे यातुधान, बीसोंविना अधिक धिकार दश शीश है ६ ॥
 कविरवाच । चन्द्रायणाच्छन्द ॥ सकरुण मन्दोदरी कहन लङ्केश है ।
 नहिं पावहु कछु शोक स्वभान सलेशहै ॥ त्रिया तदपि क्षत्रियाहु-
 कमहुम दीजिये । परहां । समर मध्य ममनाथ हाथ लखि लीजिये ७
 रावण वदत विदीर्यमणिनु निज हीय है । तरुणय करुणानाहिं
 किंचदपि तीय है ॥ प्राणरङ्क नहिं पीय तोर जिय होत है । परहां ।
 तज लङ्का निश्शङ्क समर उद्योत है ८ ॥ कविरवाच । पद्मद्वन्द ॥
 गहि आयसु श्रीराम, सकल कपि भट निकसे हैं । लङ्का उत्तर मार्ग,
 रुन्धि अति उर विकसे हैं ॥ उच्छ्रंखलत्पत्य, करत दृढ़गढ़ आरोहन ।
 शैल शिखर करधारि, छटा व्याहत छबिसोहन ॥ दिगपाल कुलाहल
 वहलमद, उग्र अवग्रह तारबख । देदीप्यमान दिशि विदिश, दिशि
 दशग्रीव उदग्रीव लाख ९ ॥ कविरवाच ॥ रावण रामनियुद्ध, निहारत
 रुद्र निरन्तर । संवेष्टित कपिकटक, लङ्क अवलोकि दिगन्तर ॥ उच-
 स्त मरुदादित्य, शम्भु शतमख मुख सुम्बर । अनुमर्षत अनुदिवस,
 समय जिहिंपुर दुवारपर ॥ वह समाक्रान्त वानर भटनि, दशग्रीव
 नगरी रुचिर । अति लखहु कालमहिमा प्रवल, उर आवत अच-
 रज अचिर ॥ १० ॥

इति श्रीपिपलोद्भूतनाथिगालरावतजीश्रीदूतहर्मिहजीविद्यापितकविटीकृत-

रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवराविलालेश्रीरामचन्द्रवानर

रुद्ररुषद्राखराधोनामपञ्चवत्तमिशोक्ताम ॥ ४५ ॥

कविस्वाच । चन्द्रायणाङ्गद ॥ लवगाधिप सुग्रीवसुकु बहुवृक्ष है ।
सपदि पाय संवट्ट लङ्कपति वक्ष है ॥ प्रकटत पावकपुञ्ज भूमिरुह
दहत है । परहां । दिपत दवानल सदृश समरमधि महत है १ रावण
निजगिरि शिखर उखारि प्रचार है । पिष्टपानि चयपरस कुण्डजल
धार है ॥ निर्भर पयजनु होत, पिण्ड जम्बाल है । परहां । लगत
हृदय सुग्रीव सुमन मनु माल है २ उतपाटित कैलासभये भवतुष्ट
है । इहि उतपाटन किये तथा सन्तुष्ट है ॥ राणमधि रक्षा करहि देव
करिके दया । परहां । इहि कारण लङ्केश शिखरगिरि करलिया ३ ॥
पद्मदङ्गद ॥ रावण होय सक्रोध, रथारोहण किलकीनो । भेरी मर्दल
शेष, ताल निकरस्वनमीनो ॥ काहलखनिस्सान, श्वान परिपूर्ण
कर्णकिय । दशकन्धर युद्धार्थ, नगर निकसत बिकसतहिय ॥ मा-
णिक्य मौलि मञ्जुल महा, यशोदीप दीपित दशत । विधि कर्म
वश्यजु अवश्य उत, लङ्कपाल अति उल्लासत ४ ॥ चन्द्रायणाङ्गद ॥
परिमिति पवन प्रचार मन्द रविताप है । निकस्यो जब भग गगन
निशाचर आप है ॥ प्रणमत सब सुरसंघ नम्रहुइ अङ्ग है । परहां ।
थगित सरित गति भङ्ग उतङ्ग तरङ्ग है ५ ॥ पद्मदङ्गद ॥ जब लङ्का
भट सुभट, शरासन शिखर नील थित । क्रोध आशुगिरि प्रलव,
सहित पर्यतकर बिलसित ॥ मृगतृष्णा जलयुक्त, अचल अवि-
लोकि चकित चित । दिग मण्डल जुषदेव, सुमति तत्प्रेच्छ करत
तित ॥ बहु वृन्द बृन्द बृन्दारका, बाणी विपुल बदन्त है । धनुशृङ्ग
भृङ्ग तदुपरिगिरी, तत्र जलधि बिलसन्त है ६ राम मध्य साश्र्वर्य,
सपट्ट भट मुख अवलोकत । व्यथा सहित सुर तौर्य, शान्तरस तत्र
बिलोकत । रघुवर युधि साशङ्क, कपिन मधि सवेनय सरसत

सामूयहुव, आत्मकृत्य सत्रप लखत दशयत्क बरु चयचक्र सब
 भिन्न भिन्न भावन रखत ७ दृढ़ बांधे दशतूर्ण, शकहय सटाकेश
 करि । धुनत वाम दोर्दण्ड, धनुष दश विपुल वेगधरि ॥ दक्षिण
 भुज दश विशिख, सुतीक्षण आददानहै । छोड़त क्रीड़ा करत
 प्रकुम्पत यातुधान है ॥ अभिभवत भूरे प्रसरत अमित, गर्जत
 तर्जत ओघअति । खिद्यन्त निरन्तर वदन श्री, रणप्राङ्गण मधि
 अवतरति ८ ॥ चन्द्रायणाङ्गद ॥ समराङ्गण श्रीराम निशाचर कन्त
 है । तरुण कुण्डली भिन्न वपुष अगिनन्त है ॥ करीकुम्भ संलग्न
 ललति विलसन्त है । पवै हेकामिनि कुचयुग परस यथा सोवन्त
 है ९ ॥ कविरुवाच । तोरठाङ्गद ॥ गगन गगन परमान, सागरसम सागर
 लसत । रावण राम समान, संगर रावण रामकौ १० ॥ पदपदङ्गद ॥
 सारनाम कब्याद, बीर हयचढ़ि उत आवत । अश्वमध्य हुव खरद,
 चढ़यो पूर्वार्द्ध सिधावत ॥ पश्चिमाद्ध युवराज, तुङ्गम गह्यो क्रोध
 कर । कीनो प्रवल प्रहार, असुर शिर ऊपर सत्वर ॥ निज शिबिर
 बीच पहुँच्यो न वह, अङ्गद ताड़ित महि पख्यो । शिव शिव शिव
 अति संकट विकट, चमू निशाचर उच्च्यो ॥ ११ ॥

इति श्रीविप्लोदपत्तनाधिपाररावतजीश्रीदुखहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
 रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासे ताराद्वतमिचर-

वयोनामपट्टचत्वारिंशोऽङ्काः ॥ ४६ ॥

कविरुवाच । पदपदङ्गद ॥ निशाचर महद शरीर, अल्प वपुवानर
 विलसत । किहि प्रकार है विजय, राम संशय हिय हुलसत ॥ कह
 अङ्गद करजोरि, कलश शिशु पियो अम्बुनिधि । अद्री परम उतङ्ग,
 पुरन्दर पषळिद जिहिविधि ॥ अति प्रथुल वपुष किहि काजके, को-
 णपकुल असमर्थ उत । निजनाम धेय भुवराज इत, लसत सकल
 सामर्थ्युत १ कविरुवाच । रावण खर निरखि, बचन उचरत है

ऐसे । ताटक ननु तियमात्र, रामशुचि द्विजहौ तैसे ॥ भीति भवन
 मारीच, हिरनवालीहौ वानर । बृथा विकत्यन करत, काहि काकुत्य
 अधिकतर ॥ कहु कौन बीर वर विजय किय, रखत गर्व दोर्दण्डका
 कोदण्ड अवे आरोपिये, तोरमोर हूहै समर २ ॥ कविरुवाच ॥ अङ्गद
 उत्तर देत, अरे सुन निशित्र नायक । बन्ध महजन चरित, कबू
 नहिं संशय लायक ॥ सुन्दर तिया किय दमन, तौन दशत कु-
 रिउतयस । अरु जिहिबिधिहो बालि, ताहि तुम जानत जियजस ॥
 पुनि सुनिवो चाहत औगू, विदित बीर जयबिभलगिर । खरखण्डन
 दूषण दलन किय, त्रिशिर कियो रण भिन्न शिर ३ ॥ कविरुवाच ॥
 सुनि अङ्गद के बैन, वचन रावण पुनि उचरत । रे रे मानव राम,
 समरलङ्कापति प्रचरत ॥ शङ्करगिरि कैलास, किया कन्दुक क्रीडाइवा
 मानव निशि दिन दर्प, जासु देवेश्वरहु दिव ॥ असुरान्तत सुन्द
 सुन्दरिकदन, शाखामृगपति अन्त कृत । जाघोस करहु धिय
 धीरधरि, दोर्दण्ड कोदण्ड घृत ४ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाङ्गद ॥ त-
 दपि न रावण हनत सदपि श्रीराम है । आनन अम्बुज नम्र कियो
 अभिराम है ॥ जब किंचित थित लज्ज सहित सियकन्त है । परहां
 विहँसि तबै लङ्केश बचन उचरन्त है ५ ॥ रावणउवाच ॥ तव पूर्वज
 अनरण्य हुतो बरजोरहै । कीन्हो ममकर कदन जंगमधि घोरहै ॥
 तिहि सुमिरण करि व्यथित परम सन्ताप है । परहां । जिहिते लज्जा-
 वन्त होत अति आप है ६ ॥ श्रीरामउवाच । परदण्ड ॥ कहतराम
 निरशङ्क, निशाचर नीच निहारहु । कहालज्ज अनरण्य, भूप
 निज जिय निरधारहु ॥ जय अथवा है मरन, शूखीरन को रनमें ।
 तिहिको हरषरु शोक, तनक लावत नहिं मनमें । बन्धनागार अ-

मुनि पुलस्त्य भिक्षुकभये ७ चन्द्रायणाङ्गद ममभुज भृगुपति
 विजित जासु बध कीन हैं । तिहि हैहय के हाथ बन्ध तुम लीन
 हैं ॥ सङ्कट कारागार सहे अगिनन्त हैं । परहां । तव सन्मुख धरि
 शस्त्र सुलजावन्त है = ॥ कविरुवाच ॥ रावणहिया बसन्त सुस-
 न्तत सीय है । मोर निरन्तर ध्यान जानकी जीय है ॥ मम उर
 निबसत सकल सृष्टि संघात है । परहां । इनत न राहिय असुर
 डरत जग घात है ६ ॥ वद्वपदङ्गद ॥ रावण रोष निहारि, विहित
 अहंकार आपउर । इतदृढ़ संगर बद्ध, दिक्षु विभु सज्ज भये तुर ॥
 शरणागत भयहरण, विरद्वर विलसत अविरत । ज्ञायो विपुल
 उद्धाह, प्राण तृणतुलित विशेषत ॥ रघुवंश राज महाराज सुर, अवध
 नगर अधिराजहै । बधकरन काज असुरेश को, रणमधि विविध वि-
 राज है १० ॥ कविरुवाच । दोहाङ्गद ॥ प्रिया विरह अर्दितप्रभू, लहत
 नाहिं रति तत्र । सत्यरम्यरमनीयता, धिरमन विलसत यत्र ११ ॥
 कविरुवाच । मनोहरङ्गद ॥ वाण इहि ताटकाके शोषित सनान कियो,
 भगिनी के कानन प्राण प्राणायाम कीन्हो है । दूषण त्रिशिरस्वर
 आहुति अशेशदई, हिरनमगीच बलिदान बेग दीन्हो है ॥ आच-
 मन आन्योहै अनन्त अम्बु अम्बुनिधि, भोजनावकाश अबै चारु
 चितचीन्हो है । मार्गण क्षुधित मोर मार्गन करत तोर, आमिष
 असुर लङ्कनाथ चहै लीन्हो है १२ ॥ दोहाङ्गद ॥ चितचाहत जो
 संधितौ, सीय समर्पहु सद्य । नातर ममनाराच तव, आमिष
 भसिहैं अद्य ॥ १३ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहर्षिहर्षीविष्णापितकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीबरधिलासेश्रीरामचन्द्र
 रावणसंवादोनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

। चन्द्रायणाङ्गद । तररावण सावज्ञ बचन उचरन्तहै ।

प्रकट प्राण परित्राण हेतु वर्णन्तहै मूर्खनको मूकत्व सभा मधिहै
 यथा । परहां । क्लीबन को रणबीच संधि वच है तथा १ ॥ पदपदच्छन्द ॥
 इमिकहि गगन बिलोकि, दशानन बद्ध वचन है । रे रे काल
 अकाल, लब्धतव विभव रचन है ॥ हूजै स्वैरसकाम, शम्भु भूषयतू
 तन तव । शिरोमाल्य निज अङ्ग, भूरि भूपित आजहु भव ॥ रचिये
 विरञ्चि सृष्टि अर, लङ्केश्वर कष्टिच्छ है । कर्वाल गही भीपन
 भुजन, युद्धकाज सब छहै २ ॥ कविस्वाच । चन्द्रायणछन्द ॥ पुनिकरि
 समान्छेप सुनावत बोलहै । मन्दिर मधि मैथिली अलाप अमोल
 है ॥ रण दारुण मधि होय पलायन प्रान है । परहां । मधुर अघर
 मम गिद्ध करहिगे पान है ३ ॥ कविस्वाच ॥ त्रिजटा शरमा दोय
 विमान भिठायकै । बैदेही लेगई चतुर चितचायकै ॥ रघुवर रावण
 युद्ध बतावत सीयको । हरिहां । निमिनृपनन्दिनि नीक निहारत
 पीयको ४ चढ़ि लङ्काचल शिखर उच्च मन्दोदरी । निरखत सङ्गर
 शोभ निशाचर सुन्दरी ॥ एकचरणधितभये अगाध समुद्र है ।
 परहां । शोभा समिति समग्र निहारत रुद्र है ५ बरविमान आरूढ़
 विवुध बहुवृन्दहै । अवलोकत संग्राम सकलसानन्द है ॥ कालरुद्र
 सम रामकियो अतिकोप है । परहां । जनु भैरव संहार सुअञ्जुत
 ओपहै ६ ॥ श्रीरामउवाच । पदपदच्छन्द ॥ रे निशिचरपति नीच, करत
 अब तेरो चूरन । बाणासन शिर त्रिदश, दर्पहर गहिये तूरन ॥ बेग
 बुभावत मोर, प्रिया विरहागि बिलोकत । मन्दोदरि युगनयन, नीर
 करि तव अवलोकत ॥ जो करनहोय करिलेहु सो, मनकी मन रह-
 जायगी । लङ्केश रिंदगी जिंदगी, एकहि सङ्ग नशायगी ७ ॥
 कविस्वाच । चन्द्रायणछन्द ॥ इमि कहिकै श्रीराम लिये कर वान है ।
 सो लखि मन्दोदरी लगी धरान है ॥ मन्

रूप तबै ताटकहती । परहां । अबै तरुणतम लखत कितक मेरो
पती ॥ कविबवाच । पद्यदण्ड ॥ आकर्षण किय धनुष, जबै रणमधि
श्रीरघुवर । तबै वामभुज बद्ध, अहो सुनिये दक्षिण कर ॥ दानदेन
अरु लेन, मिलै मनभावन भोजन । अग्रहोन उहिँ ठौर, अबै कृत पृष्ठ
नियोजन ॥ तब दाहन कह मोको न भय, वृक्षत निजस्वामी श्रवन ।
दशवदन बदनरुच सहकदन, किमि इक इक करुणाभवन ६ ॥
कविबवाच ॥ दृष्टमन्त्र दिव्यास्त्र कुशिक, सुत शुचि सेवनकर । योद्धा
भृगुपति वीर, भुजगपति भोग द्विभुजवर ॥ विभु दिनकर कुलकेतु,
कुतक उत्तान दृगञ्जल । बहुमत सिद्धत कर्म, कौतुकी रोम अ-
चंचल ॥ जो कर्मवश्य कर करिकरत, रावण रणमधि अवलचित ।
सो कर्म दोष दोर्दण्ड हुत, दाशार्थी दरशात तित १० राघव
करी प्रतिज्ञ, समरसुद्धनि ऐसी उत । रे रावण तब सहित, होयगो
अर्क अस्तद्रुत ॥ अस्तअवल अवलम्बि, भयो आदित्य समय
जिहि । मन्दोदरी चकोर, बधू समहूइ औसर तिहि ॥ जानकी
चितचकई सहश, समय भङ्गनयजानि जिय । अरुनिशाचीच
निशिचरनको, प्रबल होत बल हेरि हिय ॥ ११ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविनापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीचरबिलासेसीतामन्दोदरी
वचनवर्णननामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

कविबवाच । पद्यदण्ड ॥ कहत राम लक्ष्मेश, तोर शिर बहुत बि-
लोकत । मिलत महासुद मोथ, एकबध इक अवलोकत ॥ बिनि-
पातित इकमाथ, कोप उपशान्ति कहौ किमि । निरखत नहिँ निज
निधन, भिन्न उच्छिन्न होत जिमि ॥ निज बिन बिन मस्तक नि-
रखि, विलखत दुर्नय निखिल फल । जग एकमत्य के शत्रुते, दश
मथनको शत्रुभल १

खन्द इकशिर लखि उच्छिन्न अप

इमि बढत है माछिंभी माछिंधि गिरा मुख गदत है ॥ एकमत्य
 अरिहनै यहै नहिं लेख है । परहां । दुर्नयफल दशमत्य परत सब
 पेखहै २ ॥ कविरुवाच । पदपदकन्द ॥ अति दुततर श्रीराम, बाण संघात
 घातहुव । रावण ताड़न व्यग्र, ग्रीव नहिं गिरनदेत भुव ॥ छिन्न
 धनुष निस्त्रिश, आदि प्रहरण करि कोपित । निज मूरध दशवदन,
 रामशर बात दलित तित ॥ कर इकइक शिर गहि गगन मधि,
 उछारत भट भुजबीस भट । जनु अतिशय नरसंघटन में, बटा उ-
 छारत सुघर नट ३ बाण शाण उचीर्ण, समर प्राङ्गण मधि रघुबर ।
 सम कलपान्त कृतान्त, लिये नव एक संगकर ॥ नवमूरध उ-
 च्छिन्न, किये पुनरपि नवीन लखि । है सुहूर्त्त चित चकित, वि-
 पुल बिस्मय विवहियरखि ॥ विधि दियो वाहि वरदान यह, जब
 लौं छिन्न न मध्यशिर । उच्छिन्न कियेहु अन्यमथ, पुनि पुनि प्र-
 कटहिंगे अवि ४ कुम्भज मुनि संदत्त, विदित ब्रह्मास्त्र प्रचलतर ।
 अभिमन्त्रितकरि बाण, प्रहास्यो हृदि दशकन्धर ॥ शोणित शोण
 शरीर, विशिख बर पञ्चबाण गहि । अतिशय सत्वर तीक्ष्ण, धार
 शर भो प्रविष्ट महि ॥ रण रावण बिद्रवण विबुध, सकल लोक
 रावण रहा । भौ पतन तास पुहुमी प्रवल, भयो मोद मङ्गल महा ५
 सब सुन्दर सुन्दरी, सहित मन्दोदरि परिवृत । गलदर्विल जल-
 धार, नयननीरज पुगनिस्मृत ॥ सियपति निजपति विरह, प्रतापा-
 नलहि बुझावत । त्रिकुञ्जचलते चपल, समरभूमी मधि आवत ॥
 अतिकरत घोर फुतकारयुत, हाहाकार पुकार मुख । संप्राप्त महा
 निद्रापती, गिरीचरण चित अभित दुख ६ ॥ मन्दोदरिउवाच ॥ सुर-
 सिन्धुर बर बधू, कुम्भ प्रस्फोटन निरुत । बिलिखन विजय प्रशस्त,
 ७ ॥ ॥ जगन्नी निभिन ललित ने.

लङ्कापति नाकान्तपुर सरस, सुन्दरी कलकपोल तति ॥
 विरचित तित काश्मीरका, पत्रांकुर शोभा अमित । तिहि ना-
 भुज भीषण प्रबल, भो किहिं विधि संगर शमित ७ हा लङ्के-
 प्राण, नाथ जिय जीवन मेरे । मन्दोदरि पतिव्रता, वदन बहु
 वत तेरे ॥ आलिङ्गन भुज भूरि, करत एकान्त कान्त जब ।
 तहुते करिकौल, वहै सब विसरिगये अब ॥ वर लम्बोदर कल
 भयल, मणि एकावली । करिदेहुँ तोहिं आवत अबै,
 रदार । इककर करि कैलास, इत्यो दूसर त्रिसुवन
 अष्टा गेष्ट, नाहिं आयो अवसर कित ॥ भूरिभव्य
 वीर पावल । रिपु यह दिसुज मनुष्य, तिया
 सबल देखिये देवगति, वह विनिहत
 त सामग्रि सब, उलटि जात जब

श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः ।
 श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः ।
 श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः ।

मि नामु अग्रज कुंभे कैसो,
 आप दशमत्य समत्य
 वृतायो है ॥ लङ्क जैसो
 हैव दुर्बल दिखायो
 रो जग, कोशल-
 चि जाने विश्व
 आयो है । ताके
 सु सो कपिर

अवतर

इमि बदत है म छिंधी माछिंधि गिरा मुख गदत है ॥ एकमथ
 अरिहनें यहै नहिं लेख है । परहां । दुर्नयफल दशमथ परत सब
 पेखहै २ ॥ कविउवाच । षट्पदछन्द ॥ अति हुनतर श्रीराम, बाण संघात
 वातहुव । रावण ताड़न व्यग्र, शीव नहिं गिरनदेत भुव ॥ छिन्न
 धनुष निस्त्रिंश, आदि प्रहरण करि कोपित । निज मूरध दशबदन,
 रामशर बात दलित तित ॥ कर इकइक शिर गहि गगन मधि,
 उद्धरत भट भुजबीस भट । जनु अतिशय नरसंघटन में, बटा उ-
 द्धारत सुधर नट ३ बाण शाण उत्तीर्ण, समर प्राङ्गण मधि रघुवर ।
 सम कलपान्त कृतान्त, लिये नव एक संगकर ॥ नवमूरध उ-
 च्छिन्न, किये पुनरपि नवीन लखि । है सुहूर्त चित चकित, वि-
 पुल विस्मय विवहियरखि ॥ विधि दियो वाहि बरदान यह, जब
 लौं छिन्न न मध्यशिर । उच्छिन्न कियेहू अन्यमथ, पुनि पुनि प्र-
 कटहिंगे अवि ४ कुम्भज मुनि संदत्त, विदित ब्रह्मास्त्र प्रचलतर ।
 अभिमन्त्रितकरि बाण, प्रहास्यो हृदि दशकन्धर ॥ शोणित शोण
 शरीर, विशिख बर पञ्चबाण गहि । अतिशय सत्वर तीक्ष्ण, धार
 शर भो प्रविष्ट गहि ॥ रण रावण बिद्रावण विबुध, सकल लोक
 रावण रहा । भौ पतन तास पुहुमी प्रवल, भयो मोद मङ्गल महा ५
 सब सुन्दर सुन्दरी, सहित मन्दोदरि परिबृत । गलदर्विल जल-
 धार, नयननीरज पुगनिस्सृत ॥ सियपति निजपति विरह, प्रतापा-
 नलहि बुझावत । त्रिकुशचलते चपल, समरभूमी मधि आवत ॥
 अतिकरत घोर फुनकारयुत, हाहाकार पुकार मुख । संप्राप्त महा
 निद्रापती, गिरीचरण चित अमित दुख ६ ॥ मन्दोदरिउवाच ॥ सुर
 सिन्धुः बर बधू, कुम्भ प्रस्फोटन निस्तत । विलिखन विजय प्रशस्त,
 नि ७ ॥ गौकिर क्य ॥ नर्मानली विभिन्न ललित ले.

खक लङ्कापति । नाकान्तपुर सरस, सुन्दरी कलकपोल तति ॥
 वर विरचित तित काशमीरका, पत्रांकुर शोभा अमित । तिहि ना-
 शक भुज भीषन प्रबल, भो किहिं विधि संगर शमित ७ हा लङ्के-
 श्वर प्राण, नाथ जिय जीवन मेरे । मन्दोदरि पतिवता, बदन बहु
 चुम्बत तेरे ॥ आलिङ्गन भुज भूरि, करत एकान्त कान्त जब ।
 कहतहुते करिकौल, वहे सब विसरिगये अब ॥ वर लम्बोदर कल
 कुम्भथल, मौक्तिक मणि एकावली । करिदेहुं तोहि आवत अबै,
 करजदार निद्राभली ८ इककर करि कैलास, धर्यो दूसर त्रिभुवन
 जित । अष्टादश अवशिष्ट, नाहि आयो अवसर कित ॥ भूमिव्य
 क्रव्याद, वीर रणधीर महाबल । रिपु यह द्विभुज मनुष्य, तिया
 विरहित बानरदल ॥ अतिप्रबल देखिये देवगति, वह बिनिहत
 निज नगरन । बहु वृथा होत सामग्री सब, उलटि जात जब
 नियतिजन ॥ ६ ॥

इति श्रीपिप्लोदगसनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितकवि
 दीकारामाङ्गलगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासेमन्दोदरी
 विलापोनामैकोनपञ्चाशत्समोऽह्लासः ॥ ४६ ॥

कविस्वाच । मनोहरकन्द ॥ वृष्णि कुल जाति जासु अग्रज कुबेर कैसो,
 कुम्भकर्ण भ्रात पुत्र इन्द्रजीत पायो है । आप दशमत्थ समरत्थ
 हत्थ बिंशति है, काम चार दैत्य रथ विजयी बतायो है ॥ लङ्क जैसो
 गढ़ दृढ़ परिखा पयोधि पूर, गोविन्दजू दैव दैव दुर्बल दिखायो
 है । खोसि खोसि स्वायो खूब खीभि खीभि सारो जग, कोशल-
 किशोर ताहि क्षणमें खपायो है १ एक काल बीच जाने विश्व
 को विजय कियो, जाही भुजबीस ईश अद्रि को उठायो है । ताके
 अग्निदाह संस्कार समै आयो अब, राम बिन आयसु सो कपिन
 ऋकायो है गावत गोविंद अति आचरज आवतहै, अद्भुत अवसर

खक लङ्कापति । नाकान्तपुर सरस, सुन्दरी कलकपोल तति ॥
 वर विरचित तित काशमीरका, पत्रांकुर शोभा अभित । तिहि ना-
 शक भुज भीषन प्रबल, भो किहिं विधि संगर शमित ७ हा लङ्के-
 श्वर प्राण, नाथ जिय जीवन भो । मन्दोदरि पतिव्रता, बदन बहु
 चुम्बत तेरे ॥ आलिङ्गन भुज भूति, करत एकान्त कान्त जब ।
 कहतहुते करिकौल, वहे सब विसरिगये अब ॥ वर लम्बोदर कल
 कुम्भयल, मौक्लिक मणि एकावली । करिदेहुँ तोहिं आवत अबै,
 करजदार निद्राभली = इककर करि कैलास, बखो दूसर त्रिभुवन
 जित । अष्टादश अवशिष्ट, नाहिं आयो अवसर कित ॥ भूमिव्य
 कव्याद, वीर रणधीर महाबल । रिपु यह द्विभुज मनुष्य, तिया
 विरहित वानरदल ॥ अतिप्रबल देखिये देवगति, वह विनिहत
 निज नगरसन । बहु बृथा होत सामग्रि सब, उलटि जात जब
 नियतिजन ॥ ६ ॥

इति श्रीषिष्योत्पत्तनाधियालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविलापितकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमन्दोदरी
 विलापोनामैकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

कविस्वाच । मनोहरछन्द ॥ वृषिणकुल जाति जासु अग्रज कुबेर कैसो,
 कुम्भकर्ण भ्रात पुत्र इन्द्रजीत पायो है । आप दशमत्य समरत्य
 हत्य विंशति है, काम चार दैत्य रथ विजयी बतायो है ॥ लङ्क जैसो
 गढ़ हढ़ परिखा पयोधि पूर, गोविन्दजू दैव दैव दुर्बल दिखायो
 है । खोसि खोसि खायो खूब खीमि खीमि सारो जग, कोशल-
 किशोर ताहि क्षणमें स्वपायो है १ एक काल बीच जाने विश्व
 को विजय कियो, जाही भुजबीस ईश अद्रि को उठायो है । ताको
 अग्निदाह संस्कार समै आयो अब, राम विन आयसु सो कपिन
 रुकायो है गावत गोविंद अति आचरज आवतहै, अद्रुत अग्रश

बच सुनि सुनि सीय । चहचितही मधि चुनि चुनि पुनि पुनि
पीय १० ॥ अथ मैथिलीमानसविचारः । मनोहरछन्द ॥ तनुभृत तीनताप
छेदन छपाकरसो, क्रोधानल अम्भोपर उपमा अनूप है । सार औ
असारके विवेककौरु शोकहृको, आजतभवन हर्ष बीजाश्रय कूप
है ॥ कालव्याल विषको गोविन्दहै गरुड़मणि, धैर्य वृक्षवनभूमि
मोषप्रद रूप है । सुहृत समूहते समागम वस्त राम, विना पुण्य
मिले नाहि औधपुर भूप है ११ ॥ दोहाछन्द । कविरुवाच ॥ इमि
उर अन्दर आनिकै, मैथिलिमत्थमलिन्द । रघुनन्दनपद छन्द
को, गहन चहत मकरन्द ॥ १२ ॥

इति श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालराजतजीश्रीदूलहसिहजीविज्ञापितकवि
दीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरत्रिलासेमैथिलीमानस
विचारवर्णननामपञ्चाशत्तमोऽक्षः ॥ ५० ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ अलग होय श्रीराम बचन उचरन्तहै ।
सुनहु महजन सकल सुसन्त महन्तहै ॥ श्रीरामउवाच ॥ यद्यपि प्रिया
पतिव्रता विदित विन दोष है । परहां । दिव्य शपथ विन तदपि न
मन संतोषहै १ पर मन्दिर मधि सिया रही विरकाल है । दिव्य श-
पथ विन परस करत किमि हाल है ॥ यह निश्चय बच सुनत वि-
रञ्चादिक सबै । अरिहां । अम्बर ते अवतरत त्रिदशततिते तवैर ॥
दोहाछन्द ॥ प्रिया विरह अर्दित यदपि, तउन लहत रतिराम । रम्यन
की रमनीयता, सत्य स्वच्छधिय धाम ३ ॥ कविरुवाच । पदपदछन्द ॥
जलदि जाय जानकी, ज्वलित अति जातवेदजित । पावक पा-
वक परम, विनन्ती बर वितरत वित ॥ मन बच तनु करि मोरु स्व-
पन जाग्रत मधि अद्विरत । भयो होय पतिभाव, राम विन अन्य
पुरुषप्रत ॥ तो दह दह दह मम देह हुत, दहन हुसह छुति दाप
है सब सुलखित फल भागीन के, कर्म साखि इक आप है ४

दोहाछन्द ॥ दुहिता दिव्य बिदेह की, इमिबनि बचन विशेष । कीन्ही
 पूरण प्रज्वलित, पावक पुञ्ज प्रवेश ५ ॥ मनोहरछन्द ॥ कालानल
 जीहज्वाल सहितहै लीलासर, शोभित सरोजसीय बदन विशुद्ध
 है । हर्ष औ अमर्षने बानरके वृन्दवहु, फूफूत्कार शब्द सर्व अ
 म्बर निरुद्ध है ॥ परमप्रबुद्ध महाराज राज रामचन्द्र, बुद्धिके निधान
 जियजानी अचिरुद्ध है । चारहु बदनते उचारतहै चारमुख, पतिव्रत
 सीय शुद्धशुद्ध शुद्धशुद्ध है ६ ॥ श्रीरामउवाच । दोषकछन्द ॥ शुद्ध
 सिया मन कायक वायक । देवनते बरणै रघुनायक ॥ आननकौ
 उपमान अतुलित । पङ्कज पावक पुञ्ज प्रफुल्लित ७ ॥ कविरवाच ।
 षट्पदछन्द ॥ दिव्य शपथकरि सिया, प्रबल पावकते निकसी । बहुल
 बरानन बिभा, विदित बरिजवत बिकसी ॥ बनिता विपुल विनोद
 प्रीति प्रकटित प्रसेदकन । आवृतास्य श्रीराम, निकट निवसी समोद
 मन ॥ भलभक्ति भाव आजित हृदय, करत न पद पङ्कज परस ।
 करकङ्कण मणि पुनिरमणि, सममत प्रकटहु सुन्दरिसरस ८ ॥
 मल्लिकाछन्द ॥ गौतमांगना प्रकार । चारु चित्तमें चिहार ॥ जानकी
 रही निहार । बार बार बार बार ६ हीय होत है सहर्स । पै न कीन
 पादपर्स ॥ भाव भाम हेरि राम । चित्तभो अनन्द धाम ॥ १० ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतर्जाश्रीदूलहसिहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ

कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविलासेमैथिली

दिव्यशपथचर्त्तननामैकपञ्चाशत्तमोऽंशः ॥ ५१ ॥

कविरवाच । मल्लिकाछन्द ॥ आइकै इतेकबीच । नाथ रामके नगीच ॥

हाथ जोरि होय दीन । बीनती सुकण्ठ कीन १ ॥ सुग्रीवउवाच ।

हरिगीतिकाछन्द ॥ लङ्केश कामिनि नेकनामिनि देह दाभिनिसी

दिपै । जननी पुरन्दरजीत कीनिधिनीतिकी क्षितिनाब्धिपै ॥ वृन्दा-

रकावले वन्दिता मयनन्दिनी वन्दनकरै सेवित सुरासुर सुन्दरी

मन्दोदरी विततीरें २ ॥ बरवैछन्द ॥ मन्दोदरी निहोरत युगकरजोर
 विनयकरत गतकरिये अवधकिशोर ३ ॥ कविस्वाच ॥ सुनिसुग्रीव
 सखाके वचन रसाल । बोले दिनकर कुलमणि दीनदयाल ४ नम्रा-
 ननहै रघुवर वचन वदन्त । महभागिनि मन्दोदरि कहा कहन्त ५
 धन्य जनक रघुवर तव जननी धन्य । धन्यवंश नहिं निरखत नारी
 अन्य ६ साधु साधु सीतावर विनवत तोय । अब आगे विभु मेरी
 कसगतिहोय ७ देखि दशा अतिदुर्बल भरजलनैन । कृपासिन्धु
 करुणाकरि बोलत वैन ८ ॥ श्रीरामउवाच ॥ पतिसँग सती न होनी
 निजकुल धर्म्य । भव्यविभीषण भर्ता हरहर स्मर्य ९ अचलराज लङ्का-
 चल करु चिरकाल । प्रबल विभीषण भर्ता तव प्रतिपाल १० ॥
 कविस्वाच । पद्मरीछन्द ॥ तदनन्तर रघुवर वित्तवीन । असुरेश वि-
 भीषण भक्लिनीन ॥ किल कृपासिन्धु विभु बन्धुदीन । लङ्काधिपत्य
 अभिपेक कीन ११ तदनन्तर वर पुष्पकबिमान । जानकी युक्त
 चढ़ि किय पयान ॥ संग्रामभूमि लागे दिखान । पेखहु मम प्यारी
 पञ्चप्रान १२ इहि ठाँह भयो फणि पाशबन्ध । पुनि अत्र नचे कै-
 यक कबन्ध ॥ विविशक्ति वक्षलक्ष्मण विदार । इत आयो हनुगिरि
 द्रोणधार १३ शर दिव्य लषण डरकरि सर्भीत । प्रापत लोकान्तर
 इन्द्रजीत ॥ कीन्हो इत कण्ठाग्रविनिहन्त । केनापि रात्रिचरपति
 असन्त १४ उपकृति हनुमत वरणत अशेष । जिहिकरि रावण
 भो भय विशेष ॥ प्रहरत यह सुनि प्रज्वलत पाप । कृश कपि इत
 लज्जितभयो आप १५ लीलालङ्कित वह वाहिनीश । यह सुनत
 घुमावन लग्यो शीश ॥ सुनि रामदूत तनु छयो ताप । कलुपत
 ईर्षायुत भयो आप १६ भोप्रिये तोरहित हनुमन्त । प्रापतकिय
 दशमुख दुख अनन्त ॥ असुरेश अवस्था कौन कौन । क्षण क्षण मधि

पत जौन जौन १७ ॥ कविस्वाच ॥ सह विस्मय सिय बूझत सु-
 गथ । इतनाये किमि तुम प्राणनाथ ॥ तब राम सहर्षित हीय होय ।
 इतान्त सुनावनलगे सोय १८ ॥ श्रीरामस्वाच ॥ उपकार सकल सु-
 ग्रीव केर । हरपत हौं निज हिय हेरहेर ॥ कान्ते निवास कान्तार
 हूर । प्रियजन वियोग उर आधिभूर १९ धनुमात्र प्राणरिपु मनुज
 मर । तसवास सिन्धु दाहिने कस ॥ घन अघटित अघटित हुती
 बात । इत अरिप्रतिकृति की कहा बात २० रावण हरिगो वनराम
 तीय । इतली रहिजाती कथा सीय ॥ सुग्रीव भ्रष्टा मम नाहिं होय ।
 मिलतौं किमि बदला लैन मोय ॥ २१ ॥

कवि श्रीरामलोदयपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविद्यापितरत्नपुरस्थकवि
 श्रीद्वाराभ्राजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविद्यासेसीतारामचन्द्र
 शंकाशोनामद्विपञ्चाशत्प्रोह्लासः ॥ ४२ ॥

कविस्वाच । पदरत्नचन्द्र ॥ इहि अन्तर भधि इन्दु, उदय लखि राम
 कहतवन । देविदोष दिनमणी, वियोगी मनुजयहै सच ॥ दीक्षा-
 मणि गूङ्गा, भद्वन अहिमस्तक मणिवर । चूड़ामणि चरडीश,
 कामदिग कमिषणीर ॥ तिमितार मौकिकहार भधि, नायक-
 यणि विशसन्त है । तरुणीचकोर चिन्तामणी, उपमा याहि अ-
 नन्तः १ ॥ कविस्वाच । पदरीचन्द्र ॥ इकटक निरखत निशिनाथ
 शीत । प्रार्थन विरह भिभु व्यथा भीत ॥ करयुग मूढ़ें हुइदृग स-
 लील । कीन्ही लीला कुतुकादिमील २ ॥ प्रभु ॥ मैथिली के नयन
 श्रीरामचन्द्र ने क्यों मूढ़े ॥ याक्के उत्तर ॥ पहले तितदरदक विपिन
 बीच । मांग्यो हो मैथिलि भृग मरीच ॥ मांगहि भृगाइभृग लखि
 अमान । ताको करिहौं का समाधान ३ ॥ कविस्वाच ॥ इहि अवसर
 स्वजन निशाजान । सुखपूर्वक सोये यथाधान ॥ परभात विभी-
 षण्य उलै आय । अभिवन्दन कीन्ही शीश नाथ ४ ॥ विभीषणस्वाच ।

पदपदबन्ध ॥ उपकारक अम्बुधी, सदा सेवित अरामगृह । वाविक्रम
 रघुवंश, कथा तिहिबीच बली यह ॥ देवछिन्न दशमस्य, मत्स्यदश
 अत्रलि अत्र है । शतमुख दशशत नयन, सुदित अतिहोत यत्र
 है ॥ इमि इकइक शिर शत शत नयन, प्रभु प्रसुदित कीन्हे परम ।
 लङ्कानिवास किमि सुखइ है, जहां अमित आसुरधामप्र ॥ कविशकाव
 पदरीबन्ध ॥ तदनन्तर विभु ततकालयोग । चामरखनइहिक राज-
 भोग ॥ संभाव्यविभीषण प्रेमठान । पुरअवध सिधावन किय जयान ६
 सुग्रीव बढत भो सुनहु देव । रणभूमि द्विपत यह वारि वेद ॥ बहु
 वाजिवात खरखुर प्रहार । इत भये धूरि विभु बारबार ७ जिहि राज
 करि जायो आसमान । कलकलठ कबूतर जासमान ॥ करिकुम्भ
 निकर भो मदसाव । घनवृष्टि सदृश अति दुसहद्राव ८ बहु ठौर
 ठौर नहँ मन्त्री कीच । सन्तत इहि संगर अवनि बीच ॥ मन्दानिल
 परिमल मिलितजास । अद्यापि सद्यइव रण प्रकाल ९ इमि सुनत
 विमल सुग्रीव बैन । चितमधि रघुनन्दन बढ्यो चैन ॥ शुभ सेतु-
 बन्ध किय कज्ज उत्त । वैदेहि बढतभो अज्ज उत्त १० प्रिय प्राण-
 नाय रघुवंशकेतु । तुम कित करवायो वहे सेतु ॥ चित चकित होय
 इत उत चिहार । इतकिय उतकिय इति कह निहार ११ कित
 किय कित किय कहि बारबार । बूझत वैदेही बहुप्रकार ॥ पट तानि
 लियो सुसकाय मन्द । तत्र सेतु बतायो रामचन्द्र १२ आनन
 वैदेही पूर्ण चन्द । ललि सिन्धु भयो आनन्द बन्द ॥ शुभ सेतु
 दाविआयो उफान । इहि हेतु भई नहिं तासमान १३ सुंवरुपट लुरु
 शशि छिप्यो अत्र । अम्बुधि आयो निज थान यत्र ॥ इहि हेतु
 सिन्धु मधि बहे सेतु । नहिं लख्यो लख्यो रघुवंशकेतु १४ तेदीसत
 हैं सिय सेतु शैल श्रौषध प्रक श जित नहिं तैल ॥ विन्यस्त प्रथम

निशि निशि समूह वानरन लगहि कपि विमल व्यूह १५ गिरि
 सिन्धु सलिल मधि किय समान । सुखदरी कियो कीलालपान ॥
 द्रुत द्विगुणित निर्भर भरतजात । पयकरि पयोधि पूरत पिखात १६
 मैनाक बन्धुते भो मिलाप । चुत्र प्रौढप्रीति चप अश्रुआप ॥
 कपि शिविर नीर थित निरखि मोय । अगली सब बातें स्मरण
 होय १७ ॥ शिखरणीछन्द ॥ जवै दूरापाती विबुध युवती नैन सुगहा
 सरिद्धर्ताहारावलि बलय शोभा किय महा ॥ तबैये माणिक्य
 स्फटिक कङ्काशमनिसनो । अशून्यात्मासेतू बिलसत महा-
 नाटक मनो ॥ १८ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीबुलहसिइजीविज्ञापितकवि

टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेनिम्नन्दिनी

रामचन्द्रसंवादोनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽङ्कः ॥ ५३ ॥

कविरुवाच । पद्दरीछन्द ॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु । पहुँचे

निजपुर रविबंशकेतु ॥ सब मर्कट भट शुचि सिय समेत । मग मग
 मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय ।
 अभिवन्दि अंग्रि लीन्हे बँधाय ॥ मुनिराज पट्ट अभिषेक कीन ।
 सिय संयुत श्रीवर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला
 एक । सब लोकपाल अवली अनेक ॥ उन उत्तमंगिवर अलङ्कार ।
 मणिगण बगोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तटसों सिय सयान ।
 सिंजित मञ्जुल गिर करत गान ॥ विक्रम आडम्बर हेर हेर । ल-
 जत नहिं गज्जत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक छजत प्रताप । अरु
 भुवन चतुर्दश विदित आप ॥ यश जूह जासु जानत जनेश । अस
 राम अमल अभिधान वेश ५ ॥ कविरुवाच । तोमरछन्द ॥ करिकोप
 अङ्गद आय कपि ओघते अलगाय उचखो बकारि बक रि

निशि निशि सम्ह । वानरन लगहि कपि विमल व्यूह १५ गिरि
 सिन्धु सलिल मधि किय समान । सुखदरी कियो कीलालपान ॥
 हुत दिगुणित निर्भर भरतजात । पयकरि पयोधि पूरत पिखात १६
 मैनाक बन्धुते भो मिलाप । चुन प्रौढप्रीति चप अश्रुआप ॥
 कपि शिविर नीर थित निरखि मोय । अगली सब बातें स्मरण
 होय १७ ॥ शिखरणीछन्द ॥ जबै दूरापाती विबुध युवती नैन सुगहा
 सरिद्धर्ताहारबलि बलय शोभा किय महा ॥ तबैये माणिक्य
 स्फटिक कङ्काशमनिसनो । अशून्यात्मासेतू बिलसत महा-
 नाटक मनो ॥ १८ ॥

इति श्रीविपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदुलहसिंहजीविद्यापितकवि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेनिमिनन्दिनी
 रामचन्द्रसंवादीनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

कविस्वाच । पद्दरीछन्द ॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु । पहुँचै
 निजपुर रविवंशकेतु ॥ सब मर्कट भट शुचि सिय समेत । मग मग
 मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय ।
 अभिबन्दि अंग्रि लीन्हे बँधाय ॥ मुनिराज पट्ट अभिपेक कीन ।
 सिय संयुत श्रीवर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला
 एक । सब लोकपाल अवली अनेक ॥ उन उत्तमंगिवर अलङ्कार ।
 मणिगण बगोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तटसों सिय सयान ।
 सिंजित मञ्जुल गिर करत गान ॥ विक्रम आडम्बर हेर हेर । ज-
 जत नहिं गज्जत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक छज्जत प्रताप । अरु
 सुवन चतुर्दश विदित आप ॥ यश जूह जासु जानत जनेश । अस
 राम अमल अभिधान वेश ५ ॥ कविस्वाच । तोमरछन्द ॥ करिकोप
 अङ्गद आय कपि ओघते अलगाय उचख्यो बका रे बकारि

माथ मुहिं आप आयसु दीन तस सबै कारज कीन ७ नित
 हीयमें लिय हेर । नहिं छांड़ियेपितु बेर ॥ सुनि लेहु श्रीरघुवीर । अब
 हूजिये रणधीर ॥ पद्मदण्ड ॥ सह सुकरुण सौमित्रि, श्वसनसुत
 आदि सुभट्युत । आवहु यह रणरङ्ग, रसा दरशावत बल उत ॥
 निरपराध मम जनक, हन्यो तुम ताकोफल अब । प्राप होहुगे आप
 यहां अबिलम्ब सपदि सब ॥ करि याद बापको वैर बड़, इकक्षण धिय
 धीर न धरौं । दोर्दण्ड दूसरो लाउँ ना, इक कर करि मन्थन करौं ६
 समर प्रतिज्ञा परम, महत सुनि अङ्गद आनन । क्षोभित अति कपि
 चमू, राम लक्ष्मण सहसानन ॥ अनपराध बध समझि, अखिल अनु-
 कम्पाआई । हैगइ गदगद गिरा, प्रचुर पुलकावलि आई ॥ सौमित्रि
 तबै करजोरि युग, तारासुन संन्मुख गये । अपराध क्षमहु इमि उचरि
 बच, उर अनुकम्पांकित भये १० भई गिरा आकास, दास हैहै वाली
 वह । राम होहिं मधुरावतार, निज सब परिकर सह ॥ सो हनिहैं उत
 इन्हैं, आप निज बदला लैहैं । अनुचितकृत जो कर्म, प्रभू ताको
 फल पैहैं ॥ असवाणी सुनि अम्बर उदित, उर अङ्गद प्रमुदित भयो ।
 पुनि सकरुण लखि रामादि सब, अविनयतजि सविनयरयो ११ ॥
 पद्मरीन्द्र ॥ होयगो पितृबध प्रतीकार । सानन्द भयो ताराकुमार ॥
 युग हाथ जोरि तजि कोप तत्र । आयो इतमें रघुराज यत्र १२ अति
 है सविनय नुति करत राम । सुनिलेउ दयानिधि धर्मधाम ॥ जिन
 जिनके तव गुण परत कान । तिन तिनके मस्तक डुलागान १३
 चतुरानन चित मधि यह बिचार । इक शिरप्रति युग श्रुतिकिये सार ॥
 अहिराजबगानन सहस कीन । चाहियेदिसहस तित इकनकीन १४
 गुणग्राम राम सुनिहै जु शेष । हुलैहै तब उहि आनन अशेष

यह अभिप्राय विधि उरसि अस्ति । संसार रहौ सब सदा स्वस्ति
इहि हेत विधाता बुद्धिमान । सहसानन किय नहिं एक कान ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपक्षनाधिपाखरावतजीश्रीदुर्गासिंहजीविद्यापितरलपुरस्य
कविश्रीकारामाङ्गजगोविन्दरामत्रिरचितेश्रीवरविलासेतारातनय
स्तवनवर्णनोनामचतुःपञ्चाशत्तजोह्लासः ॥ २४ ॥

कविहवाच । पद्धरीलन्द ॥ तदनन्तर नुति किय हनुमान । सुनि

लेहु राम करुणाविधान ॥ बरविनय बहत विभुयुत विनोद । रा
दूक होतहै पीलतोद १ आनहु उहि कच्छप अधोपात्र । अरु मय
दण्ड अहिराज गात्र ॥ ऊपर भाजन भलभूत धात्रि । मञ्जर मों
हादिक महारात्रि २ शुभ सिन्धु सकल तित तैलपूर । बरमेरु बर्त
काहे जरूर ॥ बरदांशुरोत्रि उहिं अर्चिआन । कज्जल अम्बर रया
मतामान ३ अरिओघ अभित उपमा पतङ्ग । इत आय करत निव
अङ्गभङ्ग ॥ रावर प्रताप प्रभु पडु प्रदीप । विख्यात निरन्तर सकल
द्वीप ४ ॥ अथ कीर्तिवर्णनम् ॥ कैलासनिलय शिव सखा स्वच्छ ।
उपवेशनथल हिमिगिरि प्रतच्छ ॥ स्वर्गदि जिहिं गृह वापिका रूप
चन्द्रोपल दर्पण अति अनूप ५ क्षीराब्धी नवपूरतक निहार । शुनि
शेष देह दीपति विहार ॥ करि तितंटाककिल कोशलेश । विस्तार
जासु बहु देश देश ६ दशवदन दमन सिय रमण राम । कीरति
हंसी तव धाम धाम ॥ भ्रम भूरि सकल पाई न धाप । सब लोक होय
विधि लोक प्राप ७ तित ब्रह्महंस को भयो सङ्ग । गर्भिणि ह्वै आ
व्योम गङ्ग ॥ विश अंकुर वर कुन्दावदात । जायो सुत हिमकर नम
दिखात ८ श्रीराम राम शृणु महावीर । हम किमि गुण बर्णन कौ
धीर ॥ कलकित्ति कामिनी भव्य भार । कस्तूरि तिलक सम नम
विसार ९ निवसति नित प्रति तव निलय लच्छ । पुनि बचन वीच
सरसुती स्वच्छ किहि कारण कीरति कपित कन्त नित प्रमत

रहत दशहूँ दिगन्त १० दोर्दण्ड शुरिड डिम डमतकार । जिहियुक्त
 प्रतापानिलज्वार ॥ जर्जर कीरति पारद अटीजु । कुटि बुन्द वृन्द
 अवली अटीजु ११ भोगेन्द्रकितक तारक कितक । कति श्रीसिन्धु
 प्रालेय केक ॥ कति पाञ्चजन्य कति कम्क कुन्द । कर्पूर कितक
 शशि कितक वृन्द १२ अत्युक्ति अकनि जिन कुपेत होहु । मत
 मानहु मिथ्या वचन सोहु ॥ तव तरुण्य प्रतापानलज्वाल । लोखित
 सबसागर जल विशाल १३ पुनि पूरित अरि तिय नयन धार ।
 अति खार सलिल भो इहि प्रकार ॥ कोशलकिशोर को यश अ-
 पार । बहुबिबुधवृन्द पावै न पार १४ सविता स्वद्योतद्युतिमात-
 नोति । जीर्णोर्भनाभि गृहशशी ज्योति ॥ मच्छरसम तारागण
 अपार । इमि वरणत नम तव यश बिहार १५ अम्बरअनेक अमराय-
 मान । इहिविधि अनन्तयश जूहजान ॥ सुद्वित सुखवाणी रही मोर ।
 रघुवर वर महिमा महत तोर १६ सानन्द होय दिगवधू वृन्द । गिरि
 मेरु उलूखल किय स्वच्छन्द ॥ सुरगङ्गा मञ्जुल सुमललीन । तव
 कीरति शाली निचयचीन १७ कीडित कीन्हो बहु बार बार । तिहि
 राशि यहै है गिरि तुषार ॥ ताकेगण तारागण अनन्त । प्रद्योत सु-
 धांशु प्रांशूभनन्त ॥ कविस्वाच । दोहाछन्द ॥ इहि प्रकार निज हिय
 हुलसि, तवन कियो हनुमन्त । अङ्गद अमित अनन्दद्युत, रघुवर
 भुज वर्णन्त ॥ १८ ॥

शक्ति श्रीकविगोविन्दराप्रविरचिते श्रीवरविद्यासे श्रीमद्वज्रु मत्कृत श्रीरामचन्द्र
 स्ववनवर्षनो नामपञ्चपञ्चाशत्तमोऽङ्कात् ॥ ५५ ॥

अङ्गद उवाच । षट्पदछन्द ॥ रावण यश शशि रवि, प्रताप धनु
 शिवमद अहिपति । चारहु थित एकत्र, प्रलयकारक अरिष्टअति ।
 तासु शान्ति शुविहेतु, खड्ग तव तीरथ सुन्दर । सकल भये ते नष्ट
 जबै धाम्योकर रघुवर । मद धनुष तृतीय अरत प ये, मङ्गमये श्री

निशि निशि समूह । वानरन लगहि कपि विमल व्यूह १५ गिरि
 सिन्धु सलिल मधि किय समान । सुखदरी कियो कीलालपान ॥
 हुत द्विगुणित निर्भर भरतजात । पयकरि पयोधि पूरत पित्वात १६
 मैनाक बन्धुते भो मिलाप । चुव प्रौढ़प्रीति चप अश्रुआप ॥
 कपि शिविर नीर थित निरखि मोय । अगली सब बातें स्मरण
 होय १७ ॥ शिखरणीकुन्द ॥ जबै दूरापाती विबुध युवती नैन सुगहा
 सरिद्धर्ताहारावलि बलय शोभा किय महा ॥ तवैये माणिक्य
 स्फुटिक कङ्कारमनिसनो । अशून्यात्मासेतू बिलसत महा-
 नाटक मनो ॥ १८ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधियालरात्रतजीश्रीबुलहसिंहजीविज्ञापितकधि
 टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरत्रिलालेनिमिनन्दिनी
 रामचन्द्रखंवादोनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽङ्काः ॥ ५३ ॥

कविरुवाच । पद्दरीकुन्द ॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु । पहुँचे
 निजपुर रविवंशकेतु ॥ सब मर्कट भट शुत्रि सिय समेत । मग मग
 मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय ।
 अभिवन्दि अंग्रि लीन्हे वैधाय ॥ सुनिराज पट्ट अभिपेक कीन ।
 सिय संयुत श्रीवर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला
 एक । सब लोकपाल अवली अनेक ॥ उन उत्तमंगिवर अलङ्कार ।
 मणिंगण वशोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तटसों सिय सयान ।
 सिंजित मञ्जुल गिर करत गान ॥ विक्रम आडम्बर हेर हेर । ज-
 जत नहिं गजत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक वज्जत प्रताप । अरु
 भुवन चतुर्दश विदित आप ॥ यश जूह जासु जानत जनेश । अस
 राम अमल अभिधान वेश ५ ॥ कविरुवाच । तोमरकुन्द ॥ करिकोप
 अङ्गद आय । कपि ओधते अलगाय ॥ उचस्यो वकारे वकारि

माथ ॥ मुहिं आप आयसु दीन । तस सबै कारज कीन ७ नित
 हीयमें लिय हेर । नहिं छांड़ियेपितु बेर ॥ सुनि लेहु श्रीरघुवीर । अब
 हूजिये रणधीर ॥ ७८ पदकन्द ॥ सह सुकण्ठ सौमित्रि, रवसनसुत
 आदि सुभद्रयुत । आवहु यह रणरङ्ग, रसा दरशावत बल उत !
 निरपराध मम जनक, हन्यो तुम ताको फल अब । प्राप होहुगे आप
 यहां अबिलम्ब सपदि सब ॥ करि याद बापको बैर बड़, इकक्षण धिय
 धीर न धरौं । दोर्दण्ड दूसरो लाउँ ना, इक कर करि मन्थन करौं ६
 समर प्रतिज्ञा परम, महत सुनि अङ्गद आनन । क्षोभित अति कपि
 चमू, राम लक्ष्मण सहसानन ॥ अनपराध बध समकि, अखिल अनु-
 कम्पाआई । हूँ गइ गदगद गिरा, प्रचुर पुलकावलि आई ॥ सौमित्रि
 तवै करजोरि युग, तारासुत संन्मुख गये । अपराध क्षमहु इमि उचरि
 बच, उर अनुकम्पांकित भये १० भई गिरा आकास, दास हैइ वाली
 वह । राम होहिं मथुरावतार, निज सब परिकर सह ॥ सो हनिहैं उत
 इन्हें, आप निज बदला लैहैं । अनुचितकृत जो कर्म, प्रभू ताको
 फल पैहैं ॥ असबाणी सुनि अम्बर उदित, उर अङ्गद प्रसुदित भयो ।
 पुनि सकरुण लखि रामादि सब, अबिनय तजि सविनयरयो ११ ॥
 पद्मरीकन्द ॥ होयगो पितृबध प्रतीकार । सानन्द भयो ताराकुमार ॥
 युग हाथ जोरि तजि कोप तत्र । आयो इतमें रघुराज यत्र १२ अति
 है सविनय नुति करत राम । सुनिलेउ दयानिधि धर्मधाम ॥ जिन
 जिनके तत्र गुण परत कान । तिन तिनके मस्तक डुलागान १३
 चतुरानन चित मधि यह विचार । इक शिरप्रतियुग श्रुतिकिये सारा ॥
 अहिराजवरानन सहस चीन । चाहियेदिसहस तित इकन कीन १४
 गुणग्राम राम सुनिहै जु शेष । डुलिहै तब उहि आनन अशेष ॥
 मस्तक जिहि सब ब्रह्माण्ड भर । शिर कम्प भये है भंगसर १५

यह अभिप्राय विधि उरसि अस्ति । संसार रहौ सब सदा स्वस्ति ॥
इहिहेत विधाता बुद्धिमान । सहसानन किय नहिं एक कान ॥ १ ॥

इति श्रीपिपलोदपक्षनाधिपालरावतजीश्रीदूलहासिहजीविज्ञापितरत्नपुरस्य
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेतारातनय
स्तवनवर्णनोनाम्बतुःपञ्चाशत्तमोऽङ्काः ॥ ५४ ॥

कविस्वाच । पद्धरीकुन्द ॥ तदनन्तर नुति किय हनूमान । सुनि
लेहु राम करुणानिधान ॥ वा बिनय बहत विभुयुत विनोद । त्र
दूक होतहै पीलसोद १ आनहु उहि कच्छप अधोपात्र । अरु मध
दण्ड अहिराज गात्र ॥ ऊपर भाजन भलभूत धात्रि । मच्छर मो
हादिक महारात्रि २ शुभ सिन्धु सकल तित तैलपूर । वरमेरु बर्ति
काहे जरूर ॥ चण्डांगुरोचि उहिं अर्चिआन । कज्जल अम्बर रया
मतामान ३ अरिओष अमित उपभा पतङ्ग । इत आय करत निज
अङ्गभङ्ग ॥ रावर प्रताप प्रभु पट्टु प्रदीप । बिख्यात निरन्तर सकल
द्वीप ४ ॥ अथ कीर्तिवर्णनम् ॥ कैलासनिलय शिव सखा स्वच्छ ।
उपवेशन थल हिमिगिरि प्रतच्छ ॥ स्वर्नदि जिहिं गृह वापिका रूपा
चन्द्रोपल दर्पण अति अनूप ५ क्षीराब्धी नवपूरत्तक निहार । शुचि
शेष देह दीपति चिहार ॥ करि तितंटाककिल कोशलेश । विस्तार
जासु बहु देश देश ६ दशबदन दमन सिय रमण राम । कीरति
हंसी तव धाम धाम ॥ भ्रम भूरि सकल पाई न धापा सब लोक होय
विधि लोक प्राप ७ तित ब्रह्महंस को भयो सङ्ग । गर्भिणि है आई
व्योम गङ्ग ॥ विश अंकुर वर कुन्दावदात । जायो सुत हिमकर नभ
दिखात ८ श्रीराम राम शृणु महावीर । हम किमि गुण बर्णन को
धीर ॥ कलकित्ति कामिनी भव्य भार । कस्तूरि तिलक सम नभ
बिसार ९ निवसति नित प्रति तव निलय लच्छ । पुनि बचन बीच
सरसुती स्वच्छ किहि कारण कीरति कपित कन्त नित भ्रम

रहत दशहूँ दिगन्त १० दोर्दण्ड शुचिड डिम डमतकार । जिहियुक्
 प्रतापानिलज्वार ॥ जर्जर कीरति पारद अटीजु । फुरि बुन्द बृन्द
 अवली अटीजु ११ भोगेन्द्रकितक तारक कितक । कति कीगसिन्धु
 प्रालेय केक ॥ कति पाञ्चजन्य कति काक कुन्द । कपूर कितक
 शशि कितक बुन्द १२ अत्युक्ति अकनि जिन कुपित होहु । मत
 मानहु मिथ्या वचन सोहु ॥ तव तरुण प्रतापानलज्वाल । लोखित
 सबसागर जल विशाल १३ पुनि पूरित अरि तिय नयन धार ।
 अति खार सलिल भो इहि प्रकार ॥ कोशलकिशोर को यश अ-
 पार । बहुबिबुधबृन्द पावें न पार १४ सविता स्वद्योतद्युतिमात-
 नोति । जीर्णोर्ननाभि गृहशशी ज्योति ॥ मन्डारसम तारागण
 अगार । इमि बरणत नभ तव यश विहार १५ अम्बरअनेक भ्रमराय-
 मान । इहिविधि अनन्तयश जूहजान ॥ सुदित सुखबाणी रही सोर ।
 रघुवर वर महिमा महत तोर १६ सानन्द होय दिगबधू बृन्द । गिरि
 मेरु उलूखल किय स्वच्छन्द ॥ सुरगङ्गा मञ्जुल सुमललीन । तव
 कीरति शाली निचयचीन १७ कीडित कीन्हो बहु बार बार । तिहि
 शशि यहै है गिरि तुषार ॥ ताकेगण तारागण अनन्त । प्रद्योत सु-
 धांशु प्रांशूमनन्त ॥ कबिरुवाच । बोहाछन्द ॥ इहि प्रकार निज हिय
 हुलसि, तवन कियो हनुमन्त । अङ्गद अमित अनन्दयुत, रघुवर
 भुज वर्णन्त ॥ १८ ॥

इति श्रीकविगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे श्रीमद्भक्तु मत्कृत श्रीरामचन्द्र
 स्ववचनवर्णनोत्तमपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

अङ्गद उवाच । पद्मपदछन्द ॥ रावण यश शशि रवि, प्रताप धनु
 शिवमद अहिपति । चारहु थित एकत्र, प्रलयकारक अरिष्टअति ।
 तासु शान्ति शुविहेतु, खड्ग तव तीरथ सुन्दर । सकल भये ते नष्ट
 जबै धास्योकर रघुवर मद धनुष तृतीय रताप ये, मङ्गभये अर्ध

अङ्गसह अवगिष्ट सुयश सो प्रथमही, सीय हरत भो नष्ट वह १
 किञ्चित कोपकला, बिलाम बहु विभव विभूषित मञ्जुल मूर्ति
 राम, भवद्भुज भ्राज अदूषित ॥ रावण इन्द्रजिदादि, हतन करि
 कियो असुरबल । कन्दत फेरु शिवा, कफेरु कंक रटत विजयत वि-
 टपभल ॥ फुट प्रकट गुग्गुलू धूपधुत्र, कीडत कपिकणि निरवसत ।
 आक्रोशत कोणप कुलवधू, भ्रमत द्वीपि रणभू दसत २ जामधि
 मिहिर मयूख, शिशिरसम सैन रेणु करि । वृत्रधरि वाहिनी, बिलो-
 कन कीन धीर धरि ॥ वासव जय जिन कियो, रावणादिक न
 भयोरुज । तेपि भये भयभीत, रात्रे निरखत युग भुज ॥ जिन
 आश्रय पाय प्लवंग वर, सरितनाथ उत्तीर्ण तित । दोर्दण्डप्रचण्ड
 खण्डनठयो, अरि उदण्ड परचण्ड जित ३ ॥ कविस्वाच । पद्धरीछन्द ॥
 तदनन्तर रघुवर मुदितहोय । आभरण यथोचित जोय जोय ॥ सुग्रीव
 सुग्रीवाभरण दीन । अङ्गद भुज अङ्गद चारु चीन ॥ हनुमन्त हीय
 दिय हीरहार । इमि यथायुक्त जिय धार धार ॥ सत्कार कियो
 सब कपिन केर । करि याद सकल हिय हेर हेर ४ बहु बिलसत
 वर बानर अनीक । किष्किन्धा जावन दर्ई सीक ॥ सिय लषण
 युक्त विभु यथायोग । उपभोग करत सम्राज भोग ५ ॥ कविस्वाच ।
 मनाहरछन्द ॥ दाशरथी राम रविवंशमें उदय भये, बनिता विदेह-
 सुता जासु योग जानी है । ब्रह्मकरि बनते लेगयो लङ्क लङ्का-
 धीश, करिकै कपीन्द्र सख्य पूर्ण प्रीति ठानी है ॥ पर्वत के पुञ्जकरि
 कीन्हो सिन्धु सेतुबन्ध, असुर सँहारि औधपुरी वाहि आनी है ।
 निज महारानी निकलङ्क पहिंचानी प्रभू, तदपि कलङ्ककी कहानी
 ना सुहानी है ६ ॥ कविस्वाच । बरवेछन्द ॥ बाल्मीकि मुनि आश्रम
 तपण निहार सीय रसी श्रीरघुवर आयसु धार ७ तजि सिय

लक्ष्मण बिलपत बारम्बार । नैन निवहत निरन्तर अंसुान धार ८
जो रण मधि न जिवावत मारुति मोय । लखते नहिं दारुण दुःख
लोय न दोय ९ कियो बैखड हनुमत मोहिं जिवाय । हेरत हिय
हहरत है हर हरहाय १० मृगपति गज चकित चित मृगपशु
जाति । प्रसव समय निज प्रमदा छिन न जहाति ११ अस नि-
र्दय हिय रघुकुल भयो न होय । अरघुगाम अस उर निज आवत
मोय १२ रघुवर विरह भयेहू जीवत सीय । नाहिं जनक जायेहू
जानतजीय १३ जो न जियत उत रघुवर सीय वियोग । तबै
विशाता निर्दय निन्दायोग ॥ १४ ॥

इति श्रीकविटीकाराब्राह्मणगोविन्दरामविरचितेश्रीविरविलासेब्रह्मण
परितापवर्णेनोनामषट्पञ्चाशत्सोद्धारः ॥ ५६ ॥

कविस्वाच । रोलाछन्द ॥ भङ्ग कियो भवधनुष, सुमर किय जाम-
दग्नि जय । गुरुगिर तजि बसुमती, सेतु कीन्हो पयोधि पय ॥ दश-
कन्धर क्षयकार, रामको कोकहियो गुन । बर्णन करियो दैव, कियो
उहिं कथा शेषचुन १ ॥ पदपदछन्द ॥ श्रीरघुवर भुज प्रबल, बृहत
ताण्डवसुन्दर । काण्डसौण्ड ब्रह्माण्ड, भाण्ड मण्डित प्रचण्डपर ॥
रण शिरनाटक महा, पाटवाम्बुधि पावनअति । आज्ञनेय प्रविर-
चित, सुनत नर है निर्मल मति ॥ वह सकल पापनिर्मुक्त है, पटुल
पुण्य पद प्रापहै । प्राप्नोति अखिल अरिभट विजय, श्रीरघुवर जिमि
आपहै २ ॥ दोहाछन्द ॥ यह नाटक हनुमतरचित, निर्मल ब्रह्म नि-
हार । अङ्क चतुर्दश कलित करि, भुवन चतुर्दश धार ३ ॥ पदपदछन्द ॥
पवनपुत्र यह चरित, नखर करि लिखित शिलन पर । बाल्मीकि
लखि कह्यो, रत्नसम रखहु सिन्धुवर ॥ आज्ञनेय तसकीन, यथा
मुनि द्रुत आयसु दिय । तदवतार नृप भोज, कियो उद्धृत हर्षित
हिय । अरु द्विज दामेदर मिश्र शुभ, ग्रथित कियो क्रमकरि

कलित । श्रीहनुमान नाटक महा, करहु निरवरसा ललित ४ ॥
 अत्र श्रीहनुमानाटकेचतुर्दशोऽङ्कः १४ ॥ अर्धपञ्चरीङ्गन्द ॥ सोहत सुहिन्द ।
 दूल्ह महिन्द ॥ राज पिपलोद । मानस प्रमोद ५ धीवर धोश ।
 रावत नरेश ॥ आयसु उचार । आशय निहार ६ जाहर जहान ।
 नाटक महान ॥ हेरि हनुमान । हीय करिमान ७ पन्थ चितचीन ।
 ग्रन्थ जु नवीन ॥ होइ इकत्यार । सो शिरसिधार ८ टीकम क-
 विन्द । अङ्गज गोविन्द ॥ नागर सुविप्र । धीय धरिशिप्र ९ ये रचित
 ग्रन्थ । प्रेमिन सुपन्थ ॥ हे हियहुलास । श्रीवर विलास १० संशय
 विलोपि । जो पढ़ै कोपि ॥ चेतसि चहन्त । वाञ्छित लहन्त ११
 श्रीरमण राम । धूलसत धाम ॥ पावत सुप्रेम । ह्वै सकल क्षेम १२
 श्रीवर विलास । अभिधान जास ॥ कीन्हे प्रकाश । सतपन
 उलास १३ सतपन विशेष । मेटत अशेष ॥ सतपन रखन्त ।
 सतपन पिखन्त १४ ॥ लोरठाङ्गन्द ॥ अति उदार गम्भीर, ललित
 लसत लखलूटमन । धर्मधुरन्धर धीर, दिन दूल्ह दूल्ह नृपति १५
 दूल्ह नृप अभिराम, प्रतिपाल पालक पुण्यपथ । निशिदिन
 राताराम, गुणज्ञाता दातार तरि १६ ॥ मनोहरङ्गन्द ॥ पुर पिपलोद
 प्रजापुञ्ज प्रतिपाल प्रभु, दूल्हनरेन्द परताप हिन्द आयो है । थोरे
 बयबीच जाने जोरहे सुयशजूह, सुगुण समूह स्वच्छ सुख सर-
 सायो है ॥ रावरो दाशपाय अमित अनन्द भयो, बुद्धि अनुसार
 यों गोविन्द गुण गायो है । ऐसो और तेरे जोड़तोड़ को भरोड़-
 वारो, ठौर ठौर ठाकुर करोड़ में न पायो है १७ आयो है प्रताप पर-
 चण्ड खण्ड खण्डन में, सुयश समूह दूना स्वच्छ अविआयो है ।
 ऐसे गुण ज्ञान धिय ध्यान दिलजान जैसे, आरमान खानपान
 सुख सरस यो है गावत गो विन्द सुनो दूल्ह नरेन्द आप, याहि

हैत डोड़िया सुवंश मनभायो है । ऐसो और तेरी जोड़ ताँड़व
 मरोड़वारो, ठौर २ ठाकुर करोड़ में न पायो है १८ ॥ लखैयाछन्द
 तीरथ तोमतमाम किये जगदीश सुदर्शन काज सिधावत । ठौर
 ठौर सनान किये बहुदान दिये निगमागम गावत ॥ लाट मिला
 भयो भलठाट निराट विनोद विशेष बढ़ावत । रावत साहब डूल
 सिंह समान जहान न आन लखावत १९ हाकम हक उठा
 दियो हुत काज समस्त स्वहस्त करावत । लन्दनलों खलुख्या
 विख्यात रुसावधता अंगरेज सरावत ॥ गावत है गुण गोविंद य
 तित तस्करनाकित में सतरावत । रावत साहब डूलहसिंह समान
 जहान न आन लखावत २० आमदको अवलोकत नित्य नि
 हारि बिलोचन खर्व करावत । नीति विहाय रखे नहीं पार्थ सहा
 यक सङ्कट में सरसावत ॥ याचकको लखिकै रखिकै गुण हेरि हमेश
 हिये हरसावत । रावत साहब डूलहसिंह समान जहान न आन
 लखावत २१ मङ्गन सङ्ग उमङ्ग भो जिहि अङ्गन अङ्गन में नि
 आवत । दान सुतोय तरङ्गनते निशिवासर ओघ अरिष्ट बहावत
 गावत है गुण गोविंद यों जित याचक जे उर इच्छित पावत
 रावत साहब डूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २
 गाहकहै गुणके गणको हुत दाहक दारिद दर्श दिखावत । बा
 रिद सों बरसावत वित्त कवित्तनपै चुनि वित्त लगावत ॥ गावत
 है गुण गोविंद त्यों कवि परिडत पेखि महासुद पावत । राव
 साहब डूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २३ आवतह
 अति आदर अर्पि सुनावत मिष्ट गिरावत रावत । खानरूपान सं
 मनमानदगावत मोद महा मनपावत ॥ गावत है गुण गोविंद य
 जिहि के धितको कित पार न पावत रावत साहब डूलहसिं

समान जहान न आन लखावत २४ कोष कुवेर सुमेरु परै करत-
 न्छिन बेर करै न लुटावत । तबनते अति उच्च उदार मँभीरनते
 गहरो दशभावत ॥ गावत है गुण गोविंद यों जिहि के वितको
 कित पार न पावत । रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न
 आन लखावत २५ ॥ मनोहरछन्द ॥ मञ्जुल मन्दील मनोरञ्जन
 समर्थो शीशः पुरट पटासो दिव्य दुपटा दिवायो है । गावत गो-
 विन्द विप्र पावत महान मोद, रावत धरेश धीय पार नाहिं पायो
 है ॥ रोकुरूपै चारसै विचार से स्वेहें गोद, दूलह नरेन्द्र वित्त बारि बर-
 सायो है । हीय हरसायो सर्वसुख सरसायो प्रेमपुञ्ज परसायो उर अ-
 छक छकायो है १ दिल दरियाव दिव्य दूल दुलहसिंह, राजनीति
 रीतिमध्य सुमति सनीरहौ । साम दाम भेद दण्ड चारहु उपायनते,
 रथ्यत तमामहू गरीबरु गनीरहौ ॥ गावत गोविन्द गिरा कीरति
 सुधाकरसी, देश देश दिपत दिगन्तलौं घनी रहौ । वाह वाह वाह
 गिरिनाद बादशाह तेरी, जौलौं शशि सूर तौलौं साहिबी बनी
 रहौ २ ॥ सोरठाछन्द ॥ पुर पिपलोद अभीश, पन्द्रह बीघा प्रेमकरि ।
 क्षिति कौन्ही बखशीश, अति मञ्जुल मालोचरु १ श्रीवर श्रीहरि
 हेतः पुरयारथ पुहुमी प्रवर । दिन गहि आशिष देत, मनवांछित
 है सर्वदा २ शतगुनीस पैंतीस सह, आश्विन सित दल स्वच्छ ।
 सौरि वार दशमी दिवसः पूरणभयो प्रतच्छ ३ ॥ इति ग्रन्थ पारि-
 तोषिक वर्णनम् ॥

इति श्रीपिपलोदपक्षनाथिपालरायतजोश्रीदुलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
 कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेग्रन्थपरिपूर्ति
 वर्णननामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

श्लोकः । श्रीरस्तु मङ्गलं चास्तु प्रशस्तं शस्तमस्तु ते

